देसहरियाणा

अंक 38-39, जनवरी- अप्रैल 2022

₹ 75/-

सावित्रीबाई - जोतिबा फुले के भाषण व पत्र विशेषांक



देसहरियाणा
साहित्यिक-सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का मंच

अंक-38-39, जनवरी- अप्रैल 2022

देस हरियाणा : **ISSN - 2454-6879**

सहयोग राशि : **75 /-**

प्रकाशक : सत्यशोधक फाउंडेशन,

912, सैक्टर-13, कुरुक्षेत्र -136118

संपर्क : सुभाष चंद्र - 94164-82156,

विकास साल्याण - 90501-82156

ई-मेल : haryanades@gmail.com

वेबसाइट : www.desharyana.in

यह अंक हमारी वेबसाइट पर उपलब्ध है।

सहयोग राशि : (पंजीकृत डाक खर्च समेत)

आजीवन : पांच हजार,

वार्षिक : पांच सौ (संस्था),

: तीन सौ (व्यक्तिगत)

आनलाइन भुगतान के लिए बैंक खाते का विवरण:

Bank Name - Indian Bank, Sector-13, Kurukshetra

Account Name - Satya Shodhak Foundation,

Account No. - 50490177180

IFSC - IDIB000K849

जोतिबा फुले व सावित्रीबाई फुले
के भाषण और पत्र
विशेषांक

सत्यशोधक फाउंडेशन की संस्थापक
स्वर्गीया श्रीमती विपुला जी
की स्मृति में सादर

मूल मराठी से अनुवाद
सुभाष चंद्र
संपादक देस हरियाणा
प्रोफेसर हिंदी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

अनुक्रम

संपादकीय 6

जोतिबा के भाषण

अति प्राचीन काल 14

इतिहास 21

सभ्यता 28

गुलामगिरी 36

जोतिबा फुले के पत्र

अकाल के विषय में विनती 46

मराठी ग्रंथकार सभा को पत्र 47

मामा परमानंद को पत्र 49

शराबखानों की वृद्धि के खिलाफ पत्र 51

ज्ञानोबा कृष्णाजी को पांच पत्र 53

सावित्री बाई फुले के भाषण

उद्योग 58

विद्यादान 61

सदाचार 64

नशा 66

कर्ज 68

सावित्री बाई फुले के पत्र

पत्र I - 71 पत्र II - 73 पत्र III - 75

गतिविधियां

साहित्य बेहतर समाज का निर्माण करता है - अशोक भाटिया 77

संघर्ष और आगे बढ़ने का जज्बा देती है: कविता - जयपाल 78

नवजागरण की प्रणेता सावित्रीबाई फुले - एस.के.चहल 79

सामूहिक उत्साह से ही परिवर्तन संभव - सिद्धार्थ शंकर राय 80

प्राकृतिक स्रोतों को बचाया जाए - पंकज चतुर्वेदी 81

गुरु रविदास के साहित्य का मूल स्वर सामाजिक न्याय - सुभाष चंद्र 82

विश्व में सबसे बड़ी चुनौती लैंगिक असमानता - बिन्दु शर्मा 84

सावित्रीबाई फुले के जीवन संघर्ष व योगदान पर सेमिनार 85

शिक्षा से वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा मिलेगा - प्रो. सुभाष चन्द्र 86

भगत सिंह से दोस्ती के लिए पढ़ें किताबें: डॉ. सुभाष चन्द्र 87



"जिन्होंने हिन्दू समाज की छोटी जातियों को, उच्च वर्णों के प्रति उनकी गुलामी के संबंध में जागृत किया और जिन्होंने विदेशी शासन से मुक्ति पाने से भी सामाजिक लोकतन्त्र (कि स्थापना) अधिक महत्वपूर्ण है, इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया, उस आधुनिक भारत के महान शुद्र महात्मा फुले की स्मृति में सादर समर्पित "

- डॉ.भीमराव अंबेड़कर

गुलामगिरी को नष्ट करने के लिए एकजुट हों

हमें अपनी गुलामगिरी को नष्ट करने के लिए एक होना पड़ेगा। भट्ट के देव, धर्म व पुराण हमारे दिमाग में अंधविश्वास पैदा करते हैं और गुलामगिरी को पक्का करते हैं। ... इनकी गुलामगिरी से बचने के लिए एकजुट होकर कंधे से कंधा मिलाओ और अपने पुरखों की जय जयकार करो। - जोतिबा फुले

महात्मा जोतिबा फुले को आधुनिक भारत में सामाजिक क्रांति के जनक तथा सावित्रीबाई फुले को भारत की पहली शिक्षिका के रूप में जाना जाता है। भारत में शोषित-वंचित-दलित व नारी वर्गों की मुक्ति के प्रवर्तकों का जीवन व कार्य इन वर्गों में चेतना व आंदोलनों के प्रेरणा स्रोत है। समाज में उनके नाम पर सामाजिक संस्थाओं-संगठनों, चौपालों-पुस्तकालयों का निर्माण हो रहा है, उनकी जयंती व पुण्यतिथियों पर गांव-गांव में हो रही संगोष्ठियां व कार्यक्रम इनके प्रति श्रद्धा व आदर का परिचायक है। सरकारी स्तर पर भी अनेक सड़कों, सार्वजनिक भवनों, शिक्षण-संस्थाओं व योजनाओं के नाम रखे गए हैं। लेकिन हिंदी क्षेत्र में अभी तक उनके क्रांतिकारी व जीवंत साहित्य की पहुंच बहुत कम है।

फुले दम्पति (सावित्रीबाई फुले और जोतिबा फुले) का आगमन भारतीय इतिहास को मोड़ देने वाली घटना है। समाज में सत्य, न्याय, समानता, स्वतंत्रता और मानव भाईचारे की स्थापना के लिए इन्होंने अनेक क्रांतिकारी कदम उठाए और अपने क्रांतिकारी कार्यों के लिए रूढ़िवादी समाज की प्रताड़नाओं को सहन किया, लेकिन पूरी जिंदगी दृढ़ संकल्प के साथ कार्य करते रहे।

उन्नीसवीं शताब्दी में राजा राम मोहन राय, केश्वचंद्र सेन, देवेंद्रनाथ ठाकुर, स्वामी दयानंद सरस्वती जैसे अनेक समाज सुधारकों ने भारतीय समाज की अनेक कुरीतियों पर कुठाराघात किया। इन समाज सुधारकों का संबंध मध्यवर्ग और उच्चवर्ण से था, इसलिए इनका प्रभाव भी इन्हीं वर्गों तक सीमित रहा था। इनके आंदोलनों का कार्यक्षेत्र स्त्री शिक्षा,

बाल विवाह, विधवा पुनर्विवाह, अनमेल विवाह तक सीमित था। फुले-दम्पति का संबंध समाज के निम्न-वर्ग से था और इनका प्रभाव समाज के निचले वर्गों शूद्रों-अतिशूद्रों और किसानों तक फैला था। जाति-व्यवस्था का खात्मा, छुआछूत का खात्मा, धार्मिक-पाखण्डों व अंधविश्वासों का निराकरण, भेदभावपूर्ण जातिगत व लैंगिक मूल्यों की सामाजिक जीवन से समाप्ति, धार्मिक आवरण में गरीबों का शोषण, सामाजिक विषमता, अज्ञानता, ब्राह्मणवादी सांस्कृतिक वर्चस्व के स्थान पर समाज में लैंगिक समानता, सामाजिक समानता, धार्मिक सहिष्णुता, वैज्ञानिक व तार्किकता की स्थापना व शासन-प्रशासन में निम्न वर्गों की भागीदारी इनके आंदोलनों के उद्देश्य था।

समाज में ब्राह्मणवादी (वर्ण-व्यवस्था और पितृसत्ता) विचारधारा के वर्चस्व से शूद्रों-अतिशूद्रों को ज्ञान, सत्ता और संपति से वंचित हुए जिससे उनके विकास के रास्ते बंद हो गए थे। सावित्रीबाई-जोतिबा फुले ने मुम्बई, पुणे तथा आसपास की उत्पीड़ित वर्गों विशेषतौर पर मजदूर, किसानों एवं अछूतों को धार्मिक-सामाजिक-आर्थिक शोषण व गुलामी के विरुद्ध जागरुक करते हुए संगठित किया और भेदभावकारी विचारधारा के विरूद्ध बगावत करने के लिए आंदोलन चलाया।

महात्मा जोतिबा फुले ने अपने सहयोगियों के साथ मिलकर सन् 1873 में 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की। इसके माध्यम से अछूतों व स्त्रियों के लिए स्कूल, अछूतों के लिए पीने के पानी के कुंए खोलने, विवाह में ब्राह्मण पुजारियों की अनिवार्य उपस्थिति को नकारने, विधवाओं के सिर के बाल काटने के विरुद्ध नाइयों की हड़ताल, शोषित स्त्रियों के लिए प्रसुति-गृह खोलने जैसे क्रांतिकारी कदम उठाए। इन कार्यों से यह महाराष्ट्र का लड़ाकू आंदोलन बना।

सन् 1890 में फुले के मार्गदर्शन में एनएम लोखण्डे ने 'मिल हैण्ड्स एसोसियेशन' नामक मुम्बई के सूती कपड़ा मिल मजदूरों का पहला संगठन बनाया। फुले ने किसानों में आधुनिक कृषि को प्रोत्साहन व सहकारिता गठित करना सत्यशोधक समाज के कार्यक्रम में सबसे महत्वपूर्ण मुद्दों में शामिल था। फुले-दम्पति के देहान्त के बाद अहमदनगर, सतारा, कोल्हापुर जिलों और बरार क्षेत्र के अमरावती में भी सत्यशोधक समाज कायम रहा। सत्यशोधक समाज की 'तमाशा' टोलियों ने सामन्तवाद तथा साम्राज्यवाद-विरोधी चेतना जगायी। इनके जीवन संघर्षों और चिंतन का भारतीय समाज पर विशेषकर दलितों-वंचितों-शोषितों के आंदोलनों और जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा है। फुले-

दम्पति के संघर्ष मुक्तिदाता बाबा साहेब डा. भीमराव आंबेडकर की संघर्षों व चेतना की प्रेरणा बने।

ज्यों-ज्यों भारतीय समाज के शोषित वर्गों में सामाजिक-राजनीतिक जागरूकता बढ़ रही है अपने इतिहास और महापुरुषों के जीवन और उनके साहित्य के बारे में जानने की इच्छा भी प्रबल हो रही है। सावित्रीबाई फुले और जोतिबा फुले के जीवन-संघर्ष और सामाजिक बदलाव के कार्य अविभाज्य है। उद्देश्य, कार्य, सोच में एकता तथा एक-दूसरे के प्रति समर्पित होते हुए भी दोनों का व्यक्तित्व विशिष्ट है।

फुले दंपति ने नाटकों, पुस्तिकाओं, गीतों, पेंफलेंटों की रचना की। अपने साहित्य में तीखे कटाक्षपूर्ण व व्यंग्यात्मक लोकप्रिय भाषा-शैली के माध्यम से सूदखोर-व्यापारी और पुजारी वर्ग ('शेटजी-भट्टजी') की चालाकियों व तौर-तरीकों को उजागर किया जिनसे वे शूद्रों-अतिशूद्रों को ठगते थे।

महात्मा जोतिबा फुले व सावित्रीबाई फुले के भाषण व पत्र ऐतिहासिक दस्तावेज हैं, जिनमें स्पष्ट तौर पर वैचारिक संघर्ष दिखाई देता है। इनकी चर्चा कम ही हुई है। यहां हम महात्मा जोतिबा फुले व भारतमाता सावित्रीबाई फुले के भाषणों और पत्रों को प्रकाशित कर रहे हैं। फुले के ये भाषण जब प्रकाशित (सन् 1856 ई.) हुए थे उस समय शायद ही किसी भारतीय विद्वान, साहित्यकार या समाज सुधारक ने इतनी शोधों का हवाला देते हुए वैज्ञानिक दृष्टि से मानव विकास के बारे में लिखा हो। उनके भाषणों में भारतीय इतिहास लेखन की वर्गीय पक्षपाती दृष्टि और उसके मंतव्यों की बेबाकी से वर्णन है।

प्रसिद्ध मानवशास्त्री एंगेल्स की पुस्तक 'परिवार, निजी संपति और राज्य' नामक पुस्तक का मानव विकास के विभिन्न चरणों में विभिन्न संस्थाओं के निर्माण को जानने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। गौर करने की बात यह है कि यह सन् 1884 में प्रकाशित हुई थी। महात्मा जोतिबा फुले के भाषणों व अन्य लेखन में ये विचार काफी पहले दिखाई देने लगे थे।

जोतिबा फुले के भाषण व पत्र

महात्मा जोतिबा फुले के चार भाषण हैं - अति प्राचीन काल, इतिहास, सभ्यता, गुलामगिरी। ये भाषण पहली बार 25 दिसंबर 1856 में पूना (महाराष्ट्र) के शिळा प्रकाशन

से मराठी में प्रकाशित हुए थे। महात्मा जोतिबा फुले की पत्नी व भारत पहली शिक्षिका सावित्रीबाई फुले ने इनका संपादन किया था। श्रीमती मिचेल व रेव्ह. मिचेल ने इसके लिए प्रोत्साहन दिया था। जोतिबा फुले के भाषण सावित्रीबाई फुले ने जिस क्रम में संपादित किए गए थे वह बहुत दिलचस्प है - अति प्राचीन काल, इतिहास, सभ्यता, गुलामगिरी। ये क्रम मानव विकास की रूपरेखा प्रस्तुत करता है।

महात्मा जोतिबा फुले भाषण प्रकाशित हुए उस समय जोतिबा की उम्र महज 29 साल थी। इन भाषणों से पता चलता है कि जोतिबा फुले उस समय ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर हो रही शोध से भलिभांति परिचित थे। यूरोप व अमेरिका के वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, दार्शनिकों, विद्वानों के शोध व सिद्धांतों का उल्लेख करते हैं। डार्विन, लिव्ह, प्लूटार्क, टासिटस आदि इतिहासकार, केटो, मेरीयास, सीझर, सिसरो, मेगास्थनीज, सुकरात, प्लेटो, अरस्तू आदि के विचारों का बार-बार हवाला देते हैं।

इन भाषणों में मानव जाति की उत्पत्ति, जंगली अवस्था से सभ्य-मानव तक मनुष्य के विकास की ओर संकेत करते हैं। वैज्ञानिक दृष्टि से इतिहास, धर्म व मानव जीवन के अनेक पक्षों पर विचार करते हैं। इसीलिए मानव की उत्पति और विकास के संबंध में विभिन्न धर्मों की मान्यताओं को चुनौती देते हैं। वैज्ञानिक शोधों का हवाला देकर ब्राह्मण पुरोहितों व अन्य धर्म पुस्तकों में सृष्टि की उत्पति के बारे में फैलाये भ्रमों को दूर करते हैं। इस परिप्रेक्ष्य में भारतीय पुराणों में व्यक्त की गई अवैज्ञानिक व अतार्किक धारणाओं व मतों की बखिया उधेड़ते हैं। इतिहास व पौराणिक कथाओं में अंतर करने की दृष्टि विकसित करते हैं। अपने को सर्वोच्च पद पर स्थापित करने के लिए ब्राह्मण पुरोहितों द्वारा रचित पुराणों को खिचड़ी इतिहास की संज्ञा देते हुए इन्हें सत्य से कोसों दूर मनघडण्त मानते हैं।

यूनान की सभ्यता की रोमन द्वारा तबाही, भारत और अमेरिका की खोज, इंग्लैंड के सभ्य बनने और आर्यों के आक्रमण और शूद्रों-अतिशूद्रों के गुलाम बनाने पर रोशनी डालते हैं। वे इंडिया को बलिस्तान की संज्ञा देते हैं। गुलामगिरी के खात्मे और बलिस्तान यानी शूद्रों-अतिशूद्रों के लोकतांत्रिक शासन की पुनःस्थापना की आशा करते हैं।

इन भाषणों में वैज्ञानिक इतिहास लेखन की नींव डालते हैं। भेदभावमूलक शोषणकारी अमानवीय प्रथाओं, धारणाओं, मान्यताओं की दैवीय व धार्मिक वैधता को ध्वस्त करते हैं। इसके बरक्स स्वतंत्रता, समता भाईचारे पर आधारित मानवीय समाज की रचना करने का संकल्प लेते हैं। भारतीय इतिहास की जाति-वर्ण के आधार पर गुलामी की उलझन भरी

पहेली को सुलझाते हैं और बाहरी आक्रमणकारियों द्वारा इंडियन मूल के लोगों को किस तरह गुलाम बनाया इसकी स्पष्ट व्याख्या करते हैं।

महात्मा जोतिबा फुले ने जाति की उत्पत्ति व जातिगत उत्पीड़न को नस्ल-आधारित सिद्धान्त का प्रयोग कर ब्राह्मणों की व्याख्या द्रविड़ नस्ल पर कब्जा करने वाले आर्य आक्रान्ताओं के रूप में की। इन आक्रांताओं ने यहां के मूल-निवासियों में फूट डालकर तथा उन पर ताकत का प्रयोग करके अपना गुलाम बना लिया। उनके हंसते-खेलते बलिस्तान राज्य को उजाड़ दिया।

महात्मा जोतिबा फुले अपने भाषणों में बली के राज्य बलिस्तान का बार-बार जिक्र किया है। वे इंडिया को बलिस्तान कहते हैं। इंडियन मूल के लोगों यानी शूद्रातिशूद्रों से बली का संबंध स्थापित करते हैं। बलिस्तान पर गर्व करने और बलिस्तान की स्थापना करने पर भी जोर देते हैं। बलिस्तान की परिकल्पना और उसकी पुनः प्राप्ति का ख्याल कुछ लोगों को खाम ख्याली लग सकती है लेकिन असल में यह निम्न वर्गों की शासन प्राप्त करने की आकांक्षा है जो निरंतर बलवती हो रही है।

वे शूद्रों-अतिशूद्रों को गुलामी की जंजीरों को तोड़ने का आह्वान करते हुए कहते हैं कि "हमें अपनी गुलामगिरी को नष्ट करने के लिए एक होना पड़ेगा। भट्ट के देव, धर्म व पुराण हमारे दिमाग में अंधविश्वास पैदा करते हैं और गुलामगिरी को पक्का करते हैं। आर्यभट्ट विप्रों ने हमारे बारे में उलट लिखा है कि हम अपने कुकर्मों के कारण अस्पृश्य हैं, लेकिन पुराणों में जो लिखा है, यह सच नहीं है। असल में ईरानी आर्यद्विज ही कुकर्मी और अस्पृश्य हैं। इनकी गुलामगिरी से बचने के लिए एकजुट होकर कंधे से कंधा मिलाओ और अपने पुरखों की जय जयकार करो।"

महात्मा जोतिबा फुले के भाषणों से उनकी विश्व दृष्टि व विचारधारा की समझ स्पष्ट होती है वहीं पत्रों में तत्कालीन समाज में मौजूद बहस के अनेक पक्षों पर उनके विचारों की जानकारी होती है। अकाल पीड़ितों की मदद के लिए, मराठी ग्रंथकार सभा को, मामा परमानंद तथा ससाणे को लिखे पत्रों से उनके व्यक्तित्व के अनेक आयाम स्पष्ट होते हैं।

सावित्रीबाई फुले के भाषण व पत्र

भारतमाता सावित्रीबाई फुले एक संवेदनशील साहित्यकार व सामाजिक कार्यकर्त्ता थी। उनका आंदोलन दोधारी तलवार की तरह था जो एक तरफ जनता के शोषक विचारधारा को ललकारता था, उनके तर्कों, को चुनौती देता था, दूसरी तरफ अपने समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने का वातावरण बनाता था। उनके समस्त कार्यों की यही दिशा है। भारतमाता सावित्रीबाई फुले के पांच भाषण हैं - उद्योग, विद्यादान, सदाचार, नशा, कर्ज। ये भाषण ये एम.जी. माली द्वारा संपादित 'सावित्रीबाई फुले समग्र वांग्मय' पुस्तक में संकलित हैं।

सामाजिक परिवर्तन में सबसे बड़ी बाधा थी, लोगों की पुरातन पंथी, रूढ़िवादी सोच, अंधविश्वास, भाग्यवादिता व अज्ञानता। साधारण लोग आर्थिक तौर पर कर्ज से दबे थे, धार्मिक तौर पर भाग्यवादिता व अंधविश्वास का शिकार थे। उनमें ज्ञान प्राप्त करने की कोई चाह समाप्त हो गई थी। जीवन से निराश होकर नशे में डूबे थे। ऐसे समाज में मूलभूत परिवर्तन के लिए उन्होंने साहित्य का निर्माण किया, जिससे लोगों में जिज्ञासा पैदा हो। वे खुलासा करती हैं कि किस तरह धार्मिक शोषण व आर्थिक शोषण को ही अपना पेशा बनाने वाले लोग व वर्ग सामाजिक बुराइयों को बढ़ावा देते हैं। लोगों की वैचारिक शक्ति को समाप्त करके गुलाम बना लेते हैं।

अपने भाषणों में जीवन के दृष्टांतों का वर्णन करके, उदाहरण देकर, कहानियां डालकर, कहावतें व मुहावरों का प्रयोग करते हुए साधारण लोगों से संवाद करती हैं। उनकी जुबान में जहां इन शोषितों के प्रति संवेदना व सहानुभूति है तो वहीं उनको इस अवस्था में पहुंचाने वाली व्यवस्था व वर्ग के प्रति आक्रोश स्पष्ट तौर पर दिखाई देता है। जिस तरह मां अपने बच्चों को बुराइयों से बचने की सीख भी देती है और उनकी गलती पर डांटती-फटकारती भी है, वही सावित्रीबाई फुले की शैली है। उनका संवाद अपने बच्चों से संवाद है। सरल से दिखने वाले इन भाषणों में खुशहाल जीवन के गहन सूत्र विद्यमान हैं। उनके भाषणों की विषयवस्तु व मातृवत प्रस्तुतिकरण से उन्हें भारतमाता कहना उचित ही है।

सावित्रीबाई फुले ने महात्मा जोतिबा फुले को तीन पत्र लिखे। ये एम.जी. माली द्वारा संपादित 'सावित्रीबाई फुले समग्र वांग्मय' पुस्तक में संकलित हैं। इन पत्रों से सावित्रीबाई फुले की सामाजिक कार्यों में पहलकदमी, वैचारिक प्रतिबद्धता, फुले दंपति के संघर्षों व उनके

प्रभाव की जानकारी मिलती है। ये पत्र ऐतिहासिक दस्तावेज हैं, इनसे तत्कालीन समाज की भीषण सच्चाईयों, वर्गीय हितों की टकराहटों व वर्गीय चरित्र का विश्वसनीय ढंग से पता चलता है। साथ ही यह भी पता चलता है कि तत्कालीन स्वार्थी उच्च वर्ण-वर्ग के स्वार्थी तत्व किस तरह फुले दंपति व शोषित समाज के आंदोलन व कार्यों को बदनाम करते थे।

जोतिबा फुले व सावित्रीबाई फुले के साहित्य का हिंदी में पहले भी सराहनीय अनुवाद हुए हैं, इस प्रयास को नमन करते हुए यह भी स्पष्ट है कि अधिकतर अनुवाद मराठीभाषियों ने किए हैं, जिसमें हिंदी भाषा के मुहावरे का अभाव खटकता है। उन अनुवादों को पढ़ते हुए ही ये विचार मन में आया कि फिर से अनुवाद किया ताकि हिंदी पाठकों के लिए उनका साहित्य स्वाभाविक हो।

इस अनुवादक के लिए मराठी भाषा से अनुवाद करना आसान नहीं था। केवल इन महान शख्सियतों के समतामूलक व मानवीय गरिमा से परिपूर्ण समाज निर्माण के क्रांतिकारी विचारों के प्रति श्रद्धापूर्ण प्रतिबद्धता के कारण ही संभव हुआ है। अनुवाद के दौरान मैंने पाया है कि चाहे बांग्ला हो या मराठी दोनों ही हरियाणवी के बेहद करीब हैं जिसमें यह अनुवादक न केवल पला-बढ़ा है, बल्कि उसमें अपने को सबसे स्वाभाविक पाता है।

संजय गजभिये द्वारा सावित्रीबाई फुले के भाषणों तथा महात्मा जोतिबा फुले रचनावली के संपादक एल.जी. मेश्राम 'विमलकीर्ति' द्वारा जोतिबा फुले साहित्य के अनुवाद से मदद ली गई है। इनका धन्यवाद। इस अनुवाद के लिए सबसे अधिक धन्यवाद उस गुमनाम व्यक्ति का जिसे मैं सतनाम के नाम से जानता हूं उसकी मेहनत व लगन के बिना तो यह कतई संभव नहीं था।

इन भाषणों का ऐतिहासिक महत्व तो है ही आज भी ये प्रासंगिक हैं। इनमें तत्कालीन जनजीवन के अंतर्विरोधों व संघर्षों की झलक भी पाते हैं और उससे निकलने की बेचैनी भी दिखाई देती है।सत्यशोधक फाउंडेशन ने महात्मा जोतिबा फुले व सावित्रीबाई फुले के कार्यों व साहित्य को जन जन पहुंचाने का संकल्प लिया है। इससे पहले भी सत्यशोधक फाउंडेशन 'भारत की पहली शिक्षिका सावित्रीबाई फुले' का प्रकाशन कर चुका है जिसका खूब स्वागत हुआ है।

आशा है कि यह प्रयास महात्मा जोतिबा फुले व सावित्रीबाई फुले के दार्शनिक-बौद्धिक व्यक्तित्व के कुछ ऐसे आयाम उदघाटित करेगा, जिससे आधुनिक भारत में विवेकशील मानवीय वैज्ञानिक सोच के संबध में हिंदी पाठक व बुद्धिजीवी पुनर्विचार करेंगे।

उम्मीद है कि सत्यशोधक फाउंडेशन की संस्थापक स्वर्गीया श्रीमती विपुला जी की स्मृति में यह प्रयास आपको पसंद आयेगा।

आपकी प्रतिक्रियाओं का स्वागत है।

सुभाष चंद्र

संपादक

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,
हिंदी-विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

जोतिबा फुले के भाषण

अति प्राचीन काल

इस भाषण में मानव जाति की उत्पत्ति, पशु-पक्षी और मानव में भेद, जंगली अवस्था से सभ्य-मानव तक मनुष्य के विकास की ओर संकेत किया है। डार्विन का हवाला देकर वह ब्राह्मण पुरोहितों व अन्य धर्म पुस्तकों में सृष्टि की उत्पति के बारे में फैलाये भ्रमों को दूर करते हैं। फुले के अनुसार आज जिन्हें शूद्र-अतिशूद्र के नाम से जाना जाता है वे यहां के मूल निवासी हैं। जंगली व क्रूर ईरानी आर्य ब्राह्मणों के विपरीत ये अधिक सभ्य, सुविचारी व विकसित लोग थे और अपने देश यानी बलिस्तान में जगह-जगह अपने गांव बनाकर स्वतंत्रतापूर्वक रहते थे, लेकिन जंगली व क्रूर ईरानी आर्यों ने इनमें फूट छलपूर्वक गुलाम बना लिया। - संपा.

1. मानव जाति की उत्पत्ति

इस असीम और अतर्क्य संपूर्ण ब्रह्मांड में अनेक तरह के तत्वों के संयोग से अनगिनत सूर्यमंडल व उसके ग्रहों-उपग्रहों की उत्पति होना, स्थिर होना और समय के साथ नष्ट भी होते रहना स्वाभाविक बात है। इस तरह प्रकृति के नियमानुसार उत्पन्न व नष्ट होने का क्रम हमेशा चलता रहता है। कोई-कोई लोग इसे सृष्टि क्रम कहते हैं। इसी सृष्टि क्रम से ब्रह्मांड के कई सौर मंडलों के ग्रहों में थलचर, जलचर व नभचर आदि जीव-जंतु हो सकते हैं। अपने भूमण्डल पर सभी प्राणियों में मानव प्राणी श्रेष्ठ है। गुबैरले धूप-छांव व पानी में कब और कैसे पैदा होते हैं, इस पर एक शोध किया गया। इस शोध से पता चला कि गोबर में द्रव्यों की रासायनिक क्रिया होने से काल व परिस्थिति में भिन्न भिन्न स्थान व भिन्न भिन्न काल में एक ही गोबर के तीन भागों से एक ही तरह के जीव पैदा हुए। जिस प्रकार इनका जन्म हुआ उसी प्रकार समस्त जीव-जंतुओं का जन्म हुआ है। इस जीव सृष्टि क्रम में दलदल, टेरिडोफाइटा (pteridophyta), पेड़, मच्छी, मगर, बाघ, शेर, चील, चिड़िया, तोता, बंदर व मानव आदि प्रजातियां पैदा हुई, इनमें एक-दूसरे के निकट के संबंध दिखाई देते हैं और ये प्रकृति के नियमों के अनुसार बदलते रहते हैं। बंदर पशु जाति का कायापलट हो कर एक नई

प्रजाति यानी मानव प्रजाति का जन्म हुआ, यह घटना कोई जादू या चुटकी में घटित नहीं हुई थी इस प्रक्रिया में लाखों साल लगे। यह मत डार्विन के सिद्धांत नाम से प्रसिद्ध है। यदि इसे सत्य माना जाए तो विभिन्न धर्मों में मनुष्य की उत्पत्ति संबंधी मतों का खंडन होता है। वेदों के अनुसार ब्रह्मा के शरीर की अलग-अलग जननेंद्रियों से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र इन चार जीवों का जन्म हुआ है। पारसियों के धर्मग्रन्थ में अहूरमज्द नामक देवता ने मनुष्य को उत्पन्न किया। बौद्ध और जैन धर्म के अनुसार जंगलों में जिवाणुओं से जीव उत्पन्न हुए। ईसाई मत के अनुसार प्रभु ने आदम का निर्माण किया और अपनी पसली से उसके लिए एक हव्वा उत्पन्न की। आदम और हव्वा के जोड़ से सभी मनुष्यों का जन्म हुआ। इस प्रकार तरह-तरह के मतों की कमी-बेशी और धर्म के झगड़े में न पड़ कर यह मानकर चलते हैं कि किसी एक तरीके से ही मानव प्राणी की उत्पति हुई होगी।

2. पशु-पक्षी और मानव

जिस तरह की परिस्थितियों में प्राणी उत्पन्न होते हैं उन परिस्थितियों में जीवन निर्वाह के लिए प्राकृतिक व अन्य कला कौशलजनित वस्तुएं प्राप्त होती हैं। यह पशु-पक्षियों में भी होता है। वे बाल, ऊन व रेशम से चमत्कारिक ढंग से बुनाई करके अपने घर यानी घोंसले तैयार करते हैं, यह चमत्कार देखते हुए मन नहीं अघाता। जीवन निर्वाह के लिए जिन चीजों की जरूरत होती है उन सब चीजों का ज्ञान पशु-पक्षियों में पैदा हो जाता है। वह अपनी प्रजाति व अपने पूर्वजों की तरह खुशी प्राप्त करते हैं। मानव-प्राणी जब उत्पन्न हुआ तो उसका व्यवहार पशुओं की तरह था, लेकिन आज उसका वह व्यवहार नहीं रहा। हजारों साल पहले अबाबील नामक पक्षी जिस तरह अपना घोंसला बनाता था, आज के अबाबील पक्षी भी उसी तरह बनाते हैं। हजारों वर्ष पूर्व के घोंसले और आज के घोसले में रत्ती भर का अंतर नहीं है। पशु-पक्षी विचारशून्य होते हैं इसलिए वे अपना प्रगति नहीं कर पाते। मानव प्रजाति ऐसी नहीं है। मानव जब पैदा हुआ था तो किसी चिड़िया या कव्वे के बच्चे की तरह केवल एक मांस का लोथड़ा था, इस तरह के अनेक लोथड़े कितने ही पशु-पक्षियों का भोजन बने होंगे। उनमें से कितने बचे होंगे। वे कहीं दुबककर अपने प्राणों की रक्षा कर रहे होंगे। वे आगे चलकर पत्थर व लाठियों के साथ हिंसक जानवरों से लड़ते हुए अपना बचाव कर रहे होंगे। वे मोटे-मोटे पेड़ों के खोल में या पहाड़ की गुफाओं में सोते होंगे। जंगली फल

या जानवर मारकर उनका मांस खाकर, घुटनों के बल बैठकर, हाथ टेक कर कुत्ते की तरह चाट-चाट कर पानी पीते होंगे। पैदा होने के बाद पशु-पक्षियों को न तो अपने जन्मदाता का पता होता और न ही उनको उम्र व रिश्ते-नाते पता होते। प्रारंभिक पशुवृत्ति अवस्था में मानव ऐसा ही था माता-पुत्र, पिता-पुत्री के बीच यौन संबंध बनाता था। यूरोप के बड़े-बड़े इतिहासकारों ने कहा है कि प्रारंभिक मानव पशु-पक्षियों की तरह नंग-धड़ंग घूमते थे। यह उनके लिए कोई लाज-शर्म की बात नहीं थी। पशु-पक्षियों और मानव में खाने-पीने-सोने, जीवन रक्षा व संभोग करने जैसे स्वाभाविक लक्षण समान हैं इस विषय में श्लोक भी है

आहारनिद्राभयमैथुनंच।सामान्यमेतत्पशुभिर्नराणाम।।

ज्ञान नराणामधिको विशेषो।ज्ञानेनहीनाःपशुभिःसमानाः।।

इसका अर्थ है कि खाना-पीना-सोना, भय और मैथुन मनुष्य और पशुओं में एक समान हैं। ज्ञान के कारण ही मनुष्य विशिष्ट है, अन्यथा वह पशु समान ही है। पशु-पक्षियों में भी पैदाइशी बुद्धि होती है, जो अपने मनोभाव प्रकट करने का साधन है। कीड़े-मकोड़ों की भाषा है - त्वचा स्पर्श। केवल भाव भंगिमाएं ही उनकी सहज भाषा होती है जानवरों व पक्षियों की अलग-अलग भाषा होती है। बार्कर ने इस तरह की शोध की है। मनुष्य की प्रारंभिक भाषा पशु-पक्षियों की तरह थी, वह विशिष्ट ध्वनि व नियमित स्वर और शब्द के योग से मनोभाव प्रकट करते होंगे, परंतु मानव प्राणी की नए-नए शोध करने वाली बुद्धि और जानवरों की विचारशून्य बुद्धि और समस्त सृष्टि की रचना इन तीनों पर सूक्ष्मता से विचार किया जाए तो निर्मिक (ईश्वर) की योजना दिखती है कि अन्य समस्त प्राणी मानव के अधीन रहें और उसके सुख के साधन बनें तथा सृष्टि के तमाम पदार्थ भी उसके सुख के कारण बनें। सृष्टि में मौजूद समस्त पदार्थ द्रव रूप अथवा करण रूप में उत्पन्न हैं कार्यरूप में नहीं। उदाहरण के तौर पर मनुष्य के लिए उपयोगी पीसने वाली चक्की। मिट्टी के बर्तन बनाने के लिए पत्थर व मिट्टी करण द्रव्य हैं, लेकिन चक्की-बर्तन आदि स्वतः उत्पन्न नहीं हुए। सृष्टि के द्रव्यों और पदार्थों से आवश्यक वस्तुएं बनाते-बनाते मनुष्य ने पदार्थ के गुण-धर्म, स्थिति, गति, महत्व को समझने के लिए अभी तक हजारों बुद्धिमान एवं मेहनती लोगों ने अपनी जिंदगियां लगाई हैं। इन लोगों के अनुभवसिद्ध ज्ञान व प्रयोगसिद्ध सिंद्धांतों से भौतिकशास्त्र तैयार हुआ। पशु ये नहीं कर सकते, पशुओं और मानवों में यही अंतर है।

3. जंगली अवस्था से मानव

जंगली अवस्था में मनुष्य अस्त्र-शस्त्र और वस्त्र बनाने की जानकारी न होने के कारण अपनी दाढ़ी, सिर की जटाएं व हाथ-पांव के लम्बे-लम्बे नाखून बढाए यहां-वहां नंग-धड़ंग घूमते थे। मिट्टी व धातु के बर्तन बनाने की जानकारी न होने के कारण जानवरों की तरह घुटने टेककर पानी के किनारे से मुंह लगाकर या उंजली भर कर अपनी प्यास बुझाते थे। उन्हें तवा व चक्की बनाने की जानकारी न होने के कारण रोटी या चपाती नहीं मिलती थी। उन्हें मरे हुए जानवरों की खाल उतारने की जानकारी नहीं थी इसलिए जूतियों के बिना नंगे पांव फिरते थे। जंगली अवस्था में अपने जीवन निर्वाह और सुख के लिए अन्य निर्बल मानवों को मारकर अपनी भूख मिटाता था। उसमें दया व माया की जानकारी न होने के कारण स्त्री का पीछा करता था, उसे पकड़ता था, बलात्कार करता था और मैथुन सुख प्राप्त करता था। जिस तरह शेर बकरे का काल होता है उसी तरह एक बलिष्ठ मानव निर्बल मानव का काल होता था। सम्पूर्ण मानव जाति एक ही वंश की थी उसे गोत्र का मतलब भी नहीं पता था

कबीला शब्द भी अस्तित्व में नहीं आया था। जिसके पेट से जन्म लिया उसके साथ यौन-संबंध रखते थे और इससे जो संतान पैदा होती थी उसके साथ भी यौन संबंध बनाते थे। अति प्राचीन काल में मानव के बीच मां-बाप, भाई-बहन, पति-पत्नी जैसे रिश्ते नहीं होते थे। पशु-पक्षियों को अभी तक भी इन रिश्तों जानकारी नहीं है। लोगों की प्रगति के लिए आज दयालु व परोपकारी अंग्रेज विद्वान कोशिश कर रहे हैं और अंग्रेज सरकार उनको प्रोत्साहन दे रही है।

4. मनुष्य की प्रगति

मानव की बुद्धि पशुओं की तरह विचारशून्य व क्रमिक रूप से चलने वाली नहीं थी, बल्कि तीक्ष्ण व गतिमान होने के कारण कुछ भी करने से पहले उसके सकारात्मक-नकारात्मक पहलुओं पर विचार करता था और इसी विशेष गुण के कारण सुधार की जरूरत महसूस होने लगी और वह विकसित होने लगा। एक प्रजाति के पशु एक झुंड में रहते हैं और एक प्रजाति के पक्षी एक झुंड में घूमते हैं। यह देखकर मानव भी टोली बनाकर रहने लगा। सृष्टि के पदार्थ, पशु-पक्षी, जल-प्राणी मगर, मछली आदि ही मानव के असली गुरु हैं। उसने प्रत्येक के नाम रखे। आगे चलकर मानव टोली की भाषा उत्पन्न हुई। दूसरी टोली की दूसरी

भाषा बनी। इसप्रकार मानव ने पहले जो पैदा किया वही उसकी असल भाषा बनी। अपने मुंह से ध्वनि निकलना एक स्वाभाविक क्रिया थी, लेकिन ध्वनियों से अलग-अलग आवाज उच्चारण कर शब्द बनाना मानव की रचना है। हिरणों के झुंड में 5 से 25 मादा हिरण व 2 से 4 नर हिरण होते हैं। उसी प्रकार मानव प्रजाति में 5 से 25 नारी व 2 से 4 नर होते थे और एक साथ टोली में रहकर सामूहिक शिकार करते थे व उसका एक समान बंटवारा करते थे। रात के समय एक साथ रहने के लिए वह जंगल में या पहाड़ में झोपड़ियां बनाकर रहने लगे। यह टोली अगर गलती से किसी दूसरे जंगल में शिकार के लिए गई और वहां अपने जैसी किसी मानव टोली को देखा तो उस पर हमला कर देती थी। इस लड़ाई में जो टोली विजयी होती वह विजित टोली की नर-नारियों को पकड़ लाते थे। देखने में मजबूत 2-4 नर मानवों को रखते थे और बाकी के नर-नारियों को मारकर खा जाते थे। लड़ाई में निपुण व संगठित रहने के कारण बाघ, सिंह जैसे क्रूर व ताकतवर जानवरों की भी मानव जाति ने चटनी बना दी। मनुष्य बहुत ही उत्तम ढंग से शिकार करने लगा। शिकार के दौरान एक टोली की दूसरी टोली के साथ लड़ाई होती थी और हारने वाली टोली से नर-नारियों को पकड़कर जीतने वाली टोली में लाया जाता था। इसके बाद टोली की महिलाओं में खूबसूरत और जवान नरों को देखकर झगड़े होते इसलिए टोली में रहने के लिए टोली की मुखिया को कुछ बंदोबस्त बनाकर कुछ नियम लागू करने पड़े। इससे शुरुआती जंगली अवस्था में मनुष्य ने एक-दूसरे के साथ बोलने के लिए भाषा और खाने-पीने के लिए शिकार करना, सोने के लिए नजदीक-नजदीक मजबूत झोपड़ियां, दुश्मन का मुकाबला करने के लिए अपनी टोली की एकजुटता और स्त्री-पुरुषों के बीच इच्छा अनुसार मैथुन करने के नियम बनाए। मानव-प्रजाति ने खुद जीने व सुख प्राप्त करने के लिए जंगली अवस्था में इन नियमों जैसी बातें खोजी है।

जब उन्होंने जंगल में आग लगी देखी तो उन्होंने आग जलाना सीखकर उस पर शिकार किया हुआ मांस भूनकर खाना शुरू किया। आग की खोज से प्राचीन जंगली मानुष तेजी से विकसित होने लगा। वह पत्थर के नुकीले हथियार बनाकर शिकार करने व दुश्मन का मुकाबला करने लगा। जल्दी ही बर्तन बनाकर उसमें खाना पकाकर खाने लगा। इस प्रकार का जीवन जीते हुए अचानक अन्न की खोज हुई और खेती करना शुरू किया। खेती करना आसान हो इसलिए मानव टोली खेती के पास बसने लगी। जहां रहने लगे उस जगह को वे "सफेद" कहते थे और जहां वे खेती करते थे उस जगह का नाम "काला" दिया। इस जगह पर गांव में रहने वाले सभी लोगों का समान अधिकार होता था। कुछ आर्य भट्ट लोगों का

कहना है कि प्राचीन काल में कुछ तोते की चोंच की तरह के नाक वाले गौरवर्णी आर्य आए और गांव में रहने लगे और गांव के लोगों पर हमला किया। गांव में रहने के कारण आर्यों को गोरा समझते हैं। उन्होंने गांव वालों को जीत लिया और उन्हें दास बनाकर उनसे खेती करवाने लगे। ये दास काले होते थे इसलिए इनको काला कहने प्रथा शुरु हुई । लेकिन असल में ये गांव जंगल में सफेद मिट्टी पर ही बसाए गए थे और खेती काली मिट्टी व थोड़ा तांबई रंग की मिट्टी पर शुरू की गई थी इसलिए इनका नाम गोरा और काला पड़ गया।

5. बली राजा का बलिस्तान

हिंदुस्तान देश इंडियन मानव-वंश का उत्पत्ति स्थल है। अति प्राचीन काल में यहां अखंड मानव समाज के अनेक झुंड रहते थे। आज उन्हें शूद्र-अतिशूद्र के नाम से जाना जाता है। ये यहां के मूल निवासी हैं। जंगली व क्रूर ईरानी आर्य ब्राह्मणवादी विप्र के विपरीत ये अधिक सभ्य, सुविचारी व विकसित लोग थे। ये अपने देश यानी बलिस्तान में जगह-जगह अपने गांव बनाकर स्वतंत्रता से सुखपूर्वक रहते थे। उनकी स्वतंत्र रहने की प्रवृत्ति व शत्रु से बचाव करने की तत्परता इन दो कारणों से उनकी अनेक टोलियां अस्तित्व में आईं। उन्हीं के अवशेषों को वर्तमान में कोल, मालरह, महार, नाग, संथाल, गोंड आदि जातियों के नाम से जाना जाता है। गांव के कारण इस इंडियन वंश में महार, सुनार, बढ़ाई आदि भिन्न भिन्न पेशे बने। कोली यह इंडियन महावंश की एक शाखा है, इस शाखा के लोग छोटा नागपुर, विध्यांपर्वत, कोल्हापुर के हिस्सों में बसे हुए हैं। इन लोगों की स्वतंत्र भाषा है, ये लोग जिस जगह पर बसे हुए हैं उसे "मांकी" व जहां खेती करते हैं उसे "मंडी" कहा जाता है (मांकी का अर्थ सफेद और मंडी का अर्थ काला है)। यह लोग गांव में रहते थे और खेती करने के लिए जंगल में जाते थे। ये सभी इंडियन लोग अपने क्षत्रिय पद होने पर गर्व करते हैं। वर्तमान में जिन इंडियन लोगों को शूद्र-अतिशूद्र समझा जाता है, इनके पूर्वजों का इतिहास इनकी मूल दंतकथाओं, मूल रीति-रिवाजों की गहनतापूर्वक खोज करने से सामने आएगा। गांव में सभी क्षत्रिय लोग एक-दूसरे के भाई-बंधू थे। इनमें कोई ऊंच-नीच का भेदभाव नहीं था। उनके प्रत्येक गांव को समानता, स्वतंत्रता व समाधानता के त्रि-सिद्धांत से खुशी और आनंद मिलता था।

हर एक गांव में महार, कुणबी, माली, रट्ठ-धनगर, क्षत्रिय, किसान सभी बली भक्त मिलकर अपने गांव की बरकत के लिए, बली के गांव का हर मनुष्य दीर्घायु हो, खुश रहे, इसके लिए समस्त जन मिलकर बलीयज्ञ करते थे। यह पांचों क्षत्रिय सफेद में रहते और काले में अनाज पैदा करते थे। गांव में कुम्हार, लोहार, बढ़ई, नाई, धोबी आदि पांच बलवंत का अपभ्रंश बलुत है इन बलुतों का बहुत अधिक महत्व होता था। पहले प्रत्येक गांव में सभी निवासी रैयत का एक ही समूह होता था, वह खुद को क्षत्रिय कहते थे। आगे चलकर उनमें जैसे-जैसे विकास होने लगा वैसे-वैसे गांव में कुणबीसभा, बहतीसभा व रैयतसभा जैसी तीन सभाएं स्थापित हो गई। इन तीन सभाओं के अनुसार पूरे गांव की व्यवस्था चलती थी। इसी को ग्राम पंचायत कहते हैं। यह पंचायत रैयत का राज थी, इस कारण सारे बलुत अपने ग्राम राज को ''बलीराज'' कहते थे। इस प्रकार बलीराज हिंदुस्तान के हर गांव में होने के कारण इस देश का नाम बलिस्तान पड़ा। इस विशाल बलिस्तान में प्राचीन काल में राज करने वाले यानी वर्तमान काल के कुणबी, मराठी, माली आदि शूद्र और महार, मांग, चांभर आदि अतिशूद्र लोगों के पूर्वज होते थे। इन पर तुम्हें गर्व होना चाहिए यह शर्म की बात नहीं है। हमें भविष्य में अपनी प्रगति के लिए इस इतिहास की जरूरत है। अगर हमें अपने पूर्वजों के पुरुषार्थ और वर्तमान की अपने कमजोरी की सटीक पहचान नहीं होगी तो हम निश्चित तौर पर अपने भविष्य को बदल नहीं पाएंगे।



इतिहास

इस भाषण में आर्यों के आक्रमण और शूद्रों-अतिशूद्रों के गुलाम बनने की दास्तान है। महात्मा फुले ने पुराणों को खिचड़ी इतिहास की संज्ञा दी है। पुरोहितों ने इनकी रचना अपने को सर्वोच्च पद पर स्थापित करने के लिए की है। ये कपोल-कल्पित हैं इनमें सत्य कुछ भी नहीं है।

इसमें यूनान की सभ्यता की रोमन द्वारा तबाही, भारत और अमेरिका की खोज व इंग्लैंड के सभ्य बनने पर भी रोशनी डालते हैं। गुलामगिरी का खात्मा और बलिस्तान की स्थापना की आशा करते हुए घोषणा करते हैं कि मैं दृढ़ता के साथ कहता हूं कि आने वाले समय में शूद्र-अतिशूद्र विद्या प्राप्त करके अपने इंडियन पुरखों की तरह हिंदुस्तान में लोकतांत्रिक बलिराज्य की स्थापना कर राज करेंगे।

बहामनियन नाईट्स

भूतकाल की घटनाएं कैसे घटी, कहां घटी, क्यों घटी, कब घटी। उन घटनाओं से बाद में स्थिति सकारात्मक बनी या नकारात्मक बनी, इसके पूरे तथ्य संग्रह करके जिस ग्रंथ में रखे गए हैं ब्राह्मण भाषा में इसे इतिहास पुराण कहते हैं। हालांकि मानव जगत के भूतकाल में अच्छी व बुरी घटनाओं के सत्य का दर्शन जिस ग्रंथ में होता है उसे इतिहास कहते हैं। ब्राह्मण लोग इतिहास को उप-पुराण समझते हैं और भूतकाल की घटनाओं को अपने अनुसार कहानियां रचकर छोड़ते हैं, जो राज पुरोहित के कहे पर आधारित है। झूठे पुरोहित या गपोड़ ऋषी ही इनके गुरु होते थे। पुरोहित व गुरुऋषि राजा का स्तुतिगान करके खाने वाले होते हैं और इसलिए उनके पुराणों को इतिहास नहीं मानना चाहिए। इस विषय में अमेरिकन और यरोपियन इतिहासकारों का मानना है कि पुराण सिर्फ और सिर्फ स्वार्थी पुस्तक है जो ब्राह्मणों की महिमा लोगों के दिमाग में ठूंसती है। ईश्वर की अपेक्षा ब्राह्मण को श्रेष्ठ भूदेव समझकर उसकी पूजा-अर्चना करने की सीख देती है।

इसलिए, यह तर्क दिया जा सकता है कि प्राचीन पुराणों में अनेक दंतकथाओं व कल्पित कथाओं की रचना करके और उनको मिलाकर खिचड़ी बनाई गयी है। उन्होंने ब्रह्मा के बारे में अनेक मनगढ़ंत कहानियां रची और ये कहा कि ये उनको खुद ब्रह्मा ने बताई हैं - इस बात को लोगों के मन में बिठाने के लिए, विष्णु का एक ऐसा स्वांग रचाया इसके जरिए ईरानी आर्य ब्राह्मणों ने लोगों को शास्त्रों का हवाला देते हुए ऐसे उपदेश दिए कि वे उनको ब्रह्मा के पुत्र समझें, जो मनुष्यों के भूदेव हैं और उन्हें पशुओं जैसा मानने लगे। अपनी इस ब्रह्म कपट पर लोगों का ध्यान ना जाए अथवा इन ग्रंथों में अपनी जरूरत के अनुसार उनको बदलते रहे हैं। गुलाम लोगों के बच्चों को बिल्कुल भी इनका ज्ञान न दिया जाए। धर्म की ऐसी व्यवस्था बनाई कि लोगों को धर्मग्रंथ पढ़ने से मना किया। वह कहते हैं कि अपने यानी आर्य जाति ब्राह्मणों के अलावा वेद जैसे धार्मिक ग्रंथों का किसी ओर को मुंह नहीं दिखाना चाहिए जबकि उनकी जाति के ही कुछ वाचाल व मूर्ख ब्राह्मण दूसरे धर्म वालों को - अंग्रेज, फ्रेंच, जर्मन जैसे शोधकर्ताओं, म्लेंच्छ लोगों को पैसों के लालच में आकर सारे धर्म नियम व परंपरा अपने धर्मग्रंथों में लपेटकर उनके हवाले करते हैं। और इस बात की इन भट्ट भिक्षुओं को कोई शर्म नहीं। भट्ट भिक्षुओं के पुराण इतिहास के लिए अरेबियन नाईट की तरह बहमनियन नाईट नाम शोभा देगा।

झूठा इतिहास लिखने वाले भट्ट-ब्राह्मण

पुराण, उपन्यास, काव्य, नाटक, प्रहसन, ललित कला, लावणी, गाथा, मनोरंजक कहानियां आदि साहित्य के विभिन्न प्रकार हैं। इनकी प्रकृति ही शिक्षाप्रद व उपयोगी है जिसे वाचन और मनन से बुद्धि का कुप्पा भर जाता है और आनंद सागर के पास पहुंच जाता है। इतिहास एक उत्तम संग्रह होता जिसमें कई तरह के शिष्ट, पुष्ट और दुष्ट लोगों का चरित्र होता है, यह पाठकों का मार्ग प्रशस्त करता है। उनके पुराणों में देवी-देवताओं की चमत्कारिक शक्ति व मनघडंत चरित्र की विलक्षण हकीकत दर्शाई जाती है जो वास्तव में सत्य नहीं है।

ईरानी आर्य ब्राह्मणों ने लेने के वक्त 15 देने वक्त 16 की तर्ज पर झूठे रिकार्ड बनाकर रखने की खानदानी आदत से मजबूर, खुद को विद्वान, शास्त्री, पंडित व ऋषि कहलवाने वाले, इतिहास के नाम से पुराण लिखने वाले इतिहासकारों ने पुराने में नये और नए में पुराने का घालमेल करके भारी भरकम पुराण बनाये। इनमें यहां के स्थानीय लोगों को नीच और

ईरानी, हूण आदि आर्य भट्ट लोगों को उच्च लिखा। इंडियन लोगों को जीत कर उनकी दासता को साक्षात विष्णु भगवान की मर्जी कहा। पर यूरोपीय इतिहासकारों ने इन भट्ट लोगों के लिखे हुए ग्रंथ झूठे व अज्ञानता से परिपूर्ण सिद्ध किए हैं। मानव जाति का सच्चा इतिहास हमारे पूर्वजों और उनके कार्यों के बारे में जानकारी देता है और स्वयं की पहचान कराता है। भट्टों के पुराण हमारी दासता को ब्रह्म का विधान बताते हैं। ये हमारे मन में हीनग्रंथि पैदा करते हैं इसलिए इसे हम अपना इतिहास नहीं मानते। आज भी स्वयंभू भट्ट लोग इतिहास लेखन को अपना जन्मजात अधिकार मानते हैं।

बलिस्तान की सभ्यता

संसार के किसी भी देश की सभ्यता उसकी प्रकृति के अनुकूल व वहां रहने वाली मानव जाति की चेतना पर निर्भर होती है। इन तत्त्वों के आधार पर अपना बलिस्तान देश सभ्यता के शिखर पर पहुंचा हुआ था। यह देश बलवान बलुतों का देश था, इसमें जंगली ईरानी सप्तहिंदू, सप्त मतलब सात व हिंदू मतलब इंडि, यानी सात बलशाली इंडिराजाओं का देश; इंडि शब्द का अपभ्रंश है हिंदू शब्द, जिसे यूनानी पहले इंडस और बाद में इंडिका कहने लगे। अंग्रेजों ने इसे इंडियन लोगों का वास्तविक देश मानते हुए इंडिया नाम दे दिया। अंग्रेज लोग ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य लोगों को नेटिव मतलब शूद्र ही समझते थे। शूद्र का अर्थ गुलाम और अतिशूद्र का अर्थ महागुलाम होता है। गुलाम ब्राह्मण शूद्रों व अतिशूद्रों को नीच जानवर मानते हैं। पर इन ब्राह्मणों के अपने देश में आगमन से पूर्व अपने देश के लोग वर्तमान के कुणबी, माली, मराठी, महार, मांग, कैकाडी आदि लोगों के पूर्वज एक ही थे और लोग सभ्यता का सुख भोग रहे थे। जब भूमण्डल के सभी देश जंगली अवस्था में थे तब हमारा बलिस्तान देश जोर-शोर से सभ्यता का आकाश छू रहा था। यूरोपीय इतिहासकारों का मत है कि इसकी सभ्यता को देखते हुए संसार के भिन्न-भिन्न देश सभ्यता के मार्ग पर चले। उसके हजारों साल बाद यूनान देश में सभ्यता आई। उस देश में होमर नामक कवि ने इलियड व ओडिसी जैसे महाकाव्य लिखे। हिराडटस ने उस देश का इतिहास लिखा। हिराडॉटस दुनिया के पहले इतिहासकार थे, दूसरे इतिहासकार युसिडीडीज थे इसी तरह सुकरात का शिष्य जिनोफन प्रख्यात इतिहासकार हुआ।

जब यूनान देश में गणतंत्र का दिया बुझ रहा था तब डिमॉस्थेनिस इतिहासकार था। जब मकदूनिया देश का राजा फिलीप संपूर्ण यूनान देश के गणतंत्र पर जीत हासिल कर रहा था तब डिमॉस्थेनिस ने कड़ा विरोध किया था। परंतु अंततः फिलीप की जीत हुई थी। फिलीप के बेटे सिकंदर ने मिश्र, ईरान आदि देशों पर जीत हासिल करके हिंदुस्तान पर हमला कर दिया। यूनान की समृद्धि के दौर में सुकरात, प्लेटो, अरस्तु जैसे विद्वानों की मंडली थी। सिकंदर के बाद उसके वंशजों ने एक वैज्ञानिक स्कूल खोला। इस स्कूल में शिक्षा प्राप्त करके यूरोप के अनेक लोग विद्वान बने, इन्होंने सभ्यता के उत्थान के लिए जी-तोड़ प्रयास किये। इसी स्कूल में ज्यामिति शास्त्र के रचयिता युक्लिड, खगोलशास्त्र की खोज करने वाला हिपारकस, भापचालित गाड़ी बनाने वाले हिरो जैसे वैज्ञानिक तैयार हुए। यूनान में गुलामों व रोमन लोगों के बीच झगड़ा शुरु हुआ जिससे यूनान की अंशांति फैल गई। आखिरकार यूनानी सभ्यता का रोमन सभ्यता में विलय हो गया और देश रोमन लोगों का बन गया। यूनानी लोग रोमन लोगों को जंगली समझते थे और जिस तरह ईरानी ब्राह्मण यहां अवहेलना करते थे उसी तरह वे रोमन लोगों को हीन लिखते और धिक्कारते थे। पर इन्हीं रोमन लोगों ने यूनान के जंगली व उद्दंड गुलामों की सहायता से यूनानियों को धूल चटा दी थी। यूनानियों की मदद से रोमन लोगों ने अपने साम्राज्य के गणराज्यों से राजकीय संबंध बनाकर समस्त यूरोप, एशिया और अफ्रीका महाद्वीप के सभी देशों में अपनी विद्या, ज्ञान व धन को बढ़ाकर जनता को सुखी बनाया। उन्हीं लोगों में लिव्ह, प्लूटार्क, टॉसिटस आदि इतिहासकार और केटो, मेरीयास, सीझर, सिसरो आदि ने प्रख्यात वक्ता बनकर अपने देश में श्रेष्ठता हासिल की। रोमन लोगों को कार्थेजी लोगों से निरंतर लड़ते हुए अपने राज्य की सुरक्षा करनी पड़ी। रोमन कई बार पराजित हुए, लेकिन रोमन शूरवीर, रणधीर महाप्रतापी योद्धा सेनापति हैनिबल ने (ई.पू. 146) कार्थेज लोगों को पराजित कर उन पर शासन किया। इंग्लैंड, स्पेन से लेकर एशिया माइनर तक, अफ्रीका महाद्वीप के उत्तरी किनारे तक इतने बड़े देश रोमन राज में लोग आनंदित थे। जब इन लोगों ने इंग्लैंड पर जीत हासिल की तब अंग्रेज लोग जंगली थे और वे अपने गोरे शरीर पर कोयला रगड़कर उस पर रंगबिरंगी धारियां निकालते थे और कंदमूल खाते थे। इन जंगली अंग्रेजों को रोमन लोगों ने सभ्यता का पाठ पढ़ाया। रोमन लोगों ने 400 साल तक हाथ में लाठी लेकर अपने साम्राज्य के लोगों को कपड़े व बर्तनों का इस्तेमाल करना सिखाया। वे लोगों का एक लोकसत्तात्मक राज्य बनाने की कोशिश कर रहे थे। रोमन लोगों के महाप्रतापी राजा जुलियस सीझर ने अपनी जिंदगी में कई देशों के राजाओं को धूल

चटाई, अपने मूल गणतांत्रिक राज्य पर नजर रखी, जनता को दासानुदास बनाया लेकिन उसने अपने सिर पर ताज सजाने को मना कर दिया, और अन्य रजवाड़ों को जीतने निकल पड़ा। ब्रुट्स जो गणतांत्रिक राजनीति में विश्वास करता था वह जुलियस सीझर का रास्ता रोककर खड़ा हो गया। ई.पू. 27 में उसने सीझर के पेट में खंजर घोंपकर उसकी हत्या कर दी।

ग्रीक रोमन और गुलाम

सीजर के भांजे ऑक्टेह्विअन सीजर को लोगों ने ऑगस्टस की पदवी देकर उसे बादशाह बना दिया। इसके बाद सरदार दरकदारों की बहाली शुरू हुई और गणतंत्र की इमारत ढह गई। सीजर XII की करतूतों से ई.पू. 410 के आखिर में रोमन लोगों का वैभव मिट्टी में मिल गया। जिस प्रकार रोमन पातशाही को फ्रेंकेन, जर्मन, ट्युटन के जंगली लोगों ने उखाड़ फेंका था उसी तरह इंडियन लोगों के मजबूत बलिस्तान को जंगली ईरानी ब्राह्मणों ने उखाड़ फेंका और इंडियन सभ्यता को अपनाया, जिस तरह विजेता समूह ने रोमन सभ्यता को अपनाया था, पर उन्होंने अपने भट्ट-व्यवहार से इंडियन सभ्यता को अपना नाम दिया, लेकिन धीरे-धीरे सच सामने आ गया। सच देखा जाए तो ग्रीस-रोमन व उनको जीतने वाले जंगली समूह टलटन, फ्रेंकन, जर्मन, ईरान और ब्राह्मण बहुत साल पहले एक ही कुल में जन्मे थे। ये जन्मजात आवारागर्द व लूटमार करने में निपुण, घुसखोरी से यदि किसी देश में घुस जाते थे तो उस देश को अपने बाप का माल समझकर वहां के लोगों को गुलाम समझते थे और उन पर धौंस जमाते थे। ईरान के जंगली ब्राह्मण इसी जाति के थे। इन्हीं के जंगली भाई-बंधू यूरोप के रोमन राज्य को धूल में मिलाकर पूरे यूरोप में फैल गए। इन्हीं मुगल, हूण, तातार जैसे जंगली समूहों ने पूरे यूरोप को जलाकर राख कर दिया। समस्त सभ्यता खत्म हो गयीं और संपूर्ण यूरोप अज्ञान, गरीबी में पिस गया। यूनानी व रोमन लोगों का शिखर पर पहुंचा वैभव भरभरा कर गिर गया और सभ्यता के पतन से यहां के लोग जंगली अवस्था में फेंक दिए। इस इतिहास से ज्ञात होता है कि किसी भी देश का वैभव व उसकी सभ्यता चिरकाल तक नहीं टिक पाती कभी-न-कभी उस देश का पतन होता है। वर्तमान इतिहास को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि पतन भी हमेशा कायम नहीं रहता, उस देश में पुनः उच्च सभ्यता की स्थापना हो सकती है।

जब बली राज आएगा

अहो, कुणबी, मराठी, महार, मांग, कैकाडी आदि जातियों के पूर्वज प्राचीन काल में एक ही कुल के थे। वे महाप्रतापी और विख्यात राज्य बलिस्तान का कारभार सुखपूर्वक प्रबंधन कर सभी लोगों का उत्थान करते हुए प्रजाजनों को खुश रखते थे। उस वक्त संपूर्ण बलिस्तान वैभव का सुख भोग रहा था। परन्तु आज उनके वंशजों को परस्पर शत्रुता के कारण दुख सहन करने पड़ रहे हैं। लेकिन यदि हम इसी बात का रोना रोते रहेंगे तो इससे अपना दुख दूर नहीं होगा। इसे दूर करने के लिए हमें अपनी कमर कस कर प्रयत्न करने होंगे। महार, मांग जैसे लोग अस्पृश्य नहीं है, अस्पृश्य तो भट्टभिक्षु हैं। ब्राह्मण लोग हिंदू कहलवाने के बहाने ढूंढते हैं असल में उनका धर्म त्रि-वर्ण का है, शूद्र का अर्थ रैयत होता है। ये इंडिया के हिंदू हैं। पौने तीन हजार साल पहले एक महाप्रतापी शूद्र राजा हुआ है चंद्रगुप्त। उनके यहां यूनान का मेगास्थनीज नामक वकील था जिसने हिंदुस्तान की विस्तृत जानकारी लिखी और उसे इंडिका इतिहास नाम दिया। उन्होंने अनेक लेख लिखे, इनमें उस वक्त के इंडियन लोगों की जानकारी हासिल होती है। वह एक जगह कहते हैं कि, "इंडियन व उनके इंडिका देश को किसी ने जीता, ये सच नहीं है, वे युद्ध से जीते गए लोग नहीं थे।" मेगास्थनीज का यह कथन सच है। ईरानी ब्राह्मवादी विप्रों के आक्रमण के बाद यूनानी, ईरानी, तुर्क, हूण, तातार, मुगल, पठान, मुसलमान आदि लोगों का आक्रमण व अंग्रेजों के आक्रमण तक विदेशी जंगली लोगों को हासिल हुई जीत का कोई विशेष महत्व नहीं है। प्रारंभिक ईरानी भट्ट ब्राह्मणों के आक्रमण का ही महत्व है, क्योंकि यहां के लोगों को आज तक उनका गुलाम रहना पड़ रहा है। उनकी यह गुलामगिरी नष्ट करने का मौका उन्हें अंग्रेजों के हमले के कारण मिला। इसलिए यह बहुत ही महत्वपूर्ण और शुभ है। जंगली ईरानी ब्राह्मणादि विप्रों ने कुछ सालों तक इंडियन लोगों पर राज किया। उसके बाद उन्होंने अपने स्वार्थ के लिए ब्राह्मणों के अलग और यहां के विजित लोगों के लिए अलग कायदे कानून बनाये और उन पर जुल्म लादने के लिए उनको शूद्र जिसका अर्थ है नीच, अतिशूद्र जिसका अर्थ है महानीच मानकर उन्होंने बलिस्तान में अपने पक्के गांवों में बसा लिए। आगे चलकर वह जिस ईरान से आए थे उसी ईरान से बाद में आने वाले जंगली लोगों ने आर्य ब्राह्मणों को चैन से टिकने नहीं दिया।

शक, कुशाण, ईरानी आदि लोगों ने हिंदुस्तान के अलग-अलग राज्यों पर चौतरफा हमला शुरू किया और त्राहिमाम त्राहिमाम मचा दी। परंतु धूर्त आर्य ब्राह्मणों ने उनके सामने आर्य बनने की शर्त रख दी। आगे जाकर ये मुसलमानों के शासन के लिए अनुकूल साबित

हुए, कोई पेशवा, कोई कारिन्दा तो कोई पंतोजी बन गए और मुसलमानों की जी हुजूरी करते हुए चाकरी करके अपनी तिजोरियां भरने लगे। पर इनके पूर्वजों ने जिन इंडियन वंश के प्रतापी महान लोगों पर शूद्रातिशूद्र रूपी गुलामगिरी लाद दी, कितने राजे आए और गए पर यह आज तक टिकी हुई है। कितने खतम हुए और कितने जल गये। लेकिन ब्राह्मणों ने अपनी पकड़ जरा भी ढीली नहीं होने दी। वह आज तक भी ज्यों-की-त्यों है। पुराणों में पढ़ने और कथा-कीर्तनों में ऐसा सुनने को मिलता है कि ईरान से आकर ब्राह्मण आर्य ब्राह्मणों ने यहां दैत्य राक्षस मारकर बड़े-बड़े पराक्रम किए हैं परंतु ब्राह्मण-भट्टों का यह इतिहास झूठा है। झूठा ज्ञान अज्ञानता से भी बहुत भयंकर होता है इसका शोध करना शेर की गुफा में घुसने जैसा होगा। जिन पुराणों को ब्राह्मणों ने लिखा है उनमें उन्हीं का इतिहास है, उनमें रंच मात्र भी सत्य नहीं है। इसे कोई भी सिद्ध करके नहीं दिखा सकता। शूद्रों-अतिशूद्रों यानी इंडियन लोगों का शोधपूर्ण वास्तविक इतिहास चाहे जिसने भी लिखा हो मूल रूप में हमें उसी प्रकार पढ़ने को नहीं मिलता जिस तरह ब्राह्मणों का मूल ईरानी रक्त नहीं मिलता। लेकिन उनकी आंखों के सामने गत दो हजार सालों से ब्राह्मणादि राजा-रजवाड़ों की गुंडागर्दी व बदमाशी को बिना किसी चूं-चां के सहन करके जीना पड़ता था। इसमें भी उनका फायदा है जिस प्रकार किसी बेर के बाग में पौधों को खाद पानी देने के बाद बगीचा खिल उठता है, उसी प्रकार शूद्र-अतिशूद्रों को ब्रिटिश के आने से विद्या रूपी खाद पानी मिलेगा और वे भी बाग की तरह खिलेंगे, फलेंगे-फूलेंगे। इसके बाद पाखंड प्रिय धूर्त आर्य-धर्मी भिक्षु भट्ट मांग, कुणबी, मराठी, माली आदि को शूद्र या नीच कहने की जुर्रत नहीं कर सकेंगे। मैं दृढ़ता के साथ भविष्यवाणी करता हूं कि शूद्र-अतिशूद्र विद्या प्राप्त करके अपने इंडियन पुरखों की तरह हिंदुस्तान में लोकतांत्रिक बलिराज्य की स्थापना करके राज करेंगे।



अकाल पीड़ितों की राहत के लिए सावित्री बाई फुले द्वारा संचालित भोजनालय का दुर्लभ चित्र।

सभ्यता

महात्मा जोतिबा फुले का तीसरा भाषण है 'सभ्यता'। इसमें विश्व की विभिन्न सभ्यताओं के विकास की ओर संकेत किये हैं ।बलिस्तान सभ्यता यानी शूद्रों-अतिशूद्रों के शासन से इनकी तुलना की गई है। प्राचीन इंडियन लोग सभ्य, सज्जन और विकसित थे, लेकिन ईरानी ब्राह्मणों ने छल से उनको जीत लिया। जोतिबा फुले आह्वान करते हैं कि शूद्रों फटाफट जाग जाओ, विद्या सीखने की जल्दी करो और हजारों साल की पशुतुल्य जिंदगी को फेंक दो और सभ्य मनुष्य की तरह जीने का संकल्प करो।

प्राचीन काल के अपने पूर्वज

शूद्रो-अतिशूद्रो। हम सब एक ही वंश से हैं, अपने बलिस्तान में जब गांव बसाए गए तब वहां समय के साथ-साथ ग्रामपंचायतों की स्थापना हुई। उसकी आवश्यकता के अनुसार महार, लोहार, बढ़ई, सुनार, माझी, वाघार, रावण, वर्तणार, पाथार, खात्यार, चांभार, बुनकर आदि पेशा उत्पन्न होने के कारण बाद में इन समूहों के यही नाम रूढ़ हो गये। मैं शत प्रतिशत कह सकता हूं कि हम सब उसी इंडियन खून व इंडियन वंश के हैं, इसमें रत्ती पर भी भेद नहीं है। प्राचीन काल में वे सब इंडियनों के वंशज थे। ये भी ब्राह्मणों की तरह ही द्विज व त्रिज थे, एक जाति या एक गोत्र की तरह प्राचीन काल में गांव-गवाड़ की व्यवस्था बनाए रखने के लिए इनमें चर्षणी, क्षित, विश, कृष्टि, गिर जैसे पांच भेद थे।

चर्षणी यानी गांव कुलाकर (व्यवस्थापक), क्षित- घर बनाकर रहने वाले, विश गांव के बाहर दूसरे गांव में अपना माल बेचने वाले, कृष्टि का अर्थ महार था और ये खेती करते थे, गांव के जंगल या पहाड़ में रहकर वहीं खेती करके गुजारा करने वाले गिर होते थे। ऐसे पांच भेद थे लेकिन इस तरह के पांच भेदों का अर्थ एक ही है यानी क्षत्रिय, मानव या रैयत। बलिस्तान के ये क्षत्रिय लोग अपनी पुश्तैनी कार्य करते हुए समय के साथ-साथ अपनी परंपरा में बदलाव करते हुए कदम-ब-कदम सभ्यता के फल भोग रहे थे।

सभ्यता शब्द को अंग्रेजी में सिविलाईजेशन कहा जाता है। यह शब्द मनुष्य द्वारा अपने समग्र उन्नति के लिए किए गए संघर्षों का व्यापक बोध कराता है। मनुष्य ने अपना जीवन सुखी बनाने के लिए सृष्टि की उत्पत्ति से लेकर आज तक जो भी प्रयत्न करके हासिल किया इसी को सभ्यता कहते हैं।

भोजन, निद्रा, भय, मैथुन ये चार जीव वृत्तियां तमाम प्राणियों में होती हैं। इसलिए वह अधिक खुशी व लंबी आयु प्राप्त करने की स्वाभाविक इच्छा से लगातार संघर्ष करता रहता है। इस पूरी प्रक्रिया में मनुष्य ने शेष समस्त प्राणियों व प्रकृति पर अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया। अन्य प्राणी इस तरह का वर्चस्व स्थापित नहीं कर पाए क्योंकि यह उनके बुद्धि व शरीर के अनुकूल नहीं था इसलिए वे मानव की तरह कार्य नहीं कर सके। मनुष्य में कृर्तत्व दैवीय नहीं है वे उसके दीर्घकालीन अनुभवों, दूरदर्शी कोशिशों तथा तीव्र बुद्धि से आई सभ्यता के कारण प्राप्त हुए हैं। पशु-पक्षी अपने आहार में बदलाव नहीं करते। मनुष्य पहले कच्चा मांस व फल-फूल खाता था, पर आज वह तरह-तरह के पकवान पकाकर चटाई पर बैठकर सुंदर सी थाली में खाता है। पशु-पक्षियों के पूर्वज जैसे सोते थे, आज भी उनके वंशज वैसे ही सोते हैं। मनुष्य प्राणी पहले के मनुष्य की तरह पेड़ों पर या गुफाओं में नहीं बल्कि सुंदर इमारतों में सोने लगा है। प्राचीन काल के पशु-पक्षियों में जो डर था वही आज के पशु-पक्षियों में भी मौजूद है। मनुष्य बंदूक, तोप बनाकर निर्भय हो गया। मैथुन सुख के लिए पशु-पक्षियों की तरह परंपरागत रूप से नहीं, बल्कि उसमें भी उसने बदलाव किया है और अपने आनंद में वृद्धि की है। सारांश, पशु-पक्षियों के आहार, निद्रा, भय, मैथुन जैसी स्वाभाविक बातें आरंभ में जैसे थी वैसे ही आज भी हैं। उसके विपरीत मनुष्य का मूल स्वभाव अज्ञानता से भरा हुआ था आज ऐसा नहीं है, उसमें उल्लेखनीय सुधार हुआ है। प्राचीन काल में इंडियन लोगों की सभ्यता का प्राचीनत्व और आज के शूद्रों-अतिशूद्रों के रहन-सहन व आचार-विचारों की गहन पड़ताल से यह सिद्ध होता है।

अज्ञानी आर्यन टोली

अपने बलिस्तान में आर्य भट्टों के आगमन से पूर्व यहां के क्षत्रिय लोग आनंद और सुख की जिंदगी जी रहे थे। हर कोई नीति धर्म का पालन करते हुए एक-दूसरे से भाईचारा बनाते हुए, गुणवान, ज्ञानवान, शीलवान स्त्री-पुरुषों को प्रोत्साहित करते थे। अत्याचारी ब्राह्मणों की

तरह कमजोर व असहाय लोगों पर अत्याचार व व्यभिचार नहीं करते थे, बल्कि अपनी शक्ति व ज्ञान का उपयोग कमजोर व असहाय लोगों के परोपकार के लिए करते थे। यहां के सभी लोग मानवता के महान सिद्धांतों समता, स्वतंत्रता और बंधुत्व या मानव धर्म के महान तत्त्वों के पालन से उनकी आने वाली हर पीढ़ी उत्तरोत्तर बुद्धिमान व बलवान हो रही थी और प्रगति पथ पर आगे बढ़ते हुए बलिस्तान सभ्यता में श्रीवृद्धि कर रही थी। इन क्षत्रियों में साहस, वीरता, शौर्य, सत्य, ईमानदारी, करुणा आदि गुण विद्यमान थे। उनके देश के सभी गांव में बलिराजा के दर्शन के अनुसार आत्मनिर्भर एवं स्वायत्त गणतांत्रिक राज्य चल रहा था, उस राज्य में चोरी, डकैती, लूटमारी, गबन करने वाले अपराधियों को मृत्यु-दंड दिया जाता था। यहां के लोगों में यूनानी, रोमन लोगों की तरह दूसरे लोगों को पकड़कर या बाजार से भेड़-बकरियों की तरह खरीदकर लोगों से काम करवाने की प्रथा नहीं थी या फिर आर्यों भट्टों की तरह दूसरे देश पर आक्रमण करके वहां के लोगों को छलकपट व जादू-टोने से जीतकर उन्हें शूद्र-अतिशूद्र बनाकर उनके साथ जानवरों जैसा सुलूक करने की प्रथा नहीं थी। इसी से समझ में आता है कि यहां के प्राचीन इंडियन लोग सभ्य, सज्जन और विकसित थे, इसके सबूत भट्ट-भिक्षुओं द्वारा बनाई गई पुराण-खिचड़ी में भी मिलते हैं।

प्राचीन काल में भारतीय लोग छोटे-मोटे गांव बसाकर रहते थे। उनके पास लंका, त्रिपुरा जैसी स्वर्ण नगरी भी थी। उन्हें सभी वस्तुओं का ज्ञान होता था, वह कला-कौशल में भी माहिर थे। ग्रहों को देखने, पहचान करने, पंचांग बनाने का काम इंडियन लोग करते थे, न कि जंगली आर्य लोग। वे मूल्यवान वस्त्र व बहुमूल्य आभूषण प्रयोग करते थे। इन लोगों में हम सभी शूद्र-अतिशूद्र जाति के लोग थे, प्राचीन काल में इनके पूर्वज नाग, सांप, गीदड़ आदि पशु-पक्षियों के नाम के समूह से जाने जाते थे, इन्हीं के नाम से इनके वंशज इनको देवता मानने लगे होंगे। आज इनके वंशज जिन-जिन जातियों में हैं उन उन जातियों के जो कुल हैं और उन कुलों के जो जो देवता हैं उनके पूर्वजों की सभ्यता का थोड़ा-बहुत अनुमान लगाया जा सकता है। शूद्र-अतिशूद्र बंधुओ! इस तरह हमारे पूर्वज गुणी, ज्ञानी व श्रेष्ठ दर्जे के मानव थे। इनकी आज भी हम पूजा करते हैं और इच्छा करते हैं कि "इड़ा-पिड़ा जाए, बली का राज आए"। तण्डूल न्याय सिद्धांत के अनुसार जिस तरह एक दाने से चावल के पकने का पता लगाया जा सकता है इसी तरह आर्य भट्टों ने हमारे इतिहास को पुराणों के रूप में रचकर जो खिचड़ी पकाई है उसके एक अंश से ही अनुमान लगाया जा सकता है कि वह सच है या झूठ। उनके द्वारा पकाई गई पुराण-खिचड़ी में चावल किस देश का है, दाल किस प्रदेश की है,

वह मूंग है या मसूर, बादाम, पिस्ता, आलूबुखारा अफगानी है या ईरानी, इलायची, कालीमिर्च, जायफल, लौंग, जावा सुमात्रा से लाया गया है या यहीं का है, हरी मिर्च ताजी है या सूखी, लाल मिर्च, नमक-मिर्च आदि सभी तरह के पदार्थ इसी देश के हैं या ईरानी हैं कुछ समझ नहीं आता। ईरानी ब्राह्मणों ने पुराणों की ऐसी खिचड़ी बनाकर रखी हुई है। इस खिचड़ी के दो गुण हैं अगर भट्ट खा ले तो वह भूदेव बन जाता हैं और ब्राह्मणों के अलावा कोई खा ले तो वह पशु बन जाता है। भट्ट लोगों के पैर धोकर उस गंदे पानी को तीर्थ समझकर पीने का पागलपन करता है। इस तरह की पुराण-खिचड़ी की महिमा का अनुभव खल्लड (मरे हुए जानवरों का खाल उतारने वाला) व भाबड जैसे शूद्र-अतिशूद्र निट्ठले लोगों को है, उनको राम, कृष्ण, विष्णु मंदिरों में ले जाया जाता है और ब्राह्मणों द्वारा बनाई गई पशुतुल्य व्यवस्था प्रपंच में जोड़ा जा रहा है। ईरानी ब्राह्मणों द्वारा ये देवी-देवता, पोथे-पुराण अपनी जीविका के लिए बनाए गए साधन हैं। इसलिए कुछ शूद्र-अतिशूद्रों में देवी-देवताओं के छंदों, जन्म-पुनर्जन्म और स्वर्ग-नर्क का डर पैदा हो गया है और पूर्णरूपेण देवताओं के भरोसे बैठ कर परिश्रम न करने की कसम खा ली है। यदि पूरी सच्चाई जाननी है तो पोथे-पुराणों में नहीं बल्कि अपने धुरंधर प्रतापी पुरुषों के बारे में शोध करो, तब इस विषय को समझने के योग्य हो जाओगे।

बलिस्तान ही हमारी जन्मभूमि है

हमारे पुरखों ने आर्य ब्राह्मणों का सैकड़ों सालों तक मुकाबला किया कई बार उनको पीटकर अपने बलिस्तान की आजादी को कायम रखा। पुराणों में बताया गया है कि कश्यप शूद्र-अतिशूद्र का मूल पुरुष था और इसको शूद्रों-अतिशूद्रों का कुल देवता माना जाता है। उनके पुत्र बहुत ही शक्तिशाली थे और इंद्र को भी जीत लिया था। वृत्त, विप्रचित, अंधक, हिराण्यक्ष, हिरण्यकश्यप, प्रह्लाद, विरोचन, बली, राव आदि महारथी कश्यप की संतानें थीं। इन्होंने ईरानी आर्य भट्ट द्विजों को अनेक बार पराजित किया और इंद्र को वापिस ईरानी देशों में भगाया तथा पूरी पृथ्वी के इंद्रपद को सैकड़ों सालों तक अपने अधीन रखा था। यह इतिहास मत्स्य पुराण के 17वें अध्याय में लिखा है। अनार्य लोगों के विशाल व अभेद्य किले, सोने से बने हुए नगर, त्रिपुर नगर का निर्माण, गैर-आर्यों के सिहांसन, उनकी स्त्रियों की खूबसूरती, अन्य लोगों के साथ उनका व्यवहार, उनके राज्यों की राजव्यवस्था, उनके यज्ञ,

याग, अन्य राज्यों से संबंध, लोगों का व्यवसाय, राजे-रजवाड़ों का प्रजा के साथ बर्ताव, यहां के लोगों की बुद्धिमता जैसी सभी बातों की जानकारी प्राप्त होती है। इस स्पष्ट समझ के साथ कि हम शूद्र-अतिशूद्र अनार्य कुलों से हैं इस पर हमें गर्व होना चाहिए। हमारे बलिस्तान का इतिहास ईरानी भट्टों, द्विजों, आर्यों, यवनों, म्लेच्छों, तुर्कों, मुगलों, हूणों की तरह खानाबदोशी का इतिहास नहीं, बल्कि अपने इंडियन रक्त की बूंद-बूंद में पुरखों के वैभव का इतिहास है। इसलिए अपने पुरखों के इतिहास को अपनाते हुए, हमें अपनी अभेद्य एकता करके सभ्यता के मार्ग पर चलने की जरूरत है।

अपने बलिस्तान के भारतीय लोगों का जन्म कहां, कैसे और कब हुआ इसका सबूत अभी तक प्राप्त नहीं है, फिर भी इसके बारे में अनुमान लगाया जाता है कि इंडियन लोग हिंदुस्तान में ही जन्मे थे और यहीं के मूल निवासी हैं। कुल मिलाकर देखा जाए तो आज जिस तरह शूद्र व अतिशूद्र कीड़े-मकोड़ों की तरह जी रहे हैं, हमारे पुरखे ऐसे नहीं थे, वे महाप्रतापी व कीर्तिमान थे और बहुत ही सभ्य थे। उनका देश आकाश जितना विस्तृत था और उनकी सभ्यता का डंका आसमान में गूंजता था। उनका सिर संसार में सबसे ऊंचा था। यहीं पहली सभ्यता का सूरज उगा और यहीं से संसार में उसका प्रकाश फैला और रोमन साम्राज्य में अस्त हुआ।

यूनान-रोमन सभ्यता

इस पृथ्वी पर सृष्टि क्रम के अनुसार हर मानव-समाज की तथा उस देश की सभ्यता ने मानवजाति के सुख और ज्ञान को बढ़ाया है। एक समय अपने से बहुत दूर अमेरिका महाद्वीप के कुछ देशों में सभ्यता बनी और वह मिट गई और वहां के लोग अवनत होकर जंगली अवस्था में पहुंच गए लेकिन उसे मनुष्य जाति की आदिम अवस्था नहीं कहा जा सकता। प्राचीन काल में मिस्र, मेसोपोटामिया, यूनान, रोम आदि देशों में सभ्यता आ चुकी थी। यूरोपीय इतिहासकारों का कहना है कि यहां के लोगों को ज्योतिष विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, गणित जैसे विज्ञानों का ज्ञान था। प्राचीन काल में सभ्य हुए मिस्र, यूनान, इटली आदि देश वर्तमान में पिछड़ गए हैं। इससे यह नहीं कहा जा सकता कि मानव सभ्यता किसी मानव समाज में या किसी देश में निरंतर चलती रहती है। सभ्यता का अर्थ देश में रहने वाले लोगों की स्वतंत्रता है, जिसको जंगली, भुक्खड़, लालची, लोभी, क्रूर महत्वाकांक्षी जैसे

मानव भेड़ियों ने छीन लिया, कुछ लोगों को भगा दिया, कुछ को गुलाम बना लिया और उस देश के मालिक बन बैठे और उनकी सभ्यता को झपटकर खुद मजे से रहने लगे। इस तरह जंगली लोगों के ही भाई बंधुओं ने बलिस्तान पर कई बार आक्रमण किया और यहां के मूल शिक्षित व सुशील क्षत्रियों को जीतकर उन्हें गुलाम बनाया। अनेक प्रकार से उनके बुरे हाल कर दिये। कितनी ही बार महार, मांगों की चमड़ी उधेड़कर "त्वचं कृष्णमारंधयंत" उन्हें तुरंत जला दिया। वेदांत पुराण में इसके प्रमाण व साक्ष्य हैं। उसके कुछ समय बाद ईरानी आर्य जिस देश से आए उस देश में पर्शियन सभ्यता का उदय हुआ दिन के उजाले में ही यूनानियों ने ईरानियों को मॅरेथन तक खदेड़ दिया और अपने देश को सभ्यता के रास्ते पर लगा दिया। आगे चलकर यवनी जाति का फिलीप यूनान का बादशाह बन गया उसका बेटा सिकंदर बड़े पराक्रम से पर्शियनों को हराते हुए हिंदुस्तान तक पहुंचा। यहां के भट्ट-भिक्षुकों की कमर तोड़ दी और वापिस अपने देश निकल गया और रास्ते में ही उसकी मृत्यु हो गई। उसके कार्यकाल में पूरी दुनिया में यूनानी सभ्यता की दुदुंभी बजती थी। वहाँ के ज्ञान, कला व शस्त्रों की पूर्णता के कारण यूनानियों को रोमन लोगों ने जीत लिया और अपने साम्राज्य में मिला लिया। इन शक्तिशाली रोमन लोगों के शक्तिशाली साम्राज्य पर हूण, फ्रंक, तातार, मुगल, ट्यूटन जैसे जंगली कबीलों ने इकट्ठे होकर धावा बोल दिया। जंगली कबीलों के नायकों ने रोमन बादशाह को आगे-आगे लगा लिया। रोमन साम्राज्य की दूसरी शाखा ने कैंटिनोपल में लगभग एक हजार साल तक शासन किया था, पर उसे भी मुसलमानों ने जीत लिया। इसलिए वहां के यूनानी लोग अपनी रक्षा के लिए रोम शहर में आकर बस गए। वे अपने साथ नई-पुरानी किताबें भी लेकर आए। जैसे ही विद्वानों का ध्यान उजड़े हुए यूनानियों के गुप्त ज्ञान-धन पर गया तो और यूरोप के सभी देशों में फैल गया। पीटार्क बोक्याचिओ जैसी विद्वान मंडली ने बहुत मेहनत करके यूनान व रोमन साम्राज्य में लिखी गई पुस्तकें ढूंढने का संघर्ष किया। यूनानी विद्या का प्रवाह इंग्लैंड तक पहुंच गया, जो आज तक उनको अप्राप्य रहा था अंग्रेजों में इस प्राचीन ज्ञान भंडार को खोलकर देखने की उत्सुकता पैदा हुई।

इस कारण अंग्रेजों ने अपने व अपने देश में अभूतपूर्व सुधार किए और दुनिया भर में अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया। इसलिए कहा जाता है कि अंग्रेजी साम्राज्य में सूर्य कभी अस्त नहीं होता। फिलहाल अपने देश में अंग्रेजों का ही राज है, शूद्र-अतिशूद्र लोगों के पशुतुल्य जीवन और अज्ञानता को दूर करने के लिए यह बहुत ही उपयुक्त है। क्योंकि मनु-विधान के अनुसार शूद्रों-अतिशूद्रों द्वारा विद्या-ज्ञान हासिल कर कोई उद्योग-धंधा करना, धन

संपति अर्जित करना आज तक वर्जित था। इसलिए वे अज्ञानी व दरिद्र होते गए, पशुओं की तरह रहने की आदत बन गई और गुलामगिरी में ही संतुष्ट रहने को पुण्य समझने लगे। अब हमें अंग्रेजी विद्या सीखकर ज्ञान बढ़ाते हुए अपनी व अपने बलिस्तान की शान को भी बढ़ाना चाहिए।

गुलामगिरी के इतिहास की ओर ध्यान दो

आज यूरोप के जो देश सभ्यता के नाम पर आसमान छूते दिखाई देते हैं वे सभी देश रोमन साम्राज्य के नष्ट होने के बाद चौदह सौ सालों तक अज्ञानता के अंधकार में डूबे हुए थे। तथापि यहां के बुद्धिमान लोगों का यूनानी व रोमन लोगों के प्राचीन काल के जीर्ण-शीर्ण ग्रंथों पर ध्यान गया और उसके बारे में आंतरिक जिज्ञासा उत्पन्न हुई। उसका अध्ययन शुरू हुआ, वह देश सभ्य होने लगा और भौतिक विज्ञान की अलग-अलग बातों को ढूंढने की जबरदस्त चिटक लगी और शोध होने लगे। अनुभवसिद्ध और प्रयोग सिद्धांत बनने लगे।

किसी ने मानव प्राणी, किसी ने पशु-पक्षियों, और किसी ने पेड़-पौधों, किसी ने भूमि, किसी ने समुद्र, किसी ने आकाश, किसी ने तारों-ग्रहों की शोध करते हुए अपने देश का और मानव जाति का ज्ञान बढ़ाने लगे।कितने ही लोग अमेरिका की खोज करने लगे तो कितने ही हिंदुस्तान, चीन जैसे देशों में जाने लगे। कुछ लोग दक्षिण ध्रुव के चारों ओर तो कुछ लोग उत्तर ध्रुव के चारों ओर घूमने लगे। कुछ विलक्षण लोग दोनों हाथों में पंख बांधकर पक्षियों की तरह आसमान में उड़ने की कोशिश करते हैं, तो कुछ लोग तोप के गोलों पर बैठकर चांद पर जाने की कल्पना करते हैं। इससे मानव बुद्धि का आसमान की तरह विशाल व अतर्क्य होना समझ आता है। प्राचीन यूनान व रोमन लोगों द्वारा लिखित पुराने ग्रंथों की तुलना में हमारे यहां के सनातनियों ने पुराने ग्रंथों में जिसप्रकार के झूठे और कल्पित किस्से घुसाकर अनुपयोगी कर दिया है उस प्रकार की दुर्दशा होमर, प्लेटो, अरिस्टाटल, हिरोडोटस, ल्युसिपस, युक्लिड, हीरो, टॉलेमी आदि विद्वानों द्वारा लिखित ग्रंथों की नहीं हुई। यूनानियों का ज्ञान तंत्र समझने के बाद यूरोपीय लोग दुनिया की भाप, आग, बिजली के साथ-साथ सूर्यमंडल को भी पकड़ने की कोशिश कर रहे हैं। मतलब कोई पक्षियों की तरह आकाश में 10-20 फर्लांग भ्रमण करके संतुष्ट नहीं हुआ। वह चांद पर कब पहुंचेगा पता नहीं, पर भविष्य

में वह चांद पर ही नहीं आकाश गंगा में अनेक सूर्यमंडल हैं, उनमें से पृथ्वी जैसे किसी ग्रह पर ही न पहुंच जाए कह नहीं सकते।

गत चार-पांच सौ सालों में यूरोप महाद्वीप के अलग-अलग देशों के वैज्ञानिक विद्वानों ने सत्य का शोध किया है और अपने-अपने देशों की सभ्यताओं को उन्नत करने के लिए कठोर प्रयास कर अपने देश के भौतिक शास्त्र को शिखर पर ले जाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। फिलहाल किसी घुड़-दौड़ की तरह यूरोप के अलग-अलग देशों में सत्य का शोध करके सभ्यता रूपी घुड़-दौड़ शुरू है। वहां अंग्रेजों के घोड़े जीत रहे हैं दुनिया भर में इसकी चर्चा फैल गई है। मानव की जंगली अवस्था में फर्क पड़ा है और वह सभ्यता के रास्ते पर चल पड़े। खुद अंग्रेजों के ग्रेट ब्रिटेन में अभूतपूर्व विकास हुआ है, जैसे रसायन, पदार्थ विज्ञान, भूगर्भ, प्राकृतिक ज्ञान, सजीव-विज्ञान, ज्योतिष आदि बातों में बड़े-बड़े शोध होने लगे हैं। इसकारण लोगों की जिज्ञासा में बहुत वृद्धि हुई है और उनके आचार-व्यवहार, नीति, मानव धर्म आदि में सुधार होते-होते सचमुच में मानव प्राणी बन गए हैं। अक्लविहीन, अर्थहीन वेद पाठ और शुष्क जाल निर्माण करने वाले, आरती की थाली घुमाने व घंटी बजाने वाले हजारों सालों से हमें शूद्र मानने वाले लालची भट्ट लोगों के रहते यह होना कठिन है।

फिलहाल अपने बलिस्तान पर अंग्रेज बहादुरों का राज है, वे रैयत को सभ्य बना कर सुख-सुविधा बढ़ा रहें हैं। अंग्रेज बाहरी हैं फिर भी इनको आज तक राज करने वाले बाहरी ईरानी आर्य ब्राह्मण, दुर्रान पठान व तुर्रानी मुगल, हूण लोगों से कई गुणा बेहतर कहा जा सकता है। क्योंकि बाहर से भारत में घुसने वाले ईरानी ब्राह्मण, पठान हूण थे और इन लोगों ने हमारे पुरखों को बिना वजह बेकार में हराया और अपने को शुद्ध रक्त के आर्य श्रेष्ठ कहकर यहां के लोगों को हीन, नीच, शूद्र समझकर उन पर राज किया। इस तरह इन बाहरी लोगों ने इंडिया के मूल निवासियों की संतानों को पशुतुल्य बनाया है। उनकी थोपी हुई गुलामगिरी को खत्म करने के लिए अंग्रेज लोगों का राज उपयुक्त है। इसलिए शूद्रों फटाफट जाग जाओ, विद्या सीखने की जल्दी करो और हजारों साल की पशुतुल्य जिंदगी को फेंक दो और सभ्य मनुष्य की तरह जीने का संकल्प करो। अगर हमने ऐसा नहीं किया तो जानवर और हम में कोई अंतर नहीं रहेगा।

गुलामगिरी

इस भाषण में जोतिबा फुले यूनान से शुरू हुई गुलाम प्रथा को अपने समय तक अमेरिकी गुलामों तक लेकर आते हैं। इसमें विस्तार से बताया है कि अमेरिका और नीग्रो लोगों को यूरोपीय लोगों ने किस तरह गुलाम बनाया। वे आर्य ब्राह्मणों की तुलना यूनान के बुद्धिजीवियों से करते हैं। 'ज्ञान के जनक' कहे जाने वाले अरस्तू जैसे विद्वान की भी आलोचना करने से नहीं चूकते। अमेरिका के काले गुलामों के नारकीय जीवन की शूद्रों-अतिशूद्रों के जीवन से तुलना करते हैं तो उनकी आंखे नम हो जाती हैं।

भयभीत जंगली कुत्ते की कहानी

सभी प्राणियों में जीने की चाह और सुख की आशा करना जन्मजात प्रवृत्ति है, इसलिए वे जीने के लिए भोजन और सुखदायी चीजों के उत्पादन के लिए निरंतर संघर्ष करते हैं। पेट की भूख शांत करने के लिए अनाज पैदा करने के लिए तरह-तरह के प्रयत्न करते हैं, मानसिक सुख भोगने के लिए, संतान पैदा करने के लिए और कामेच्छा की पूर्ति के लिए संभोग करते हैं। यह सभी जीवों में जन्मजात है। इसके बारे में आपको विश्वास दिलाने के लिए एक भूखे व भयभीत जंगली कुत्ते का उदाहरण देना चाहूंगा, ताकि आपको समझ में आ जाए, तो कान लगा कर सुनो।

एक कुत्ते को एक दिन कुछ खाने को नहीं मिला, इसलिए वह इधर-उधर मारा मारा फिर रहा था तभी उसने एक दूसरे कुत्ते को खरगोश का मांस खाते हुए देखा, उसने उस कुत्ते पर छलांग लगाई और नीचे गिरा दिया, दांतों से काटते हुए विजयी स्वर के साथ मांस के टुकड़े छीनने लगा। नीचे गिरा हुआ कुत्ता हैरान होकर किसी तरह उसके पंजों से बचकर हारी हुई आवाज में किकाते हुए दूर भाग गया। उसके भाग जाने के बाद इस कुत्ते ने उसका शिकार खाया और डकार मारते हुए चलने लगा। इस कुत्ते को आगे एक कुत्ता व कुतिया दिखे। यह कुत्ता उनके पास गया और कुत्ते से लड़ना शुरू किया और उसे पीट दिया।

इस कहानी का अर्थ है "जिसकी लाठी उसकी भैंस" और ये न्याय पशु-पक्षियों आदि प्राणियों में तो अनादि काल से आज तक रहा है, जबकि मानव प्राणि को तो हजारों साल ही हुए हैं। ये बात रोमन इतिहासकार कार्मेलियन टासिटस नामक विद्वान ने अपने ग्रंथ में लिखी हुई है। उसके बाद कान्स्टीनोपल के जास्टियन नामक बादशाह के शासनकाल में थिओडोशिअस नामक इतिहासकार ने भी अपने ग्रंथ में जानकारी दी है कि आदि मानव कैसे रहते थे। उनके अनुसार आदि मानव और पशु के व्यवहार में कोई अंतर नहीं था। सभ्यता का तो कोई चिह्न नहीं था। कितने ही विद्वानों का मत है कि मानव जाति में परिवार व्यवस्था की उत्पति से पूर्व स्त्री-पुरुष के संबंध पशुओं की तरह ही होते थे और पशुओं की तरह ही खाते-पीते थे, परंतु समय के साथ मानव ने अपने आचार-विचारों में बदलाव करते हुए पशुत्व का त्याग किया, इसी बदलाव को सभ्यता कहते हैं।

मानव प्राणी अपनी बुद्धि के बल पर धीरे-धीरे सुधरता गया और एक दिन अपना अस्तित्व बचाने और जीवन सुखी बनाने लिए समस्त सजीव व निर्जीव पदार्थ कैसे काम आएं इसकी खोज करने लगा और हिंसक प्राणियों का मुकाबला करने लगा। अज्ञात बातों और संकटों पर ध्यान देते हुए अनुभव व ज्ञान संपादन करते हुए समस्त चराचर जगत पर अपना एकाधिकार स्थापित किया। जो सफलता अन्य प्राणी हासिल नहीं कर सके वह मनुष्य ने की। इससे पहले लाखों मानव प्राणी हिंसक जानवरों व प्रकृति के अज्ञात संकटों से जूझते हुए मारे गए होंगे! और इस अवस्था में मानव प्राणी ने प्रकृति व मानवेतर प्राणियों से हजारों वर्ष संघर्ष किया। यह लड़ाई लड़ते हुए मानवेतर प्राणियों और भौतिक नियमों का अनुभवसिद्ध ज्ञान हासिल किया, इसी के बल पर प्राकृतिक पदार्थों व पशुओं को अपने अनुसार ढाला। समस्त मानव जाति के अस्तित्व और सुख उत्पति के साधनों के लिए उसने प्रचंड जीत हासिल की और शेष सभी को अपना गुलाम बना लिया। मानव का यह कार्य यहीं नहीं रुका। यह किसी एक मानव की तर्क बुद्धि का नहीं, बल्कि समस्त मानवों की सामूहिक बुद्धि की उपज था। सारे ब्रह्मांड के निर्माता के रूप में विष्णु की कल्पना की गई है जो आकाश में चांद तारों में रहता है। उसके चार मुंह हैं और उसके मुख से ब्रह्मदेव पैदा हुआ यानी ब्राह्मण पैदा हुआ, इस कारण उसने मूर्ख लोगों को अपना गुलाम बनाया है। वास्तव में देखा जाए तो पशु और मूल मानव प्राणी के बीच कोई भेद नहीं है। ये गलीच तो हिंसक पशुओं से भी खतरनाक हमला करते हैं।

पशु जगत और मानव जगत

बाघ को हिंसक पशुओं में गिना जाता है। वह बिना किसी की मदद के खुद ही शिकार करके पेट भर सकता है, खुद के बल पर अपनी रक्षा कर सकता है। वह उसकी जाति या दूसरी जाति का हिंसक पशु हमला कर दे तो उसका मुकाबला करता है। इसलिए किसी भी प्राणी के अस्तित्व और सुख में कोई अड़चन आती है तो उसे दूर करने के लिए जो कुछ करना पड़ता है इसी का नाम संघर्ष है। यह प्रत्येक प्राणी में पैदाइशी गुण होता हैं। जैसे हिरण कभी भी घास के मैदानों में जंगल में अकेले-अकेले नहीं, बल्कि झुंड बनाकर चरने जाते हैं। इस झुंड में प्रत्येक हिरण को झुंड के आधार से बल मिलता है। यदि किसी बाघ ने झुंड में किसी एक हिरण पर हमला किया, तो पूरा झुंड बिखर जाता है और प्रत्येक हिरण घबराकर जो रास्ता मिला वहीं से भाग जाता है। भाग जाना, आत्मरक्षा के संघर्ष का हिस्सा है और दुर्बल प्राणियों को यह मजबूरी में अपनाना पड़ता है।

कुछ जानवर हिंसक होते हैं और कुछ अहिंसक फिर भी एक ही जंगल में रहते हैं। दो बाघों में शिकार के लिए ये तेरी या मेरी की लड़ाई होती है ? या फिर बाघिन का संभोग सुख के लिए ये किसकी है? तेरी की मेरी? वे एक-दूसरे से लड़कर इसका समाधान निकाल लेते हैं। प्राचीन काल में जंगली मानव इसी अवस्था में थे, हर छोटे-बड़े मानव समूह अपनी बस्ती या दूसरे मानव समूह व उसकी बस्ती के साथ लड़ते रहते थे। शक्तिशाली समूह कमजोर समूह पर हमला करता था। अंत में कमजोर समूह के जवान लड़के-लड़कियों को पकड़कर ले जाते थे और विजयी जवान उनके साथ अपने आनंद के लिए जबरदस्ती संभोग करते थे। वे जवान लड़कियां उन मानव पशुओं से किसी तरह बच भी जाती थी, तो उन्हें पकड़कर लाने वाले अन्य स्त्री-पुरुषों द्वारा उन पर पत्थरबाजी करके उन्हें मौत के घाट उतार दिया जाता था। अत्याचारी नराधमों की टोली मारने के बाद समूह के सभी छोटे-बड़े और बुजुर्ग, स्त्री-पुरुष, उनकी पेड़ देवी के चारों ओर घूमते हुए एक-दूसरे के हाथ पकड़कर टुरटुरी गीत गाते थे। इसके बाद आहार देवी को नैवैद्य अर्पित करते हैं और उनका मुखिया सब के हाथ में मांस का एक टुकड़ा देता है और फिर खा-पीकर मौज करते हैं। इन जंगली लोगों के खाद्य पदार्थ खरगोश, हिरण व जंगली सुअर का शिकार करके लाना या दूसरी समूह के मानवों का मांस, मछली व फल-फूल ही होते थे। उस वक्त उन्हें रोटी के बारे में जानकारी नहीं थी।

कालांतर में मानव ने आग की खोज की, मिट्टी के बर्तन बनाने लगा और उनमें मांस व अन्य खाद्य पदार्थों को भूनकर या पकाकर खाने लगा। खेती की खोज होने के बाद अनाज का उत्पादन होने लगा, खेती में काम करने लिए बैल व मनुष्यों की आवश्यकता हुई। बैल व मनुष्यों को पकड़कर उनसे खेती का काम करवाते थे, कमजोरों को मार दिया जाता था, मांस खाए बिना ही अब उनका काम चल जाता था। अपनी टोली के लोगों में दूसरी टोली से पकड़कर लाए गए जानवरों व स्त्री-पुरुषों का बंटवारा करने के बाद वे उनके मालिक बन जाते थे। उन जानवरों व स्त्री-पुरुषों से काम करवाने के लिए उनके साथ मारपीट की जाती थी। चौपाये जानवरों को जीव व दो पांव के मनुष्यों को गुलाम समझकर उनके खाने-पीने की सुविधा करते थे। उनके मालिकों को अगर कोई जानवर या मनुष्य कामचोर लगता तो उसे ले जाकर बाजार में बेच दिया जाता था।

अरब लोग दास को गुलाम कहते हैं। भट्ट लोग इन्हें शूद्र बोलते हैं। यूनान के लोग स्लेव व अन्य यूरोपीयन लोग अपेक्षाकृत महत्वहीन दासों को सर्वेंट कहते हैं। गुलामों की स्थिति को ही गुलामगिरी कहते हैं। गुलामगिरी, शूद्रगिरी, स्लेव्हगिरी, सेव्हिड्युल और दासत्व आदि शब्दों का अर्थ एक ही है। जानवरों में गुलामगिरी की प्रथा नहीं होती। यह सिर्फ और सिर्फ ज्ञान रूप धारण करने वाले मनुष्य में ही होती है, जो मनुष्य की जन्मजात स्वतंत्रता को छीन लेती है, मनुष्य के प्रेम को चकनाचूर कर देती है व उसे स्वाभिमानशून्य बना देती है। इसलिए यह नीच और अमानवीय होती है, यह दुष्ट मानव की मूर्ख बुद्धि और पिशाच विचारों की निशानी है।

अरस्तु और यूनान के गुलाम

इस प्रथा द्वारा यूनान देश में गुलामों के साथ बहुत ही शर्मनाक व्यवहार होता था। वहां गुलामों को घोड़ों की तरह बाजार में खरीदा और बेचा जाता था। यूनानी लोग शारीरिक श्रम की अपेक्षा अपने दिमाग का प्रयोग करते थे। यह गुलामों से घोड़ों की तरह काम करवाते थे और अपने को कष्ट से बचाते थे। मानव जितना श्रम करता है उसका शरीर उतना ही मजबूत होता है लेकिन उसकी बुद्धि मंद हो जाती है। इसप्रकार यहां के भट्टों की तरह ही यूनानियों के सिद्धांत हैं। इसलिए वे श्रम के सभी काम गुलामों से करवाते हैं और अपनी बुद्धि के प्रयोग से जो समय और मौका मिलता है उसे वे अपने देश की सभ्यता में खर्च करते हैं। इसलिए मनुष्य

के नीतिधर्म, राज्यधर्म संबंधित अनेक शास्त्रग्रंथ लिखे गए हैं। सुंदर कपड़े व इमारतें बनाकर मनुष्य ने सभ्यता के सिद्धांत बनाये हैं। यही काम यूनानियों ने किया और अपने देश के वैभव को शिखर पर पहुंचाया।

हालांकि गुलामों को दिन रात अधमरा होने तक खेती करने के बावजूद पेट भर खाना नहीं मिलता। उनके श्रम का फल यूनानी लोग चखते हैं। इस तरह गुलामों का श्रम यूनानियों के अस्तित्व और सुखमय जीवन का कारण बनता है। इसलिए एक यूनानी विद्वान अरस्तु ने भट्ट भिक्षुओं के मनु की तरह कहा यूनानी लोगों को मानसिक श्रम और गुलाम को शरीरिक श्रम करना चाहिए। गुलाम जनता ही समाज व्यवस्था की रीढ़ की हड्डी होती है। इसलिए गुलामगिरी ही राज्य व्यवस्था का प्रमुख विभाग होता है। यही समझदारी यहां के भट्ट भिक्षुओं की है। वह कहते हैं कि शूद्र द्विजों के ईश्वर रचित दास हैं, और उनका शूद्रत्व समाज की पवित्रता की रक्षा करता है। अस्पृश्य धर्म रचित है जिस तरह वेश्याएं अप्रत्यक्ष तौर पर भद्र स्त्रियों की इज्जत की रक्षा करती हैं, उसी प्रकार अस्पृश्यता द्विज जाति के मंगल की रक्षा के लिए उपयुक्त है। इससे यह सिद्ध होता है कि यूनान देश के यवन व भारत के ईरानी आर्य ब्राह्मण जुड़वां भाई थे।

रोमन लोगों ने जब यूनानियों को जीत लिया तो वहां के गुलामों के बुरे हाल हो गए, उनकी जिजीविषा खत्म हो गई । रोमन लोगों ने यूनानियों को जीत लिया, ये ठीक है। लेकिन अपने देश के भट्ट लोगों के ईरानी पूर्वज ब्राह्मण इंडियन लोगों से अधिक पिछड़े हुए थे, ज्ञानहीन व हीनबुद्धि के हिंसक लोग थे, उसी प्रकार रोमन लोग यूनानियों की तुलना में कम होशियार थे। लेकिन भट्ट भिक्षुओं ने जिस प्रकार इंडियन लोगों की सभ्यता में सेंध लगाकर बलिस्तान पर अपने स्वामित्व की स्थापना की, उसी प्रकार यूनानियों का ज्ञान लेकर, उनकी बस्तियां जीतकर अपने उपनिवेशों की तरह बसाया। यही रोमन लोग अपने देश में आने वाले ईरानी ब्राह्मणों के वंशज है जो इंडियन लोगों को शूद्र, अतिशूद्र, नकटे, काले, चूहे, गुलाम आदि नाम से बुलाते हैं। उसी प्रकार ऑस्ट्रिया, पॉलैंड, जर्मनी, इंग्लैंड जैसे यूरोपीय देशों के निवासियों को स्लेव या स्लेव्ह शब्द का इस्तेमाल करके हीन गुलाम समझते थे। विजितों को गुलाम समझकर उनको अलग-थलग कर, उनके लिए अलग और अपने लिए अलग कानून लागू करते थे। रोमन साम्राज्य के कई शहरों से पशु बाजार की तरह गुलामों की खुली मंडी में खरीदी और बिक्री होती थी जिसे कानूनी मान्यता प्राप्त थी।

रोमन साम्राज्य में गुलामों की स्थिति

रोमन यूनानियों के भाई थे, उन्होंने हजार-डेढ़ हजार साल तक राज किया। उसी बीच इन बुद्धिमान लोगों के साम्राज्य पर गैथन, फ्रेंकेन जैसी जंगली टोली ने बार-बार हमले किये और उन जंगली टोली के नायक आडोकर ने रोमन बादशाह रोम्युलस आगस्टयुलस को भगाया। रोमनों के पास एक और राज्य कान्स्टांटिनोपल था, उसे भी तुर्कों ने मिट्टी में मिला दिया। जंगली प्यूटन यहां के ब्राह्मण लोगों के भाई-बंधु रोम में राज करने लगे। पर वे बहुसंख्यक गुलामों का यहां के भट्ट लोगों की तरह सामना नहीं कर सकते थे इसलिए दंगे करवाके सत्ता हथिया ली। इन प्यूटन लोगों ने विजितों को अपना गुलाम समझकर तरह-तरह के अत्याचार किये।

गुलामगिरी खत्म करने के लिए येशू महात्मा व मुहम्मद पैगंबर ने अपनी जिंदगी दांव पर लगा कर मानव जाति को उसकी जन्मजात स्वतंत्रता, समानता व भाईचारा के गुणों की पहचान करवाई और गुलामगिरी को धिक्कारा। हालांकि उनकी कोशिश बेकार होने के कारण व अलेक्झांड्रिया में रोमन साम्राज्य के कारण अज्ञान की लंबी रात शुरू हो गयी। स्वर्ग, नर्क, देवधर्म, धागे-ताबिज, साधु-संतों ने चमकते चांद पर अमावस्या की तरह घनघोर अंधकार पैदा दिया और पूरे यूरोप की समस्त मानव जाति कुविचार, कुविद्या और कुश्रद्धा से भर गयी थी। उनमें मानव धर्म खत्म हो गया। ब्राह्मण लोगों के आर्य ईरानी पूर्वजों की तरह, जंगली ट्यूटन, ब्रेहन व कुलटिन लोगों के समूहों ने लूटपाट व अत्याचार करके पूरी मानव जाति को डुबो दिया। उसी में ईसाई धर्म के गुरु भी यहां के भट्ट भिक्षुओं की तरह लूटपाट करने लगे। इस परिस्थिति से सभी लोग तंग आ गए थे।

ब्राह्मण धर्म के धर्मगुरु पालकी में बैठकर दिन दहाड़े मशालें जलाकर गांव-गांव घूमकर लोगों से पांव-पूजा करवाते थे और उनसे बेशुमार दक्षिणा लेते थे। उसी प्रकार ईसाई धर्म के धर्म गुरु पोप महाराज अपने शिष्यों को साथ में लेकर गाते-बजाते हुए प्रचार करते कि गुलामगिरी ही धर्मसम्मत है। लोग इस पाशविक गुलामगिरी को दूर करने की विनती करते, तब पोप के मूर्ख शिष्य उपदेश करते थे कि "गुलामगिरी नष्ट करने से प्रभु नाराज हो जाएंगे। अगर अगले जन्म में गुलामगिरी नहीं चाहिए तो पोप गुरु महाराज के हाथ से रोटी का टुकड़ा और ब्रॉन्डी की एक घूंट लेकर पीओ। पापों की क्षमा व स्वर्ग में स्थान लेने के लिए महाराज से सर्टिफिकेट लो। रोटी, ब्रॉन्डी और सर्टिफिकेट्स बेचकर पोप महाराज ने लोगों को लूट कर

बेशुमार संपत्ति हासिल की।" इस तरह की कठिन परिस्थितियों में इरस्मस व आधे महात्मा लूथर ने आगे आकर पोप गुरुओं का ऐसे ही विरोध किया जैसे बुद्ध ने किया था। अंधविश्वास के रास्ते पर चलने वाले मानव समाज को सही मार्ग दिखाने का महान कार्य करके धर्मक्रांति की स्थापना की। लूथर को मैं अर्ध-महात्मा कहता हूं, क्योंकि उसने चेटूक यानी झूठी विद्या पर विश्वास दिलवाकर अपने अनुयायियों से अनेक जुल्मियों का खून करवाया कई जुल्मियों को पकड़कर पेड़ों से बांधकर जिंदा जला दिया।

लूथर ने अपने लुथरवाद को स्थापित करने के लिए बाइबल के वचनों से अपने मतानुसार अर्थ निकाले और उसने पोप महाराज के सौदेबाज लोगों के सामने व्याख्या की और लोगों को जागरूक किया। इसलिए बहुत जगह उसके भाषणों को सुनकर हजारों लोग इकट्ठा होने लगे। उनके इस सिलसिले से प्रोटेस्टेंट पंथ की स्थापना हुई। इस पंथ पर निर्भर होकर रानी ऐलिजाबेथ ने इंग्लैंड की गुलामगिरी खत्म करने की कोशिश की, आगे चलकर कुछ दशकों के बाद अंग्रेजों ने इस गुलामगिरी को कानूनी रूप से बंद कर दिया।

इंग्लैंड यूरोप के पश्चिम में सिलोन की तरह समुद्र में एक टापू की तरह था। प्राचीन काल में यहां के गोरे लोग शरीर पर कोयला रगड़कर काले बन जाते थे और उस पर सफेद चूने से सफेद पट्टियां बनाकर बाघ की तरह डुर-डुर-घुर-घुर की आवाज निकालते हुए एक-दूसरे से बात करते थे। यहां जंगली अवस्था काफी समय तक थी और इसके बाद नार्मन लोगों के राजा ड्यूम विलियम ने इंग्लैंड पर आक्रमण करके अंग्रेजों को हराकर अपना राज स्थापित किया। तब से उनकी सभ्यता का इतिहास शुरू हुआ। इसके इतिहास में दो राजे व दो रानियों का कार्यकाल बहुत समृद्ध रहा। जिससे लोगों को मानवीय अधिकार मिले और गुलामगिरी खत्म हुई।

वास्को-डि-गामा की तरह कोलंबस भी एक समुद्री नाविक था। उसने स्पेन की रानी की थोड़ी सी चापलूसी कर इंडिया के जलमार्ग को खोज करने की अनुमति ले ली, लेकिन गलती से वह अमेरिका पहुंच गया। इसके बाद वह वापिस स्पेन आया, बाद में यहां से अलग-अलग देशों के यूरोपीय लोग अमेरिका गए और वहां के लोगों को दबाकर उनकी जमीन छीनकर अपने उद्योग लगाने लगे। यह बाहरी निवासी यहां के ब्राह्मण लोगों की तरह ही थे। उन्होंने अमेरिका के मूल निवासियों को पकड़कर उनसे जानवरों की तरह कड़ी मेहनत करवाकर अपने सुख व संपत्ति में इजाफा किया। वह उन पर मालिकाना हक जमाकर उनका शोषण करने लगे। लाखों रेड इंडियन उनके उत्पीड़न के शिकार हुए। कितनों की गोली

मारकर हत्या कर दी गई, कितनों को जिंदा जलाकर मार दिया गया। उनके इन क्रूर अत्याचारों से डरकर कितने ही रेड इंडियन लोगों ने आत्महत्या कर ली। आज इन रेड इंडियनों की जनसंख्या बिल्कुल कम रह गई है और कब इसका नामोनिशान खत्म हो जाएगा कहा नहीं जा सकता।

अमेरिकन निग्रो की गुलामगिरी

पिछले दो-तीन सौ साल में गुलामों का व्यापार करने वाले क्रूर व्यापारियों ने अमेरिका के करोड़ों निग्रो लोगों को पकड़कर अमेरिका के गोरे मालिकों को बेच दिया और अरबों रुपए कमाए। आज अमेरिका में निग्रो गुलाम करोड़ों की संख्या में मौजूद हैं जो कुत्तों की तरह जीवन जीते हैं और उनके साथ पशुओं से भी अधिक नीच व्यवहार किया जाता है।

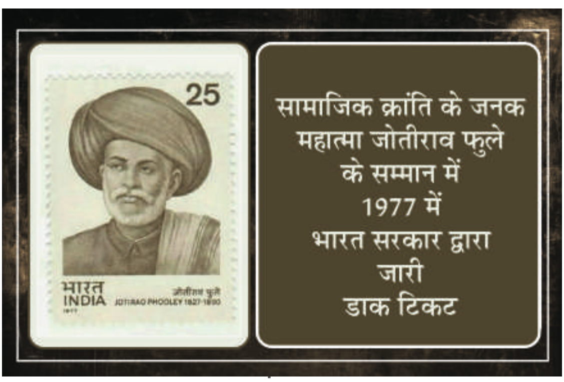
महिला गुलामों की स्थिति बहुत ही खेदजनक है, निग्रो लोग अशिक्षित पिछड़े होने के बावजूद उनके अंदर इंसानियत की सोच-विचार है, परंपरा के मुताबिक महिलाओं को देवी की तरह ही देखा जाता है, महिलाएं सुंदर, कुलीन व इज्जत आबरू वाली होती हैं, गांव में उनका बहुत सम्मान किया जाता है। सांवली, युवा व सुंदर निग्रो युवतियों को पकड़कर अमेरिका के अमीर गोरे मालिकों के हाथों कम दाम में ही बेच दिया जाता था। हाय! हाय!! इन गरीब महिलाओं की दुर्दशा, मैं आपको क्या बताऊं! मुझे तो बताते हुए भी रोना आ रहा है।

गोरा आदमी या कारखाने का मालिक बेशर्मी से महिला गुलामों का यौन शोषण करता है, उसे गर्भवती कर देता है। उससे जो बच्चा होता है उसे वह अपना बच्चा नहीं मानता, उसे नीच समझता है। कई गोरे मालिक गुलाम महिला को हल से बांधकर तब तक कोड़े बरसाते हैं जब तक उसके शरीर से खून की धार न छूटने लगे। फिर बीच में ही उसकी काम वासना जाग जाती है, उसको पेड़ के नीचे ले जाकर उसे नग्न करके, उसे डरा-धमकाकर उसके साथ संभोग करता है। इस प्रकार बोकेशाही काली निग्रो महिलाओं पर गोरे मालिक उसके काले सुंदर गाल पर, स्तनों पर दांतों से काटते हैं, नाखूनों से खरोंचते हैं, स्तनों पर जोरों से वार करते हैं और उसे पकड़कर उसका दम घुटने तक बलात्कार करते लहूलूहान कर देते हैं। इस प्रकार के अघोरी कामसुख लेने के बाद उस महिला से दोबारा खेती का काम करवाते हैं। यह प्रथा

प्राचीन काल के जानवरों में भी नहीं थी अमेरिकी गुलामों के मालिकों को देखकर तो जानवर को शर्म आ जाए!

भाईयों! मेरे भाषण सुनते हुए आप रो रहे हैं? अपने आंसू पोंछ लो, अमेरिका के गुलामों की स्थिति को देखकर आपको इतना दुःख हो रहा है, तो आज तक की अपनी स्थिति समझ नहीं आने के कारण और समझ में आने के बाद आप इसी तरह रोते हुए बैठे रहेंगे, तो आपका यह दर्द दूर नहीं होगा। उसके लिए हम सभी को एक होकर अपने ऊपर लादे गए शूद्रत्व और भट्ट गुलामगिरी को खत्म करना होगा। पुराने समय में जंगली लोगों की गुलामगिरी, मिस्र, बबोलियन लोगों की गुलामगिरी, आर्यन रोमनों की गुलामगिरी और अमेरिकन गोरों व अपने देश की ब्राह्मण गुलामगिरी में कोई अंतर नहीं है, बस जगह, परिस्थिति व समय का फर्क है।

निग्रो गुलामगिरी की तरह हम शूद्र लोग हजारों सालों से गुलामगिरी भोग रहे हैं। निग्रो गुलाम और शूद्र गुलाम दोनों ही दुखी हैं। निग्रो लोगों को अमेरिका में भट्टों के भाई-बंधुओं के हाथों बेचा गया और भट्ट आर्य ईरानियों ने अपने इंडियन पुरखों को धोखे से जीत लिया। इसलिए उनकी संतानों को परंपरा से शूद्रत्व मिला। इस शूद्रत्व को नष्ट करने में अंग्रेजों के राज में हमें एक बहुत ही उत्तम समय में मिला है। इसलिए हमें अपनी गुलामगिरी को नष्ट करने के लिए एक होना पड़ेगा। भट्ट के देव, धर्म व पुराण हमारे दिमाग में अंधविश्वास पैदा करते हैं और गुलामगिरी को पक्का करते हैं। आर्यभट्ट विप्रों ने हमारे बारे में उलट लिखा है कि हम अपने कुकर्मों के कारण अस्पृश्य हैं, लेकिन पुराणों में जो लिखा है, यह सच नहीं है। असल में ईरानी आर्यद्विज ही कुकर्मी और अस्पृश्य हैं। इनकी गुलामगिरी से बचने के लिए एकजुट होकर कंधे से कंधा मिलाओ और अपने पुरखों की जय जयकार करो।



जोतिबा फुले के पत्र

अकाल के विषय में विनती

सन् 1877 में महाराष्ट्र में भयंकर अकाल पड़ा था।महात्मा जोतिबा फुले का यह पत्र पूना व मुंबई शहर के लोगों से अकाल पीड़ितों की मदद करने की भावुक अपील है। यह 24 मई, 1877 ज्ञान प्रकाश में प्रकाशित हुआ। इसकी भाषा व भाव से जोतिबा फुले के करुणामय हृदय व पीड़ितों की मदद की उत्कट भावना का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। सत्यशोधक समाज के कार्यकर्ताओं द्वारा गांवों में अकाल पीड़ितों की मदद करने तथा महाजनों-सेठों द्वारा उनको लूटने का सावित्रीबाई फुले ने अपने पत्र में स्पष्ट तौर पर जिक्र किया है।।

पूना, मुंबई आदि शहरों के मेहरबान सदस्यों से विनम्र विनती।

समाज के आदेश के अनुसार आप लोगों को विनम्रतापूर्वक यह सूचित किया जा रहा है कि समाज के द्वारा 'व्हिक्टोरिया बालाश्रम' की स्थापना की गई है। अकालग्रस्त लोग अपने बाल बच्चों को घरों पर ही छोड़कर जाने लगे हैं और उसी के परिणामस्वरूप उंदापुर, मिरज और तास गाँव की ओर से ब्राह्मणों के अलावा बाकी सभी जातियों के बेसहारा लोग अपने बाल-बच्चों समेत एकत्रित हुए हैं। कभी-कभी दो-दो, तीन-तीन दिन तक भूखा रहना पड़ता है। इस कारण अब उनकी हड्डियों का ढांचा मात्र बचा है। इसके अलावा कपड़े-लत्तों के बिना वे इतने बदहाल हैं कि उनका वर्णन करने में भी मुझे बहुत पीड़ा होती है। इसलिए अपने सभी सदस्यों और अन्य सभी संवेदनशील लोगों से निवेदन है कि अपनी शक्ति के अनुसार कुछ-न-कुछ मदद जल्दी पहुंचायेंगे तो इस समय में अपना फर्ज अदा करने का श्रेय प्राप्त होगा।

तारीख 17 मई, सन् 1877 ई०।

आपका सेवक,

जोतीराव गोविंदराव फुले, सत्यशोधक समाज, सचिव

मराठी ग्रंथकार सभा को पत्र

यह पत्र महात्मा जोतिबा फुले ने न्यायमूर्ति महादेव गोविंद रानाडे के माध्यम से मराठी ग्रंथकार सभा को भेजा था और 11 जून, 1885 में 'ज्ञानोदय' पत्रिका में प्रकाशित हुआ था। लेखकों की समस्याओं को दूर करने के लिए न्यायमूर्ति रानाडे व लोकहितवादी गोपाल हरि देशमुख ने 1875 में मराठी लेखक सभा की स्थापना की। सभा के दूसरे सम्मेलन में शामिल होने के लिए रानाडे ने जोतीबा को निमंत्रण पत्र भेजा। जोतीबा फुले ने सम्मेलन में अपना पत्र पढ़कर सुनाने की विनती की। इस पत्र में जोतिबा फुले की शोषितों के प्रति प्रतिबद्धता व वैचारिक स्पष्टता के दर्शन होते हैं। मानव अधिकारों व सामाजिक भाईचारे की स्थापना के लिए मूलभूत सिद्धांतों, तत्त्वों और विचारों की खोजने की महत्ता पर जोर देते हैं। अंधविश्वासी, रूढ़िवादी, अतार्किक धारणाओं व अमानवीय मूल्यों के पोषक व्यक्तियों और संस्थाओं से दूरी बनाने की बात करते हैं।

दि० 13 को समाचार पत्र के साथ आपका निमंत्रण पत्र प्राप्त हुआ। इसे देखकर बहुत खुशी हुई। किंतु मेरे भोले दादा, जो लोग समस्त मानव समाज के मानव-अधिकारों के संबंध में वास्तविकता के आधार पर सोच-विचार नहीं करते और जिनके जो मानव अधिकार हैं, उनको खुशी और सरेआम लौटा देने की इच्छा नहीं रखते और वर्तमान व्यवहार से अनुमान लगता है कि भविष्य में भी इनकी कोई मंशा नहीं हैं। ऐसे लोगों द्वारा आयोजित सभाओं से और उनके द्वारा लिखी गई पुस्तकों के आशय से हमारी सभाओं और पुस्तकों का कोई मेल नहीं है। क्योंकि उनके पूर्वजों ने बदले की भावना से हमें गुलाम करने के प्रसंग अपने बनावटी धर्मग्रंथों में अप्राकृतिक ढ़ंग से लिखा। इस बारे में उनके प्राचीन खल्लड़ ग्रंथ साक्षी हैं। इसी की वजह से हम शूद्रादि-अतिशूद्रों को कितनी विपत्तियां और पीड़ा झेलनी पड़ी। ये उन लेखकों और बड़ी-बड़ी सभाओं में अतिथि के रूप में जाकर भाषणबाजी करने से किसे समझ में आएगा? ये तमाम बातें सार्वजनिक सभा बनाने वालों को अच्छी तरह मालूम थीं, फिर भी अपने और बाल-बच्चों के तुच्छ स्वार्थ के लिए अपनी आँखों पर परदा डाले हुए हैं। अंग्रेज सरकार से पेंशन मिलते ही वे लोग पुनः अटल जातिअभिमानी, अटल मूर्तिपूजक, अटल शुद्ध बनकर हमारे शूद्रादि-अतिशूद्र को नीच मानने लगते हैं। वे अपनी पेंशनदाता

सरकार के बनाए हुए कागज के नोटिस-पत्र को भी शुद्धपने में उंगली से छूने को भी अपवित्र समझते हैं। क्या आर्य ब्राह्मण इसी तरह इस अभागे देश की उन्नति करेंगे।

खैर अब आगे हम शूद्र लोग, फुसलाकर लूट खानेवाले लोगों की बातों में आनेवाले नहीं। सारांश, उनके साथ मिल जाने से हम शूद्रादि अतिशूद्रों का कोई भी फायदा नहीं है। हमें खुद गंभीर रूप से सोच-विचार करना पड़ेगा। उन लोगों को यदि सभी लोगों की एकता करनी हो तो समस्त मानव प्राणियों में परस्पर अक्षय भाईचारे के बीज खोजें और उनको पुस्तक रूप में प्रकाशित करें। इस स्थिति में आँखें बंद करना उचित नहीं है। इसके बाद आप सबकी मर्जी।

यह मेरा अभिप्राय के रूप में लिखा छोटा-सा पत्र सभा के लोगों को विचार के लिए भेजने की मेहरबानी करें। सीधे-सादे बूढ़े का यह पहला सलाम लीजिए।

आपका दोस्त

जोतीराव गोविंदराव फुले



जोतिबा फुले व उनके बेटे यशवंत राव

मामा परमानंद को पत्र

जोतिबा फुले ने यह पत्र जून 1886 को अपने सहयोगी मामा परमानंद को उनके पत्र के जबाव में लिखा था। इस पत्र में इतिहास लेखन के स्रोतों, पूर्वाग्रहों तथा वर्गीय स्वार्थों की ओर संकेत मिलता है। समाज में अपने वर्गीय हित व स्वार्थ सिद्धि के लिए साहित्य निर्माण की ओर ध्यान आकृष्ट किया है। इसका भी पता चलता है कि जोतिबा फुले जो भी कहते अथवा लिखते थे पहले तत्संबंधी तथ्यों की भलि-भांति जांच-पड़ताल करते थे। साहित्य के माध्यम से जोतिबा फुले शोषित-वंचित वर्गों का पक्ष निर्माण कर रहे थे, यद्यपि समाज के इन वर्गों में डर के कारण उनको वांछित सहयोग नहीं मिलता था।

मुकाम-पूना
ता० 2, माह जून, 1886 ई.

माननीय नारायणराव माधवराव परमानंद,
मुकाम - आंबेर

साष्टांग नमस्कार।

ता० 30 तारीख को आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। इसी तरह पूना के एक हाईस्कूल के अध्यापक भागवत ने शंकर तुकाराम द्वारा प्रकाशित पँवाड़ों की पुस्तक से कुछ गायकों की रचनाएँ मुझे लाकर दी हैं। उनको देखकर मैंने उससे एक बार कह दिया था कि इन पँवाड़ों की पुस्तक मेरे पास नहीं है और उसे देखे बिना इस विषय में कुछ भी कहना मेरे लिए असंभव है। उसके बाद उसने मुझे वह पुस्तक लाकर देने का वादा किया था, लेकिन उसने जो वादा

किया था, पँवाड़ों की पुस्तक लाकर नहीं दी। इस कारण उसके विषय में मैं आपको कुछ भी लिखकर नहीं भेज सका।

हरामखोर गोपीनाथपंत की मदद से शिवाजी ने धोखे से अफजल खान की हत्या की? तान्हाजी मालुसरे ने गोरपड़े की मदद से सिंहगढ़ किले पर कब्जा कर लिया था और शिवाजी ने पूना में डाका डालकर मुसलमानों को मार दिया था - इन सभी अर्धसत्यों के सही पँवाड़े अभी तक मैंने सुने नहीं हैं। आज तक युरोपियन लोगों ने जो इतिहास लिखा है, वह शूद्रों-अतिशूद्रों की वास्तविक स्थिति को प्रस्तुत नहीं करता। आर्य भट्ट-ब्राह्मणों के ग्रंथों के आधार पर और ब्राह्मण-कर्मचारियों के कहे हुए पर भरोसा करके लिखा गया है। आजकल ब्राह्मण-पंडितों के विद्वान लड़के नये पँवाड़े लिख रहे हैं और गा भी रहे हैं। उनमें से कई लोगों को मैंने देखा है कि वे शूद्रों द्वारा कमाए हुए मोतियों के दाने चुगनेवाले भागवती, गौब्राह्मण और दादोजी कोंडदेव जैसे लोगों को बेमतलब अतिथि बनाया गया, इसलिए मैंने उस तरह के बनावटी पँवाड़ों का संग्रह करना उचित नहीं समझा।

आठ साल पहले जब मैं आपसे मिलने के लिए बंबई में आपके घर पर आया था, उस समय पांचगणी के पाटिल रामपा के सामने मैंने आपसे शूद्र किसानों की दयनीय स्थिति के बारे में कुछ बातें दुनिया के सामने रखने का वादा किया था। वह वादा मैंने निभाया और तीन साल पहले एक किताब 'कोड़ा' (असूड़) नाम से पुस्तक लिखी और उस पुस्तक की एक-एक प्रति कलकत्ता के आपके बहुगुणी और अष्टपहलू गवर्नर जनरल साहब और श्रीमंत महाराज बड़ौदा की गायकवाड़ सरकार को भेज दिया था। हमारे कमजोर शूद्रों ने, जो छपाई का काम करते हैं, डर के मारे उस पुस्तक को छापना बंद कर दिया है। यदि आपको ‘कोड़ा’ की प्रति देखने की इच्छा हो तो लिखना। उसकी नकल उतारने के लिए किसी को कह दूंगा। नकल उतारने में एक-दो महीने लग सकते हैं, ऐसा मुझे लगता है। शुभकामनाएं।

आपका

जोतीराव गोविंदराव फुले



फुले जी द्वारा बताया गया सत्य मनुष्य के हज़ार वर्ष के परिश्रम से अर्जित संस्कृति एवं ज्ञान का सार है। "

-लक्ष्मणशास्त्री जोशी

शराबखानों की वृद्धि के खिलाफ पत्र

यह पत्र जोतिबा फुले ने दि० 18 जुलाई, 1880 को पूना नगरपालिका के कार्यकारी मंडल के अध्यक्ष प्लंकेट साहब को लिखा था। कर के माध्यम से सरकार की आय में बढ़ोतरी हो इसके लिए पूना में शराब के ठेके बढ़ाने के प्रस्ताव के विरोध करने के लिए यह पत्र लिखा था। उस समय जोतिबा फुले नगरपालिका के सदस्य के तौर पर नामित थे। नशा मनुष्य के नैतिक आचरण व स्वास्थ्य को किस तरह तबाह करता है और इससे परिवार व समाज को भारी नुक्सान होता है। नशे की प्रवृत्ति से शोषित-वंचित समाज किस तरह गुलामी के आनंद लोक का हिस्सा बन जाता है सावित्रीबाई फुले ने भी अपने भाषण में इसकी स्पष्ट व्याख्या की है। इससे निश्चित तौर पर कहा जा सकता है कि नशा-मुक्त समाज निर्माण फुले दंपति और सत्यशोधक समाज के कार्यों का केंद्रीय विषय रहा है।

"नगरपालिका ने काफी पैसा खर्च करके लोगों के स्वास्थ्य की रक्षा के लिए बहुत बड़ी संख्या में कर्मचारियों की नियुक्तियां की हैं। लोगों के स्वास्थ्य की रक्षा की दृष्टि से उस तरह का एक स्वतंत्र विभाग भी चल रहा है। फिर भी जिस पूना शहर का शराबखानों से परिचय नहीं था वहीं अब बस्तियों में शराबखाने खुल गए हैं और लोगों के अधोपतन के बीज बोए जा रहे हैं। नगरपालिका का एक उद्देश्य शहर के स्वास्थ्य की रक्षा करना है। यह सब उसके विपरीत में हो रहा है।

"शराब का व्यसन नागरिकों के नैतिक आचरण में बाधक है। इतना ही नहीं, उनके स्वास्थ्य के लिए भी अतिशय हानिकारक है। मेरा यह मानना है कि बहुत से लोग मेरी बात को अपनी इच्छा से मानते हैं। जब से शहर की बस्तियों में शराबखाने खुले हैं, तब से दारूबाजी इतनी अधिक बढ़ गई है कि उससे अनेक परिवारों का पूरी तरह नाश हो गया है। और यह दुर्गुण शहर में सरेआम हो गया है।

"इस व्यसन के प्रसार से किसी हद तक रोक लगे इसलिए मैं नगरपालिका को ऐसा सुझाव देना चाहता हूँ कि नगरपालिका को इन शराबखानों पर उस मात्रा में कर लगाना

चाहिए जिस मात्रा में ये नुकसान करते हैं। मुझे ऐसा लगता है कि किसी भी नगरपालिका ने ऐसे शराबखानों पर अधिक कर नहीं लगाया उन पर मात्र केन्द्रीय सरकार का कर होता है। इस संबंध में आवश्यकता हो तो नगरपालिका को जानकारी हासिल करनी चाहिए। मेरा यह प्रस्ताव नगरपालिका की आमसभा के समक्ष रखा जाए। मैं आपका बड़ा आभारी रहूँगा।"

(धनंजय कीर - महात्मा जोतीराव फुले, मुंबई, 1968, पृ०185-186)

सगुणाबाई
फुले दंपति की प्रेरणा स्रोत



सावित्रीबाई फुले और जोतिबा फुले के जीवन को जिस व्यक्तित्व ने प्रभावित किया उसका नाम है सगुणाबाई। जोतिबा फुले ने सगुणा बाई को अपनी निर्मिकाचा शोध पुस्तक समर्पित की। इस समर्पण में उन्होंने लिखा है कि

"सत्यस्वरूप सगुणाबाई क्षीरसागर को, आपने मेरी केवल परवरिश ही नहीं की अपितु मुझे इंसान भी बनाया। मैंने आप ही से यह सीखा कि दूसरों के बच्चों पर किस तरह प्रेम करें। इसलिए कृतज्ञता के साथ प्रस्तुत पुस्तिका रचियता की ओर से आपको नजराना।"

यह जिज्ञासा होना स्वाभाविक है कि सगुणाबाई कौन थी ? सगुणाबाई, जोतिबा फुले की मौसेरी बहन थी। सगुणाबाई के पति का देहावसान हो गया। अपने मायके में भी कोई सहारा नहीं था। उसने जॉन नामक ईसाई मिशनरी के घर सेविका का काम किया।

जोतिबा उस समय केवल नौ महीने के थे, जब मां चिमा बाई की मृत्यु हुई। सगुणाबाई ने जोतिबा का पालन-पोषण का जिम्मा लिया और बहुत लाड़-प्यार से लालन-पालन किया। सावित्रीबाई फुले और जोतिबा फुले इनको आऊ कहकर बुलाते थे। सावित्री बाई फुले ने उनपर एक कविता लिखी 'हमारी आऊ'।

ज्ञानोबा कृष्णाजी ससाणे को पांच पत्र

महात्मा जोतिबा फुले व सावित्रीबाई फुले की अपनी संतान नहीं थी। उन्होंने अपने प्रसुति गृह में पैदा हुए बच्चे को गोद लिया और उसका पालन-पोषण किया। यशवंत राव को उन्होंने शिक्षित किया जो डॉक्टर बना। उस समय समाज में जातिवाद था जिस कारण यशवंत राव के विवाह में बड़ी कठिनाई आ रही थी। जोतिबा फुले ने अपने मित्र व सत्यशोधक समाज के कार्यकर्त्ता की बेटी लक्ष्मी के साथ यशवंत का विवाह करने की योजना बनाई। लक्ष्मी को अपने घर में रखकर उसकी शिक्षा का इंतजाम किया। इस दौरान अनेक पारिवारिक व सामाजिक दिक्कतों का सामना किया, जिनकी ओर इन पत्रों में संकेत है। इन पत्रों से जोतिबा के हृदय के अछूते पहलुओं का हमें पता चलता है। गौर करने की बात है कि जोतिबा फुले अपने पत्रों की शुरुआत 'सत्यमेव जयते' से करते हैं। सत्य की जीत के प्रति यह उनकी अटूट आस्था ही है।

पत्र : 1

॥ सत्यमेव जयते ॥

दिनांक : 13-9-1888

मा० ग्यानोबा कृष्णाजी ससाणे,

एक धर्मपुस्तक और व्याकरण सिर्फ दो पुस्तकें रख ली हैं। बाकी की सभी पुस्तकें और स्लेट वापस भेज दी हैं। उनका कोई उपयोग नहीं। चि० लक्ष्मी चौथी कक्षा में सरकारी स्कूल में जा रही है। उसके लिए आवश्यक सभी पुस्तकें यहाँ खरीद ली हैं। कृपा करके बच्ची के जन्म की तारीख लिख करके भेज दीजिए। क्योंकि सरकारी स्कूल के अध्यापक को उसकी जरूरत है।

बच्ची की पढ़ाई बढ़िया चल रही है। लेकिन उधर से आए हुए लोगों को देखने के बाद उसकी पढ़ाई में नुकसान होता है। इसलिए उसको अच्छी तरह लिखने की आदत पड़ जाती तब तक उधर से (हड़पसर से) अज्ञानी अनावश्यक लोगों को यदि नहीं भेजेंगे तो आपकी बड़ी मेहरबानी होगी। आदि सत्यमहाराज।

तात्या साहब के लिए गो० ग० काले,
सत्यशोधक समाज का कारकून

पत्र : II

|| सत्यमेव जयते ||

दिनांक : 24 सितम्बर, 1888

चि० सत्यरूप ग्यानोबा कृष्णाजी ससाणे,

बहुत-बहुत आशीर्वाद.... घरवाली ने घर का सारा काम सँभालते हुए लक्ष्मी को खुली छूट दी है, इसलिए उसकी पढ़ाई अच्छी तरह होगी, ऐसे लक्षण दिखाई देते हैं। इसलिए मैं निर्भीक के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। सब कुशल। आदि सत्यमहाराज।

आपका
जोतीराव गोविंदराव फुले

पत्र : III

|| सत्यमेव जयते ||

चि० सत्यमृति ग्यानोवा कृष्णाजी ससाणे, हड़पसर।

अनेक आशीर्वाद। दि० 30 सितम्बर को चि० काशीबाई उर्फ लक्ष्मी-बाई पूना में हमारे घर बच्ची को देखने के लिए आई थीं। उस समय उन्होंने चि० राधा उर्फ लक्ष्मीबाई की अच्छे से कान खिंचाई की, इससे हम सभी को बड़ी संतुष्टि हुई। हमने लक्ष्मीबाई को दूसरे

दिन हड़पसर भेजना निश्चित किया था, लेकिन पत्नी ने उसे रुकने का बहुत आग्रह किया। इसलिए हम सबको क्षमा कीजिए। सब कुशल। आदि सत्य महाराज।

दि० 2 अक्तूबर, 1888

आपका

जो० गो० फुले, वि० गो० ग० का० कारकून

पत्र : IV

॥ सत्यमेव जयते ॥

दिनांक : 18 अक्तूबर, 1888

चि० स्थानोबा कृष्णाजी ससाणे, मुकाम हड़पसर,

बहुत-बहुत आशीर्वाद। हम दोनों ने ऐसा तय किया था कि चि० लक्ष्मीबाई को हाईस्कूल भेजना चाहिए। चि० लक्ष्मीबाई अभी जिस स्कूल में है, उस स्कूल में पढ़ाई की सुविधा नहीं है, ऐसा मुझे लगता है। अब बच्ची को हाई स्कूल भेजा जाए तो दीवाली नजदीक है। इस समय बच्ची को हाई स्कूल भेजा जाए तो चि० काशीबाई को बच्ची के बिना त्यौहार में अच्छा नहीं लगेगा। इसलिए चि० लक्ष्मीबाई को तुम्हारे घर चि० सादुजी गंगाजी वाघुलू के साथ कुछ गहने लेकर दीवाली मनाने के लिए भेज देता हूँ... चि० काशीबाई को बच्ची की पढ़ाई के बारे में यदि खुशी नहीं है तो उसका हमें बड़ा दुख है। मर्जी देव की। आदि सत्य महाराज।

तात्या साहब के आदेश से,

गो० ग० काले, सत्यशोधक समाज का कारकून

पत्र : V

।। सत्यमेव जयते ।।

दिनांक : 21 दिसंबर, 1888

चि० ग्यानोबा कृष्णाजी ससाणे, मुकाम हडपसर,

बहुत-बहुत आशीर्वाद। अपने दीन-अज्ञानी बंधुओं के लिए एक 'सार्वजनिक सत्य धर्म पुस्तक' तैयार करने के काम में व्यस्त था, इसलिए मैं तुम्हें एक पत्र लिखने की भी फुरसत नहीं मिली। खैर, अपनी बहू बड़ी बुद्धिमान है बहुत अच्छी है और सब को चाहती है। इसलिए इसमें जो गुण हैं उनका परिणाम अच्छा होगा।

तुम्हारी दादी कै० राहीबाई मतलब मेरी मौसी का अपने से छोटे-बड़ों को 'जी' कहने का ऐसा स्वभाव था। उसकी याद आते ही मन में खुशी होती है। उसी प्रकार तुम्हारे ससाणे खानदान के लिए वह बहुत शान की बात थी। लेकिन चि० बहू यहाँ आई तब से आज तक कितनी बार पुचकारकर सबको 'जी' बोलने के लिए समझाया, कई बार मिठाई दी, फिर भी उसको 'जी' बोलने में शर्म आती है... उसने आज तक जो पढ़ाई की है आप स्वयं उस बारे में उससे पूछते रहो। और उसको खेलने की छूट दे सको तो बहुत ही अच्छा होगा।

कल सुबह मेरी तबियत खराब हुई थी, उस समय चि० बहू ने बड़ी हिम्मत से कान की बाली की तरह मेरी देखभाल की और बड़ी श्रद्धा से मेरे ठीक होने तक पास बैठी रही, और घर की सफाई की।

आपका

जोतीराव गोविंदराव फुले

सावित्रीबाई फुले के भाषण

उद्योग

उद्योग का अर्थ है, हमेशा मेहनत करने का यत्न करना। इसके अंतर्गत विद्या प्राप्त करना, फसल उगाना, व्यापार-धंधा करना जिससे अपनी जीविका चले और दूसरों की जीविका में सहायक हो। समस्त मनुष्यों के सुख के लिए उद्योग-धंधे इसमें आते हैं जिनसे मनुष्य को मानसिक संतुष्टि मिलती है। पैसा मनुष्य के सुख में वृद्धि करने का एक प्रमुख साधन है और उसकी जरूरत सभी मनुष्यों को पड़ती है। सभी जानते हैं कि इसके लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है। आलसी मनुष्य ही सोच सकता है कि "खाट पर पड़े-पड़े ही ईश्वर दे दे" या ''पेड़ के नीचे लेटे हुए के हाथों के निकट पड़े हुए जामुन उठाकर कोई मुंह में डाल दे"। दिन भर अनथक मेहनत करना मनुष्य का परमधर्म है और वही मनुष्य का सच्चा हितैषी मित्र है। सब इस बात की गांठ बांध लो कि दुनिया में इसके सिवाय हमारा कल्याण करने वाला कोई मित्र नहीं है।

यह मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकती हूं कि यही मित्र हमारी जीविका कमाने और हमारे सुखों की बढ़ौतरी करने के लिए उस पर यकीन करें तो यह हमेशा हमारे लिए उपयोगी है। बहुत लोग ऐसा समझते हैं कि भगवान एक काल्पनिक सहायता करता है। परंतु यह सहायताकर्ता सत्य नहीं है, यह विश्वसनीय नहीं है, वह मनुष्यों और मेहनत में भेदभाव करके उनमें शत्रुता पैदा करता है। मनुष्यों को आलसी बनाता है। खुद के अच्छे-बुरे कार्यों से मनुष्य की परिस्थितियां बनती हैं उसी से सुख-दुख प्राप्त होते हैं।

इस भाग्य की कल्पना के अनुसार महार, मांग, कुणबी, मराठा इन सभी जातियों के लोग निम्न ठहराए गए, हजारों वर्षों से ये निम्न ही रहे। ज्ञानवान और धनवान लोगों के भगवान को वे सुखी नहीं कर सकते, लोगों के पूर्व संचित कर्मों में हस्तक्षेप भी नहीं कर सकते। उसे दुखी के जीवन में हस्तक्षेप करने में दिक्कत होती है, इस कारण शूद्र-अतिशूद्र लोगों द्वारा पूर्वसंचित कर्मों का फल समझकर पशुओं से भी बदतर जीवन जीते हैं संसार में वे इसीलिए

आए हैं ऐसा मानकर वे जी रहे हैं। वे भूल गए हैं कि वे भी इंसान हैं इसलिए पशुओं की तरह गुलामी करते हुए मेहनत करते हैं।

उनके परिश्रम में ज्ञान नहीं है, पशुओं की तरह मेहनत है, इसलिए वह उनके सिर्फ जिंदा रहने में सहायक है। अतः उद्योग दो तरह के होते हैं। एक सोच-विचार से किया हुआ उद्योग और दूसरा बिना सोचे-विचारे किया गया उद्योग। अध्ययन करना भी एक उद्योग है। इसमें आंख, कान और बुद्धि इन इन्द्रियों की जरूरत पड़ती है। "माई इस गरीब को टुकड़ा दे दे" ऐसे चिल्लाकर भीख मांगना भी एक उद्योग है परंतु यह विचारहीन उद्योग माना गया है। हाथ-पैर से किए जाने वाले उद्योग में बुद्धि की मदद की जरूरत होती है। मनुष्य मानसिक और शारीरिक श्रम से उत्तम परिणाम प्राप्त करना चाहता है, यह विचार करते हुए बुद्धि थककर फिरकी की तरह घूमने लगती है। यूरोप के लोगों ने उद्योग करके घड़ियां, दूरबीन, स्टीमर, भाप चालित रेलगाड़ी, कारखाने चारों तरफ उद्योग शुरु किए। उनके ये उद्योग उनकी अद्भुत बौद्धिक शक्ति का नतीजा हैं। इनका उपयोग इंसानियत बढ़ाने की दिशा में हो परम्परागत रूप से अज्ञान के अंधेरे में भटकने वाले शूद्रों-अतिशूद्रों को उद्योगों में प्रवृत्त करने से होगा, इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं होना चाहिए।

यूरोपियन लोग देवताओं पर विश्वास रखने वाले होते तो वे इस तरह के अद्भुत कार्य न कर पाते। उनके उद्योगों में समय का बड़ा महत्व है, वे कोई भी काम फटाफट करते हैं, अपने जीवन के एक-एक पल का हिसाब रखते हैं, अंग्रेज लोग भी पहले जंगली ही थे, परंतु रोमनों की संगति से वे उद्योगी बने। इससे उनका देश उद्योगों का भंडार बन गया, उन लोगों के प्रगति के कदम आगे ही आगे बढ़ते गए, वे विद्या, कला और उद्योग-धंधों में अग्रणी हो गए। हमारे देश में थोड़े-से अंग्रेज व्यापार करने के लिए आए थे और उन्होंने एक बड़े भारी राज की स्थापना कर ली। यह उनके दृढ़ उद्योगी होने और बौद्धिक शक्ति का चमत्कार है। इसका भाग्य से कोई संबंध नहीं है। दैव और नियति पर विश्वास रखनेवाले लोग आलसी और भिखारी होते हैं और उनका देश हमेशा दूसरों की गुलामी में ही रहता है, इसका स्पष्ट उदाहरण तो हमारा हिंदुस्तान ही है।

यूरोपियन लोग कहते हैं कि दो हजार वर्ष पहले इस देश ने बहुत प्रगति की थी, यहां के लोग उद्यमी और ज्ञानी थे। परंतु ईरानी, हूण, तातार लोगों जिनके नाम ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य थे और उन्होंने ही यहां की प्रगति का विनाश किया। यहां के लोगों को शूद्र, अतिशूद्र बनाया। उनको देवी-देवताओं के झमेले में फंसा दिया और भाग्य के भरोसे रहना सिखाया।

इन द्विजों के आने से यहां के लोगों का अधोपतन हुआ। वे पशुतुल्य बन गए। लेकिन अंग्रेजों के आगमन से यहां के शूद्रों-अतिशूद्रों में धीरे-धीरे शिक्षा का चसक लगी। इस कारण धीरे-धीरे उनके कदम उद्योगों की ओर उठे। इससे हम सारे शूद्र अतिशूद्र लोग पशु-जीवन से सच्चे इंसानी जीवन की तरफ बढ़ते जा रहे हैं, हम ऐसा अनुमान लगा सकते हैं। उद्योग ज्ञानस्वरूप है और आलस्य भाग्य का साथी है। उद्योगी मनुष्य अपना सुख बढ़ाते हुए दूसरों को सुखी करने का प्रयत्न करता है। इसके विपरीत आलसी मनुष्य सदा दुखी रहता है और लोगों के सुखों को नष्ट करने के कार्य करता है। आलस दरिद्रता का लक्षण है। ज्ञान, धन और सम्मान का शत्रु है, आलसी मनुष्य को ये तीनों कभी हासिल नहीं होते। इस प्रकार इतनी हानि होती है, उनसे मानवता भी दूर हो जाती है। इस तरह आलस का अवगुण मनुष्य की बुरी स्थिति बना देता है। इसलिए उद्योग करते रहना ही मनुष्य का प्राथमिक काम है। मैं निश्चयपूर्वक कह सकती हूं कि वह उसी से सुखी हो सकता है। यह अच्छी बात है कि अंग्रेज सरकार शूद्रों और अतिशूद्रों को ज्ञान देकर उद्योगी बनाने का प्रयास कर रही है, इसके लिए हमें सरकार का आभार मानना चाहिए। सरकार को क्या करना चाहिए, इसका मैंने सरकार को प्रस्ताव दिया है।



विद्यादान

बहुत से लोगों में दया, उदारता, परोपकार आदि सदगुण होते हैं समझबूझ और दूरदृष्टि से उनका सदुपयोग नहीं होता तो उनके विपरीत परिणाम दिखाई देते हैं। गुनाहगारों के प्रति दया दिखाना गुनाहगारों के दुष्ट कार्यों में भाग लेने जैसा होगा। दान देना अच्छा है, यह दिखाने के लिए कि हम बड़े दानवीर हैं। देखना चाहिए कि सही व्यक्ति है कि नहीं। ऐसा ना होने से दान लेने वाले को कहीं मुफ्तखोर बनाने का काम तो नहीं कर रहे। धन-दान की तरह ही अन्न-दान करने से दुगुणों को बढ़ाने से उसके भयंकर परिणाम समाज को भुगतने पड़ेंगे। दया, दानधर्म आदि के संबंध में मनुष्य की प्रवृत्ति का उद्देश्य दूसरों के दुख बांटना, संकट या विपत्ति में मदद करना होना चाहिए। उसी से परोपकारी मनुष्य अन्य लोगों की मदद करता है। परंतु दुख, संकट, विपत्ति आते ही हैं आलसी, नशेड़ी और मूर्ख मनुष्यों पर। उन पर आई विपत्ति की वजह उनके ही अवगुण होते हैं। यह उनके लिए एक शिक्षा होती है ये उस दुर्गुणी मनुष्य के दुर्गुणों को नष्ट करने में उपयोगी होती हैं, ऐसा हम अनुभव करते हैं। सरकार गुनाहगार को कठोर दण्ड देकर नसीहत देती है। गुनाहगार इस भय से चोरी, जबर्दस्ती करने आदि गुनाह करने में हिचकते हैं और उनसे दूर रहते हैं। उसी तरह दरिद्रता, दुख, कष्ट आदि की नसीहत के भय से मनुष्य में सुधार होने से आलस, अविचार, फिजूलखर्ची आदि दुर्व्यसनों से मनुष्य दूर होगा और वह परिश्रमी बनेगा। दूसरों पर निर्भर नहीं रहेगा। इनको दया, दान धर्म करने का जिन्हें शौक है ऐसे लोगों को विचार करना चाहिए कि उनके किए का क्या परिणाम होगा। सत्कृत्यों से ही समाज पर बुरा परिणाम न पड़ने की संभावना है।

आदमी के सुधर जाने पर उसे दूसरों से मदद लेने में भी लज्जा आती है। उस पर कभी संकट पड़े और मजबूरन दूसरों की मदद से अपना निर्वाह करना पड़ जाए तो भी उसे यह चिंता रहती है कि मैं खुद पर आए संकट को अपने उद्योग और श्रम से निवारण करने में कैसे समर्थ होऊंगा। धर्म कार्यों में दानी को पैसा देना अच्छा लगता है, परंतु उसे लेने वाले को अच्छा ना लगे ऐसी समझ आ जाए तो दान, धर्म, दया, उपकार आदि गुणों का समाज पर दुष्प्रभाव नहीं बल्कि कल्याणकारी प्रभाव पड़ेगा।

आलस्य, परनिर्भरता आदि दुर्गुण ना बढ़ें और मनुष्य के व्यक्तित्व में सद्गुण बढ़ाने में कारगर कोई धर्म है, तो वह विद्यादान है। इस धर्म से विद्या देने वाला और विद्या ग्रहण करनेवाला दोनों ही इससे खरे मनुष्य बनते हैं। इस धर्म की शक्ति से मनुष्य का पशुत्व लुप्त हो जाता है। विद्या देनेवाला धैर्यवान, निर्भय बनता है और विद्या लेनेवाला सामर्थ्यवान और समझदार बनता है। अंग्रेज विद्वान विद्यादान करके लोगों को समझदार बनाते हैं। ये सच्चे विद्वान हैं। पर हमारे विद्वान लोगों को अशिक्षित रखने में माहिर हैं। वे पक्के मूर्ख हैं। ईरानी लोग हिंदुस्तान में घुसे और हिंदुस्तान को अपने बाप की जायदाद मानने लगे। हूण आए तो ईरानियों ने उनसे कहा- "यह देश तुम्हारा नहीं है"। परंतु हूण घुस आए और वे अपने बाप की जायदाद मानकर रहने लगे। हिंदुस्तान मुगलों के बाप का था या नहीं कौन जानता? जहां उन्होंने अपने पांव रखे उनका हो गया । इतिहास ऐसा है कि हिंदुस्तान इण्डियन लोगों का है, उन पर विदेशियों ने राज किया। उसका कारण उनकी अज्ञानता थी। दो हजार वर्षों तक इण्डियन अज्ञानता में रहे और पशुओं की तरह जीवन जीते रहे, यह महान आश्चर्य नहीं है। यह भट्ट-भिक्षुकों का षड़यंत्र था। यह अपने अंग्रेजी ज्ञान से मालूम हुआ। विद्यादान करने और विद्या प्राप्त करने में लोगों की मदद करने से उनकी इच्छा बढ़ी इसके बाद ही हमारी प्रगति का मार्ग खुलेगा। इससे ही समाज का हित होगा और हरेक के जीवन में सुख बढ़ेगा।

अंग्रेज सरकार ने ज्ञानदान के लिए पाठशालाएं खोली, परंतु ये थोड़ी सी थी, ऐसी मेरी पक्की समझ है कि यदि ये थोड़ी ही रहें तो सारे हिंदुस्तान को शिक्षित होने में डेढ़ सौ वर्ष और लगेंगे। इसके बावजूद मैं कहती हूं कि सरकार को शिक्षा के प्रसार को गति प्रदान करनी चाहिए, जब तक सभी लोग को शिक्षित न हो जाएं उनको यहां से नहीं जाना चाहिए। महार, मांग आदि शूद्र-अतिशूद्र हर गांव में बारह बलुते (हिस्सेदार) और बारह आलुते (लेनदार) और चरवाहे, माली, किसान आदि लोग रहते हैं। इनके पास ज्ञान, कला, चिवटपणा आदि गुण हैं, परंतु इनका आज तक सरकार ने उपयोग नहीं किया। राजाओं ने उनके गुणों की खिल्ली उड़ाकर और अनदेखी करके राज किया। निस्संदेह शूद्रों-अतिशूद्रों के पास अनेक गुण हैं लेकिन अज्ञानता के कारण वे यह नहीं जानते कि अपनी बुद्धि और कौशल का उपयोग कैसे और कहां करें। पता चले कि अपने देश में हम क्या पैदा करें जिसका लोग उपयोग कर सकें। लोगों को कौन सी चीज की जरूरत है जिससे उनका और देश का भला होगा। यह उन्हें सूझता नहीं और सरकार भी उन्हें शिक्षित नहीं करती। यही कारण है कि इन शूद्र-अतिशूद्र जातियों के लोग मूर्ख स्वभाव के हैं। उनको कोई मार्ग दिखानेवाला नहीं होता है, वे अपनी बुद्धि से या साहस से

कोई भी उद्योग करने की हिम्मत नहीं जुटा पाते।उनका स्वभाव ही मिलनसार नहीं, कटु बन गया है। अपना जीवन कैसे सुधारें यह भी नहीं सूझता और ऐसे अज्ञानी कभी आधा पेट और कभी-कभी भूखे ही रह जाते हैं। ऐसे लोगों को अपनी जीविका के लिए दयालु सरकार को मार्ग दिखाना चाहिए या गांवों के धनिक उद्योग-धंधे स्थापित करें तो गांव के मजदूरों के अपने गुणों का धनिकों के लिए कैसे उपयोग होगा, ऐसा व्यवहार रखना चाहिए। आज अगर वे ऐसा व्यवहार नहीं करेंगे तो उस परिस्थिति का दोष माथे लगेगा यह बताने की जरूरत नहीं है।

टॉमस पेन



थामस पेन की 'राइट ऑफ मैन' पुस्तक के अध्ययन ने फुले दम्पति की शूद्रों की स्थिति और आम लोगों के अधिकारों को समझकर उन्हें प्राप्त करने के संघर्ष की दिशा तय करने में बहुत मदद की।

भारतीय समाज में शूद्रों और स्त्रियों की तुलना अमेरिका के नीग्रो दासता से करते हुए यहां की गुलामी को नीग्रो की गुलामी से अधिक क्रूर, बर्बर और अमानुषिक ठहराया। नीग्रो गुलामी का आधार धर्मग्रंथ नहीं थे, जबकि यहां धर्मशास्त्र के माध्यम से गुलामी को वैधता दी गई थी। धर्म से जोड़कर दासता को शारीरिक गुलामी से मानसिक गुलामी तक पहुंचाया था। मानसिक दासता ने समाज के शोषित-पीड़ित वर्ग से स्वाभिमान और आत्मविश्वास की भावना को ही समाप्त कर दिया था। इसी के चलते स्त्री और शूद्र का आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक शोषण करने में सफल हुए।

जोतीराव ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'गुलामगिरी' अमेरिका के मुक्तिकामी संघर्ष के योद्धाओं को समर्पित किया कि यूनाइटेड स्टेट्स के सदाचारी जनों ने गुलामों को दासता से मुक्त करने के कार्य में जो उदारता, निष्पक्षता उवं परोपकार वृत्ति दिखलाई उस हेतु उनके सम्मानार्थ यह छोटी सी पुस्तक मैं उन्हें प्रीतिपूर्वक भेंट करता हूं एवं आशा करता हूं कि मेरे देशवासी बन्धु अपने भाई-बन्धुओं को ब्राह्मणों की गुलामी से मुक्त करने हेतु उस प्रशंसनीय कार्य का अनुकरण करेंगे।

सदाचार

सदाचार व्रत मनुष्य के लिए अत्यधिक सुख प्राप्ति करने का साधन है। इस व्रत से सारे सांसारिक दुखों का नाश होता है। कुछ लोग सोचते हैं कि इस व्रत के लिए काफी पैसा चाहिए। परंतु सदाचार और पैसों का कोई संबंध नहीं है। सदाचार व्रत के प्रति लिए पूरी निष्ठा चाहिए। मनुष्य को हमेशा कोई परोपकारी और सत्कार्य करने का उद्देश्य मन में धारण करके उसे साहसपूर्वक पूरा करने का प्रयास करना चाहिए। सदाचारी व्यक्ति पर लोग विश्वास करते हैं। यह खरा मनुष्य है, कभी झूठ नहीं बोलता, इसीलिए लोग उससे झूठ बोलने से डरते हैं। इसीलिए वे सदाचारी बनने की कोशिश करते हैं और आसपास के लोगों का आचरण अपने व्यवहार में उतारने की कोशिश करते हैं। उनका विश्वास है कि हमारे लिए सदाचार व्रत अच्छा होता है और उसके फलस्वरुप हमारा जीवन सुधर जाएगा।

पूना में बल्लाल पंत गोवंडे नाम का एक गृहस्थ रहता है। वह सदाचारी था और दुराचार करने से डरते था। उनकी पत्नी गंगामाई गंगा की तरह निर्मल और चावल की तरह श्वेत थी। वह अत्यधिक सदाचारी थी। वे लोगों की मदद करने में हमेशा तत्पर रहते थे। इस सदाचारी दंपति के एक पुत्र जन्मा। उन्होंने अपने पुत्र का नाम 'सदाशिव' रखा। यह देखकर कि बच्चा दिनोंदिन बड़ा हो रहा है, उन्होंने अपने पुत्र को विद्या सीखने के लिए पंत जी की पाठशाला में भेज दिया। अपने पुत्र को शिक्षित करना माता-पिता का कर्त्तव्य है। ऐसा समझें कि जो माता-पिता अपने पुत्र या पुत्री को शिक्षा नहीं देते, वे अपने पुत्र और पुत्री के दुश्मन हैं, इसीलिए मां-बाप को अपने पुत्र-पुत्री को शिक्षित करना चाहिए। विद्या प्राप्त करके वे सदाचार के व्रत को पूरा करने में समर्थ हो जाते हैं। बल्लाल पंत अपने लाडले पुत्र को उपदेश देते हुए कहते थे, "हे सदाशिव, विद्या मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ धन है। एक संस्कृत ग्रंथ में कहा गया है-

"विद्यावित्तविहिनेन किंकुलीनेन दोहिनाम्,
अकुलोनोपि यो विद्वान दैवतैरपि पूज्यते।"

इसका अर्थ यह है कि विद्या-धन विहीन मनुष्य के ऊंचे कुल में जन्म लेने के कारण भी उसे कोई नहीं पूछता। तुच्छ ही समझते हैं और हीन कुल में होने पर भी अगर वह विद्वान होगा तो देवता भी उसकी पूजा करेंगे और वह दुनिया में प्रसिद्धि पायेगा।

पुत्र सदाशिव ने पिता के उपदेश के साथ "सुनार की फुंकनी" की तरह व्यवहार नहीं किया। उसने मां-बाप के उपदेश अपने मन में धारण किए। सरकारी पाठशाला में लिखना, पढ़ना, गणित, व्याकरण, खगोल और भूगोल की शिक्षा ग्रहण करता था। मन से पढ़ाई करने के कारण निरंतर आगे बढ़ता गया। सदाचारी मां-बाप के पुत्र की दुराचारी होने की संभावना कम होती है। सदाशिव दृढ निश्चयी, हाजिर-जवाब और होशियार था, इस कारण गोरा साहब कलेक्टर उससे बहुत खुश हुए। बाद में उन्होंने उसे बड़े ईनाम, वस्त्र अलंकार दिए। वह सरकारी काम के योग्य है ऐसा मानकर उसे सहायक नियुक्त कर दिया गया। उसके नीचे काम करने वाले कारकून रिश्वतखोर थे। सदाशिव को एक धनी किसान ने एक काम करने के लिए रिश्वत देने की बात कही। सदाशिव ने उत्तर दिया, "पाटिल ! मुझे ऐसी बुरी बात ना कहें।" जो होना है उसे मैं निरीक्षण के समय देखूंगा। कोई ना रिश्वत दे और ना ले। सरकारी काम को ईमानदारी और प्रामाणिकता से करने में संतुष्टि का दुर्लभ लाभ प्राप्त होता है। सदाशिव को कलेक्टर से संबंधित कार्यालय में जगह दी गई थी। वह कलेक्टर के साथ इलाके का निरीक्षण करता था। निरीक्षण के समय जिस तरह की जमीन होती उसके अनुसार कानून की धारा लगाई जाती थी। इस वजह से सरकार को उस पर पूरा विश्वास हो गया था और उसे बड़ा अधिकारी बना दिया। इस तरह बचपन में विद्या प्राप्त करते हुए ही उसने सदाचार व्रत अपना लिया था।उसे यह समझ में आने लगा था कि अच्छा क्या है और बुरा क्या है। वह भली-भांति जानने लगा था कि सत्कार्य क्या है और दुष्कार्य क्या है। लोगों में वह प्रसिद्ध हो गया।

व्यसन

नशा एक बुराई है जो मनुष्यों के दुखों में बढ़ौतरी करता है। किसी भी नशे से जीवन के सुख समाप्त हो जाते हैं। दारू, भांग, अफीम, बीड़ी, चिलम आदि बहुत से व्यसनों का प्रचलन है और जिनसे शारीरिक, व्यावसायिक और सामाजिक तौर पर पतन होता है। नशेड़ी मनुष्य की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और इंसानियत मर जाती है। इसप्रकार नशे की लत मनुष्य की गरिमा को समाप्त करके उनकी इंसानियत में बाधा पैदा करती है। इसलिए तुरंत त्याग देना चाहिए।

मनुष्य लंबे अरसे से दारू का नशा करता आ रहा है। इससे मनुष्य की आंतें नष्ट हो जाती हैं। चिलम में गांजा-तंबाकू भरकर उसमें आग सुलगाकर पीने वाले नशेड़ी जल्दी मौत के मुंह में चले जाते हैं। उनके शरीर कमजोर हो जाते हैं। चरस की उन्मादी सांस से व्यक्ति मंद पड़ जाता है। अंत में वह हाथ-पांव मारते हुए तड़प-तड़पकर मरता है। नशे में आदमी विक्षिप्त हो जाता है जिससे उसके कपड़े-लत्ते, पैसे आदि जीवनोपयोगी सामान धीरे-धीरे उससे छिन जाता है। नशे में गिरफ्त व्यक्ति को यह समझ में नहीं आता। किसी भी नशे से आदमी की बुद्धि कुंद हो जाती है। नशे की पीनक में अपनी मनुष्यता भूल जाता है और नशे में खुद को भूल जाता है, अपना महत्व क्या है, इसे भी समझ नहीं पाता। उसका दिमाग जानवर के समान हो जाता है, डगमगाते हुए चलता है। खाता, पीता और बड़बड़ाता है। तब लोग भी उसे छेड़ने व मजाक उड़ाने लगते हैं। सभ्य मनुष्य उससे दूर रहते हैं। नशे की गिरफ्त में फंसा मनुष्य नशे से छुटकारा पाने के लिए छटपटाता है। नशे से छुटकारा न होने पर धन का नुकसान होता है और उसका जीवन बर्बाद हो जाता है। एक उदाहरण से अपनी बात सिद्ध करके दिखाती हूं।

उसली नामक एक गांव था। इस गांव में बहुत से शराबी थे। गांव के पाटिल को भी शराब की लत लगी थी। इस कारण गांव में अनाचार होने लगा। पाटिल अशिक्षित था, इस कारण उसके चारों ओर मूर्ख मित्रों का जमावड़ा लगा रहता था। इस कारण सज्जन लोग उससे दूर होने लगे। उसे अच्छे लोगों की संगति मिलनी बंद हो गई। नशे में अनेक दोष और

कमियां शरीर को कमजोर करती रहती हैं। कहावत है कि "नशेड़ी के घर दुर्दशा का वास"। पाटिल के घर में भी संकट आया और उसके घर-परिवार को तहस-नहस कर दिया। दो-चार मित्रों के साथ वह बेहिसाब शराब पीता था। नशे से शरीर के साथ-साथ उसका मन भी विकृत होने लगा। वह बकवास करता, जुआ खेलता, लड़ाई-झगड़े करता, वेश्या-गमन करता। उसके ये पशुवत अत्याचार अंग्रेज अफसरों के कान में पड़े। उन्होंने उसको पाटिल पद से हटा दिया और उसके बेटे को पाटिल बना दिया। इसके बाद पाटिल की मृत्यु हो गई। इसलिए मनुष्य को सावधान रहते हुए नशों से दूर रहना चाहिए। नशेड़ियों की संगति से हमेशा दूर रहना चाहिए। खुद विद्या प्राप्त करें और अपने बच्चों को विद्या दें। विद्या का अभाव नाश और अनर्थ का मूल है। अविद्या के कारण सत्य और असत्य में अंतर समझ नहीं आता। संत तुकाराम ने भी कहा है -

"सत्कर्मों का आचरण करो, आचरण करोः
सत्कर्मों का आचरण करो रे,
सत्कर्म हित करते हैं। वह असत्य के दुख को रोकते हैं।
भले लोगों को सत्य अच्छा लगता है, दुनिया को सुनाए,
जिससे बदनामी बढ़े ऐसा स्वार्थ त्यागें।
तुका कहते हैं झूठ त्यागें, निंदनीय कर्म अंधेरे के समान हैं।

नशे से बहुत नुकसान होते हैं, जुआ खेलने से अनर्थ होते हैं। "वेश्याओं के जो संग रहे। उनके पूर्वज नरक में जाते हैं।" शराबी, जुआरी और रंडीबाज लोग इंसानियत को लात मारते हैं। वे दुराचारी बन जाते हैं। इन तीनों बुराइयों से आदमी दूर रहे तो उसका कल्याण होगा और उसे संतुष्टि मिलेगी। इन तीन बुराइयों से कितने ही सुखी मनुष्य दुखी होकर पागल होकर कुत्ते की मौत मरे। इज्जतदार मनुष्य कोई नशा नहीं करते। ये देखें और उससे सीख लें।

अज्ञान, मजबूरी, लाचारी और पाखंडवाद के चक्र में फंसे हुए शूद्र-अतिशूद्रों में शिक्षा से ही चेतना निर्माण होगी। इसलिए शिक्षा ग्रहण करने की टालमटोल अब नहीं होनी चाहिए अन्यथा यह दुर्दशा हमारी पीढ़ी को भी सहन करनी होगी

- सावित्रीबाई फुले

कर्ज

"कर्ज लेकर मौज उड़ाना" इस उक्ति में गूढ़ अर्थ छिपा हुआ है। इससे हमें बड़ा ज्ञान और बुद्धिमानी की सीख मिलती है। कर्ज लेकर ऐश उड़ाना और कर्ज की गिरफ्त में फंसकर अपनी दुनिया को ग्रहण लगाने में क्या समझदारी है? जीवन में हर व्यक्ति को किसी न किसी जरूरत में कर्ज लेना पड़ता है। परंतु कर्जदार को बहुत दुख झेलना पड़ता है। अनेक बार अपमान, मुश्किलें सहनी पड़ती हैं। कर्जे के कारोबार में सबके अनुभव एक समान हैं और सभी का यही मत है कि "समझदारी इसी में है कर्ज ना लें"। यह लंबे अनुभव का निचोड़ है। हर गांव में कर्जदार लोग हैं, वे कोई काम धंधा नहीं करते। वे आलसी हैं। उनमें ये सोच नहीं होती कि हम कुछ न कुछ काम करें और परिवार की मदद करें।

वे सोचते हैं कि निठल्ले रहने से ही सुख मिलेगा और जब नहीं मिलता है तो फिर वे दूसरों को दोष देने लगते हैं और अपने खुद के निकम्मेपन पर नजर नहीं डालते। जो लोग कर्ज ले लेते हैं, वे परिश्रम, चातुर्य, हिम्मत, बुद्धि, पराक्रम, उत्साह इन छः गुणों को खो देते हैं। इसलिए सावित्री कहती हैं -

सेठ से जो कर्ज लेता
उसका सुख दूर भागता।
संकटों से हैरान होता ।
कर्जदार बेचैन रहता।

कर्ज से चिंता रहती।
सारी संपत्ति लुटा दी।
जीवन की उलझनें बढ़े।
ऋणकों का अहं बढ़े।

कर्ज लेना अनर्थों का मूल है, वे खुद अपना दिवाला कैसे निकालते हैं यह उदाहरण है -

एक गांव में दो कुणबी अपने ही गांव के निकट सरकार के खेतों में खेती करके परिवार के साथ मजे से रहते थे। एक का नाम खंडोबा था और दूसरे का पिरोबा। दोनों के ही प्यारे-

प्यारे बेटे थे। किशोर उम्र की बेटियां थीं। दोनों का जीवन सुख से बीत रहा था। दोनों परिवार आनंद से रह रहे थे। गांव में उनकी बहुत इज्जत थी।

एक बार उस गांव में एक परदेशी व्यक्ति आया। उस समय उसकी कुल दौलत थी - फटी-पुरानी जूती, फूटा लोटा, पैबंद लगी बंडी, लीर जोड़-जोड़कर बनाई धोती। उसकी यह हालत देखकर खंडोबा, पिरोबा को उस पर दया आ गई। उन्होंने उसके लिए छोटा-सा घर बनवा दिया। कुछ पैसे देकर उसकी दुकान खुलवा दी। कुछ दिनों बाद वह गरीब आदमी अपनी व्यापार-विद्या से गांव के लोगों को डेढ़-दो गुणा ब्याज पर कर्ज देकर घर की चीजें गिरवी रखवा लेता। इस तरह हजारों रुपए कमाकर सेठ बन गया। एक बार खंडोबा-पिरोबा ने इसी सेठ से पांच-पांच सौ रुपए कर्ज लेकर लड़कियों का विवाह कर दिया। दो-तीन साल तक खाता चलता रहा। चक्रवृद्धि ब्याज के हिसाब से सेठजी ने दोनों से 500 रुपए के बदले डेढ़ हजार रुपए वसूल कर लिए। हर साल खेतों में जो भी पैदा होता दोनों जन कर्ज चुकाने के लिए सेठजी को दे देते थे। लेकिन उसने उसे बही-खाते में जमा नहीं किया । कर्ज, उसका ब्याज और उस पर चक्रवृद्धि ब्याज का चक्र थमता नहीं था। इससे परेशान होकर खंडोबा और पिरोबा सेठजी से लड़ने लगे। सेठजी ने अदालत में फरियाद की, उसका फैसला सेठजी के पक्ष में हुआ। उसने दोनों की ज़मीन पर सार्वजनिक नीलामी करवाके अपना सारा पैसा वसूल कर लिया। तब वे दोनों कुनबी अपना गांव छोड़कर परिवार के साथ परदेश में चले गए। इससे सेठजी को तिल भर भी दुख महसूस नहीं हुआ। खंडोबा-पिरोबा की कहानी बताती है कि कर्जे की वजह से लोगों को अपना गांव छोड़ना पड़ता है

'मेरे भाइयो, मुझे प्रोत्साहन देने के लिए, आप मुझपर पत्थर नहीं, फूलों की वर्षा कर रहे हैं, तुम्हारी इस करतूत से मुझे यही सबक मिलता है कि मैं निरंतर अपनी बहनों की सेवा में लगी रहूं। ईश्वर तुम्हें सुखी रखे।'

- सावित्रीबाई फुले

(स्कूल के लिए निकलने पर रूढिवादियों द्वारा गोबर-पत्थर फेंकने के जवाब में)

सावित्रीबाई फुले के पत्र

सावित्रीबाई फुले ने यह पत्र जोतिबा फुले को अक्तूबर 1856 में अपने मायके से लिखा था। इस पत्र से पता चलता है कि फुले दंपति के दलितों-शोषितों-दमितों के उत्थान के लिए किए जा रहे कार्यों को स्वार्थी ब्राह्मणवादी तत्व धर्म-विरोधी कहकर लोगों के दिलों में ज़हर घोल रहे थे और उनके खिलाफ़ झूठी बातें फैलाकर दुष्प्रचार कर रहे थे। इससे सावित्रीबाई फुले की स्पष्ट समझ, अपने कार्यों के प्रति प्रतिबद्धता व उसके लिए साहस का भी पता चलता है। 'हम इन सब पर विजयी होंगे और भविष्य में सफलता हमारे ही हाथ लगेगी। भविष्य हमारा है' इन शब्दों में जो आशा झलकती थी, वर्तमान में वह सत्य सिद्ध हो रही है।

अक्तूबर 1856

सत्यमूर्ति, जोतिबा मेरे स्वामी

सावित्री का साष्टांग नमस्कार!

पत्र का कारण यह है कि मेरी तबीयत में अनेक बार उतार-चढ़ाव होने के पश्चात अब सुधर रही है। इस दौरान मेरे भाई ने परिश्रम के साथ मेरी बहुत सेवा की। इससे यही दिखता है कि वे कितने स्नेही हैं। मैं पूरी तरह से दुरुस्त होकर पूना आऊंगी। आप चिंता न करें। मेरे न होने से फातिमा को कठिनाई हो रही होगी लेकिन वह कुर-कुर नहीं करेगी।

यहाँ बातचीत करते हुए मेरे भाई ने कहा तुम और तुम्हारे पति तुम दोनों महार और मांग आदि अंत्यज जो पतित हैं उनके लिए काम करते हो। तुमने अपने कुल को बट्टा लगाया है। यहां तक कहा कि तुम्हारा पति इनको उच्च जातियों के व्यवहार का अनुसरण और ब्राह्मणों की तरह आचरण करवाता है। उसके इस तरह बेलगाम व ऊलजुलूल बोलने से माँ को उस पर गुस्सा आया। भाई वैसे तो दयालु है लेकिन संकीर्ण बुद्धि के कारण आपकी और मेरी निंदा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। माँ ने उस पर गुस्सा नहीं किया बल्कि उसे समझाया। तुम्हें भगवान ने इतनी अच्छी जुबान दी लेकिन उसका दुरुपयोग करना अच्छा नहीं। माँ के ऐसा बोलने पर भाई को शर्म आई। फिर मैंने उसके मत का खंडन करने के लिए बोला। भाई तेरी बुद्धि संकीर्ण है ब्राह्मण लोगों की शिक्षाओं ने इसे अधिक दुर्बल कर दिया। तू बकरी, गाय जैसे जानवरो को गले लगाता है और नाग पंचमी को विषैले नागों को पकड़कर दूध पिलाता है। महार और मांग भी तेरी तरह ही मनुष्य हैं तू उनको अछूत समझता है इसका क्या

कारण है? मैंने ऐसा प्रश्न किया। ब्राह्मण लोग अपने आपको शुद्ध समझते हैं और तेरे छूने से भ्रष्ट मानते हैं।तुझे भी महार ही समझते हैं। मेरे ऐसे बोलने से भाई चुप हो गया। फिर वह पूछने लगा कि तुम महार लोगों को क्यों पढ़ाती हो? इस कारण जब लोग तुम्हें भला-बुरा बोलते हैं जिससे मुझे पीड़ा होती है। यह मुझे अच्छा नहीं लगता। मैंने उसे कहा कि अंग्रेज महार और मांगों के लिए क्या-क्या कर रहे हैं। विद्याहीनता ही पशुत्व का लक्षण है। ब्राह्मण लोगों का श्रेष्ठत्व का आधार विद्या ही है और इसी कारण उनकी अधिक महिमा है। जो कोई भी विद्या को प्राप्त कर लेगा उसकी निम्नता दूर हो जाएगी और उच्चता उसको स्वीकार करेगी।

मेरे स्वामी देवपुरुष हैं इस देश दुनिया में उन जैसा कोई नहीं है। महार-मांगों में विद्या व मानवीय गरिमा जगाने के लिए मेरे स्वामी जोतिबा और मैं ज्ञान देते हैं, ब्राह्मणों से संघर्ष करते हैं। पर इसमें अनुचित क्या है? हमें दोनों लड़कियों, औरतों, महारों और मांगों को शिक्षा देते हैं। ब्राह्मण लोग यह समझते हैं कि यह उनके लिए हानिकारक होगा। ऐसा समझने के कारण वे आम आदमियों में और धर्म के कार्यों में इसे ईश्वर विरोधी-ईश्वर विरोधी कहकर निंदा दुष्प्रचार करते हैं और तेरे जैसों के मन में कलुष पड़ जाता है।

तुझे याद होगा अंग्रेज सरकार ने एक समारोह करके मेरे पति व उनके कार्यों का लिए सम्मान किया था। इस सादर सत्कार के लिए जो दुर्जन हैं उनकी गर्दन शर्म से झुक गई। तेरे जैसे जो ईश्वर का नाम अलापते हैं और करते कुछ नहीं, मैं जिम्मेवारी से कहती हूं कि मेरे पति साक्षात ईश्वर का ही काम कर रहे हैं। मैं उनकी मदद करती हूँ। यह काम इतना खुशीदायक है इसकी वजह से मुझे परमानन्द मिलता है।

मेरे बोलने पर भाई व माँ एकाग्र चित्त होकर सुनते रहे। भाई पश्चताप करने के लिए माफी मागने लगा। माँ ने कहा सावित्री - तेरी जुबान पर तो साक्षात सरस्वती विराजमान है। तेरा ज्ञान देखकर मैं धन्य हो गई। दोनों से बात करने के बाद मेरे अंतःकरण में एक विचार आया। ध्यान आया कि पूना में "आपके" बारे में दुष्ट लोग जिस तरह दुष्प्रचार कर रहे हैं, खिल्ली उड़ाते है वैसे ही यहां पर भी हैं। उनके डर से अपना शुरू किया हुआ कार्य क्यों छोड़ें? हमेशा-हमेशा काम में लगे रहे। भविष्य में सफलता हमारी होगी। इससे अधिक क्या लिखूं।

आपकी
सावित्री

सावित्रीबाई फुले ने यह पत्र जोतिबा फुले को अगस्त 1868 में लिखा। इसमें अंतरजातीय प्रेम संबंधी एक घटना का जिक्र है जिसमें लोग युवक-युवती को पीट-पीटकर मारने पर उतारू थे। सावित्रीबाई फुले की पहलकदमी से न केवल युवक-युवती की जान बची, बल्कि उनके विवाह का रास्ता भी खोल दिया। पता चलता है कि फुले-दंपति सामाजिक भेदभाव के सताये हुए लोगों के लिए केवल जुबान नहीं चलाते थे, बल्कि वास्तविक मदद करते थे। लोगों में अंग्रेजी कानून का डर भी था। अंतरजातीय प्रेम विवाह को लेकर इस तरह की क्रूर व बर्बर घटनाएं वर्तमान में भी देखी जाती हैं। फुले-दंपति की खुली मानवीय सोच के यहां दर्शन होते हैं। यही सोच उनको अन्य समाज सुधारकों से अलग करती है और क्रांतिकारियों की श्रेणी में स्थान देती है।

29 अगस्त 1868
नईगाँव, पेटा खंडाला
सतारा

सत्यमूर्ति, जोतिबा मेरे स्वामी

सावित्री का साष्टांग प्रणाम!

आपका पत्र मिला। हम यहाँ सभी खुशहाल हैं। मैं अगले महीने की पाँच तारीख के बाद पूना आ रही हूँ। चिंता ना करें। यहाँ एक अघटित घटना घटी है। गणेश नाम का एक ब्राह्मण युवक गाँव-गाँव जाकर पंचांग देखकर अपना गुजारा करता था। शारजा नामक की लड़की के साथ प्रेम हो गया और लडकी छः महीने की गर्भवती हो गई। वे गांव भाग गए और गाँव के दुष्ट लोग उनको खोज लाए और उन दोनों के साथ मारपीट की। गाँव की गलियों में घुमाया और उनको मारने पर उतारु हो गए। यह भयंकर बात मुझे पता लगी तो मैं दोड़कर पहुँची। उन लोगों को अंग्रेज सरकार के कानून का डर दिखाया। उनके इस क्रूर-कृत्य करने से उनको दूर किया। साधु भाऊ ने कहा कि ब्राह्मण युवक और महारिन युवती गाँव छोड़कर चली जाएं। दोनों पीड़ित ऐसा करने को राज़ी हो गए। इन दोनों को मैंने बचाया इसलिए वे दोनों मुझे देवी समझकर मेरे पैरों में गिर पड़े और रोने लगे। उनका रोना रुक ही नहीं रहा था।

मैंने उनको किसी तरह समझाया-बुझाया और शांत किया। अब मैं उन दोनों को आपके पास भेज रही हूँ। इसके अलावा मैं और क्या करती। आपकी जानकारी लिए यही बात है।

आपकी

सावित्री



फातिमा शेख

सावित्रीबाई फुले की सहयोगी

फुले दम्पति के इस क्रांतिकारी कार्य में एक मुस्लिम स्त्री ने भी महत्वपूर्ण सहयोग दिया है। उस मुस्लिम महिला का नाम फातिमा शेख है। उन्नीसवीं सदी की पहली मुस्लिम अध्यापिका फातिमा शेख ही है।

फातिमा जोतीराव फुले के मित्र उस्मान शेख की बहन थी। जोतीराव के पिता द्वारा उन्हें घर से निकाल देने के बाद, उस्मान शेख ने ही अपने घर में उन्हें आश्रय दिया था। वे प्रगतिशील विचारों के थे। फुले दम्पति ने जो 'नार्मल स्कूल' स्थापित किया था, उसमें फातिमा शेख ने अध्यापन प्रशिक्षण पूर्ण किया था। सावित्रीबाई और फातिमा मिलकर अछूत बच्चों के स्कूल का संचालन करती थीं। सावित्री बाई फुले ने अक्तूबर 1868 में जोतिबा को लिखे पत्र में इसका जिक्र करते हुए लिखा है:

'मैं जानती हूँ कि मेरे न होने से फ़ातिमा को कितनी मुश्किल हुई होगी लेकिन मुझे यकीन है वह समझेगी और कुरकुर नहीं करेगी।

सावित्रीबाई फुले ने यह पत्र जोतिबा फुले को अप्रैल 1877 में लिखा। इसमें अकाल के दौरान किसानों की दुर्दशा का हृदय विदारक वर्णन किया गया है। समाज के उच्च वर्ग सेठ-साहूकार इस स्थिति में लोगों की लाचारी का दुष्टतापूर्वक लाभ उठा रहे हैं इसका भी संकेत किया है। सत्यशोधक समाज के कार्यकर्ताओं ने अकाल पीड़ितों की राहत के लिए कार्य किया इसका भी जिक्र किया है। महात्मा जोतिबा फुले ने भी पूना व मुबंई के लोगों से अकाल पीड़ितों की मदद की अपील की थी। सत्यशोधक समाज की देखरेख में अकाल पीड़ितों के भोजन के लिए 50 से अधिक भोजनालय चलते थे। इसीलिए शोषितों, दलितों, दमितों, किसानों में सत्यशोधक की गहरी पैठ थी। सत्यशोधक समाज भद्रजनों के सिद्धांत-चर्चा का नहीं बल्कि सामाजिक समस्याओं को दूर करने का आंदोलन था।

20 अप्रैल 1877

ओतुर, जुन्नर

सत्यमूर्ति, जोतिबा मेरे स्वामी,

सावित्री का साष्टांग प्रणाम!

पत्र का कारण यह है कि वर्ष 1876 बीतने के साथ अकाल अधिक विकराल हो गया है। समस्त जन और जानवर घबराए हुए और मरणासन्न होकर धराशायी हो रहे हैं। मनुष्यों के लिए अनाज नहीं और जानवरों का चारा-पानी नहीं। इस कारण कितने ही लोग गाँव छोड़-छोड़कर अन्य स्थानों पर चले गए हैं। कितने लोग अपने किशोर बेटे-बेटियों को बेचने पर मजबूर हो रहे हैं। नदी-नाले, तलाब सब सूख गए और जमीन में दरारें पड़ गई हैं।पानी के अभाव में पेड़-पौधे सूखकर कर धरती पर गिर गए हैं। धरती में दरारे पड़ गई हैं और उनमें से आंच की गरम लपटें निकल रही हैं। अनेक लोग भूख व प्यास से बेबस होकर कड़वा अनाज (गंदा व सड़ा हुआ अनाज) खा रहे हैं और कितने ही लोग अपना पेशाब पी रहे हैं। भूख-प्यास से व्याकुल लोग रोते-बिलखते मौत का शिकार हो रहे हैं। यहां ऐसी भयानक परिस्थिति बनी हुई है।

सत्यशोधक समाज व दयावान लोगों द्वारा अकाल पीड़ित लोगों के लिए अन्न-धान्य देने के लिए अकाल निवारण कमेटी की स्थापना की है। भाई कोंडा जी और उनकी पत्नी उमाबाई जी-जान से मेरा ध्यान रख रहे हैं। सत्यशोधक समाज ओतुर के शास्त्री गणपति सखाराम, डुंबरे पाटिल आपसे मिलने आ रहे हैं। अच्छा रहेगा कि आप सतारा से ओतुर आ जाएं और फिर यहाँ से शहर के लिए जाएं। आपको रा.ब. कृष्णा जी पंत, लक्ष्मण शास्त्री जी याद होंगे मैं उनके साथ अकाल प्रभावित गाँवों में जाकर लोगों की मदद के लिए रूपये व पैसे से मदद कर रहे हैं।

दूसरा चिंता का विषय यह है कि साहुकार लूट रहे हैं। इस कारण बुरी-बुरी घटनाएं घट रही हैं। उनके बड़े-बड़े डाके पड़ रहे हैं। इस बात की जानकारी पाकर क्लेक्टर यहां आए और पूरे मामले को समझकर गोरे सिपाहियों को सुरक्षा में तैनात किया। उन्होंने पचास सत्यशोधकों को गिरफ्तार कर लिया। मैंने इस संबंध में बात की। मैंने उन्हें कहा कि क्या हमारे लोग शरारती और बदमाश हैं? जिसके कारण उन्हें कैद में डाला। क्लेक्टर न्यायकारी है। उसने गुस्से में फौजदारों से कहा कि क्या पाटिल डाके डालते हैं? उनको छोड़ दिया। क्लैक्टर ने अकाल-पीड़ितों पर दया करके चार गाड़ियां ज्वार की भेजी।

आप जो लोक कल्याणकारी कार्य करते आ रहे हैं, उसमें मैं हमेशा सहायता करुंगी और मैं आपके दिव्य कार्य सेवा कार्य में सहायक रहूंगी। मेरी सिर्फ यही इच्छा है। मैं और अधिक क्या लिखूं।

आपकी,

सावित्री



नाय गांव में सावित्री बाई फुले का घर जहां उनका जन्म हुआ।

साहित्य बेहतर समाज का निर्माण करता है - अशोक भाटिया



दिनांक 18 दिसम्बर 2021 को साहित्य परिषद, हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय और देस हरियाणा पत्रिका के सहयोग से 'अपने लेखक से मिलिए' की कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. अशोक भाटिया जी ने शिरक्त की। लेखक अशोक भाटिया जी ने अपनी रचना प्रक्रिया के माध्यम से बताया है कि रचनाकार का कार्य मनोरंजन करना नहीं होता बल्कि रचनाकार कार्य साहित्य बेहतर समाज का निर्माण करता है। रचनाकार समाज को अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज को बेहतर विचारों से संचित करता है और रचनाकार के पीछे चलते है सभी शास्त्र और सिद्धान्त। कार्यक्रम के दौरान हिन्दी विभाग के विद्यार्थियों ने लेखक से सवाल किए।

हिन्दी विभाग के अध्यक्ष और देस हरियाणा पत्रिका के संपादक डॉ. सुभाष चंद्र जी ने अध्यक्षीय टिप्पणी करते हुए लेखक की रचना प्रक्रिया के बारे में विस्तार से चर्चा की।

एम.ए. हिन्दी के विद्यार्थियों गौरव, प्रिया, ईशा, अनु, मोनिका ने डॉ. अशोक भाटिया की रचनाओं का पाठ किया। शोधार्थी रानी ने अपने शोध पत्र के माध्यम से अशोक भाटिया के साहित्य की समीक्षा की।

हिंदी विभाग के प्राध्यापक डॉ. जसबीर जी ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी सदस्यों का धन्यवाद किया। पंजाबी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. कुलदीप सिंह, वरिष्ठ लेखक डॉ. ओम प्रकाश करुणेश, ब्रजपाल, विकास साल्याण और विभाग के शोधार्थी व विद्यार्थी उपस्थित थे।

कविता - संघर्ष और आगे बढ़ने का जज्बा पैदा करती है - जयपाल



दिनांक 24 दिसंबर 2021 को हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र में साहित्य परिषद् हिन्दी विभाग और देस हरियाणा पत्रिका के सहयोग से 'अपने लेखक से मिलिए' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें वरिष्ठ कवि श्री जयपाल जी ने मुख्य वक्ता के तौर पर शिरकत की। जयपाल जी ने अपनी रचना प्रक्रिया के बारे में बताते हुए कहा कि शुरुआत में कविता अपने संघर्ष से निकलती है। परन्तु धीरे-धीरे साहित्यकार समाज की पीड़ा को अपना बनाने लग जाता है। शुरुआत में कविता करुणा से पैदा होती है परन्तु आज की कविता अपने होने का और खड़े होने का जज्बा पैदा करती है।

कई बार सवाल उठता है कि समाज में एक लेखक की क्या भूमिका होती है? जिस प्रकार एक ईमारत को बनाने में अलग-अलग कार्यक्षेत्र के लोग जैसे मिस्त्री, मजदूर आदि अपने काम द्वारा ईमारत का निर्माण करते है उसी प्रकार साहित्यकार और कलाकार भी समाज में अनेक जटिल समस्याओं को सरलीकरण के साथ समाज के मध्य प्रस्तुत करता है और समाज में एक परिवर्तन का वैचारिक माहौल बनाता है और समाज को बदलने में लेखकों का विशेष योगदान होता है। सभी वर्ग के व्यक्तियों से समाज बनता है। अच्छी सोच से समाज आगे बढ़ता है।

जयपाल जी ने रचनाकारों के दायित्व को बताते हुए कहा कि हमें लिखने से पहले समाज की संकीर्ण और रूढिवादी सोच, समाज को और समाज के लोगों को पीछे ले जाने वाले विचारों को पहचानना आवश्यक है और फिर उस विषय को आलोचनात्मक नजरिए

से समाज के मध्य प्रस्तुत करना ही रचनाकार का मुख्य कार्य होता है। ये आड़म्बर और रुढ़ियाँ आज भी बच्चों की दृष्टियों पर बुरा प्रभाव डालते हैं।

रचनाकार और कलाकार के पास अपनी रचना और कलाकृति बनाने के लिए कोई सूत्र नहीं होता और न ही उसको सिखाया जा सकता, वह केवल अपने मन से लिखता, पढ़ता जाता है। लेखक जयपाल ने अंत में अपनी कविताओं का पाठ किया और हिन्दी विभाग के शोधार्थियों और विद्यार्थियों को निरन्तर लिखने और निड़रता से अपनी बात कहने का संदेश दिया। उसके पश्चात विद्यार्थियों ने लेखक से सवाल-जवाब किए।

इस समीक्षा गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए देस हरियाणा पत्रिका के संपादक डॉ. सुभाषचन्द्र ने लेखक जयपाल की कविता सुनाते हुए कहा कि साहित्यकार न केवल लिखने से पहले ही समाज के दर्द को झेलता है बल्कि उसे लिखने के दौरान भी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। साहित्य का सबसे महत्वपूर्ण सवाल होता है साहित्य के सम्प्रेषण का। एक अच्छी कविता का यही लक्षण होता है कि जो बात लेखक ने कही है वह पाठक तक पहुंचे। जयपाल जी की कविताओं का यह मुख्य गुण है कि वह आसानी से पाठकों के हृदय को छू जाती है। कविता या साहित्य उसी विषय को लेकर लिखा जाता है जिस बात या विषय को आसानी से अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता है।

हिन्दी विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. जसबीर जी ने कार्यक्रम का आरंभ करते हुए कार्यक्रम में उपस्थित सभी अतिथियों और मुख्य वक्ता का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन हिन्दी विभाग की विद्यार्थी अनु राठी ने किया। उसके पश्चात हिन्दी विभाग के विद्यार्थियों ने कविता पाठ किया। जिसमें एकता, रजत, हेमवती, ईशा, विजेन्द्र, प्रिया ने भाग लिया। डॉ. ओमप्रकाश करुणेश ने कार्यक्रम में पहुँचे सभी अतिथियों और विद्यार्थियों का धन्यवाद किया। इस मौके पर बाल साहित्यकार बलदेव सिंह मेहरोक, कवि हरपाल गाफिल, ग़ज़लकार मंजीत भोला, हिन्दी विभाग के प्राध्यापक विकास साल्याण, ब्रजपाल खोखर, हिन्दी विभाग के शोधार्थी और विद्यार्थी मौजूद थे।

नवजागरण की प्रणेता सावित्रीबाई फुले - एस.के.चहल

दिनांक 3 जनवरी 2022 को भारत की प्रथम महिला शिक्षिका क्रांतिज्योति माता सावित्री बाई फुले के जन्मदिवस के रूप में मनाया जाता है। इसी उपलक्ष में हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र में साहित्य परिषद् हिन्दी विभाग और देस हरियाणा पत्रिका के सहयोग से एक ऑनलाइन व्याख्यान का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य वक्ता के तौर पर इतिहास विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र के अध्यक्ष और लेखक डॉ. एस.के.चहल ने माता सावित्रीबाई फुले के जीवन और चिन्तन के परिप्रेक्ष्य में व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया किसी भी समाज के विकास में उसके नायकों का योगदान होता है और भारतीय नवजागरण के प्रणेता के तौर सावित्रीबाई फुले और जोतिबा फुले की अहम भूमिका है। उन्होंने बताया की सावित्री बाई फुले और जोतिबा फुले ने अपने जीवन की सारी शक्ति समाज के निचले वर्गों के उत्थान और समाज को शिक्षित करने में लगाई। उन्होंने कई स्कूल खोले और उसी के साथ-साथ सत्यशोधक समाज की स्थापना भी की।

कार्यक्रम की अध्यक्षीय टिप्पणी करते हुए देस हरियाणा के संपादक डॉ. सुभाष चन्द्र ने कहा - भारतमाता सावित्री बाई फुले आधुनिक भारतीय समाज में चेतना निर्माण की थी। महिला शिक्षा के लिए जो उनका योगदान है उसी का फलस्वरुप आज लड़कियां शिक्षा ग्रहण कर पा रही है। सावित्रीबाई फुले केवल समाज सेविका और शिक्षिका ही नहीं बल्कि वह एक उच्च्च कोटि की कवयित्री भी थी। उनकी कविताओं में जो सौंदर्यबोध है वह केवल कोरी कल्पनाओं पर आधारित नहीं है बल्कि वह मनुष्य के दैनिक जीवन से जुड़ाव रखता है। इसमें पत्रकार अरुण कैहरबा, कीर्ती सैनी, विकास साल्याण, ब्रजपाल, डॉ. जसबीर सिंह और हिन्दी विभाग और इतिहास विभाग के शोधार्थियों और विद्यार्थियों शामिल थे।

सामूहिक उत्साह से ही परिवर्तन संभव - सिद्धार्थ शंकर राय

14 जनवरी 2022 को साहित्य परिषद् हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र की ओर से व देस हरियाणा पत्रिका के सहयोग से 'भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम और हिन्दी कविता' विषय पर ऑनलाईन व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता के तौर पर

आलोचक व समीक्षक और केन्द्रीय विश्वविद्यालय, हरियाणा के सहायक प्रोफेसर डॉ. सिद्धार्थ शंकर राय जी ने शिरकत की।

डॉ. सिद्धार्थ शंकर राय ने बताया की भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम केवल राजनैतिक आजाद़ी की लड़ाई नहीं थी बल्कि सदियों से चलती आ रही सामंतवादी सोच से भी लड़ाई थी। कोई भी साहित्य और विचारधारा हर वर्ग की मुक्ति के बिना अगर आधुनिकता की कामना कर रहा है तो उसे संदेह की दृष्टि से देखने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि साहित्य की व्याख्या बहुत सीमित दायरे में की जाती है लेकिन साहित्य को विस्तार देने की आवश्यकता होती है। कविता सामूहिकता में उत्साह पैदा करने का कार्य करती है और बिना सामूहिक उत्साह के कोई भी आन्दोलन और परिवर्तन नहीं हो सकता।

डॉ. सिद्धार्थ ने कहा कि साहित्य का पहला उत्तरादायित्व होता है कि प्रतिरोध की चेतना पैदा करे और इसके साथ वह सृजनात्मक भी होना चाहिए। उन्होंने विभिन्न उद्धरणों के माध्यम से बताया की साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास होता है। साहित्य जनता की चितवृतियों का संचित प्रतिबिम्ब होता है और इसी संचित प्रतिबिम्ब की झलक हमें आजादी के आन्दोलन में दिखाई देती है। उन्होंने विभिन्न कवियों की कविता के उदाहरण देकर बताया कि कैसे भारतीय कवि अपनी कविता के माध्यम से आजादी के आन्दोलन में जनता में चेतना पैदा करने का कार्य करते है।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए देस हरियाणा पत्रिका के संपादक डॉ. सुभाषचन्द्र ने कहा कि कविता आज के दौर में मनुष्य को भटकाव और भ्रमित होने से बचाती है और जीवन में स्पष्ट राह दिखाती है। उन्होंने कहा कि देश प्रेम का अपने देश के लोगों से अधिक संबंधित है। दूसरों से घृणा करना और इतिहास के पक्षों को काले से सफेद करना और सफेद से काला करना सच्चे देश प्रेम का काम नहीं है बल्कि अपने देश की विरासत से शक्ति अर्जित करते हुए पांखड़ो और दोषों की खुल कर आलोचना करते हैं।

कार्यक्रम में वरिष्ठ कवि जयपाल, लेखक अशोक भाटिया, सुनील कुमार थुआ के साथ-साथ हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र के अध्यापक, विद्यार्थी और शोधार्थी शामिल हुए।

प्राकृतिक स्रोतों को बचाया जाए - पंकज चतुर्वेदी

दिनांक 29 जनवरी 2022 को साहित्य परिषद्, हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र और देस हरियाणा पत्रिका की ओर से 'अपने लेखक से संवाद करें' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य वक्ता के तौर पर नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इंडिया के संपादक व लेखक श्री पंकज चतुर्वेदी जी ने शिरकत की। उन्होंने अपने लेखक बनने की रचना-प्रक्रिया के बारे में बताया और एक लेखक की अपने लेखन के माध्यम से अपने समाज और राष्ट्र निर्माण में क्या भूमिका होती है इस विषय पर भी विस्तार से बातचीत रखी। इसी के साथ-साथ आज जलवायु-परिवर्तन के कारण पर्यावरण किस तरह से बदल रहा है? और हमारे प्राकृतिक स्रोतों को मनुष्य जाने-अनजाने में किस प्रकार से नष्ट कर रहे? इन्हें कैसे बचाया जाए? अनेक सवाल जो मानव-जाति और जीवन के वर्तमान और भविष्य के पक्षों को प्रभावित करेंगे। इन सभी विषयों पर सभी श्रोताओं का ध्यान आकर्षित किया।

पंकज चतुर्वेदी जी ने कहा कि एक लेखक किस प्रकार से समाज की विभिन्न समस्याओं और मुद्दों को अपने साहित्य का विषय बनाकर प्रस्तुत करता है और समाज पर उसका क्या प्रभाव पड़ता है। लेखक बनने की प्रक्रिया में विषयों और विधाओं का चयन कैसे करना है और कैसे उनकी अभिव्यक्ति हो सकती है उसके उदाहरण प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम की अध्यक्षीय टिप्पणी कर रहे देस हरियाणा के संपादक डॉ. सुभाष चन्द्र ने कहा लेखक व साहित्यकार अपने साहित्य के माध्यम से समाज में व्याप्त अनेक संकीर्णताओं और रूढ़ियों को समाज के सामने प्रस्तुत करता है और जब तक समाज में यह बीमारियाँ व्याप्त है तब तक एक अच्छे और स्वच्छ समाज के निर्माण की परिकल्पना करना कठिन कार्य है।

हिन्दी विभाग शोधार्थी, विद्यार्थियों, के अलावा डॉ. जसबीर सिंह, ब्रजपाल, विकास साल्याण, राजकुमार जांगड़ा, डॉ. रविन्द्र गासो, राम मोहन राय, अरुण कैहरबा, कवि जयपाल आदि शामिल थे।

गुरु रविदास के साहित्य का मूल स्वर सामाजिक न्याय - सुभाष चंद्र



15 फरवरी 2022 को गुरू रविदास पीठ, हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र और सत्यशोधक फाउंडेशन, कुरुक्षेत्र की ओर से 'गुरु रविदास जयंती' के अवसर पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य वक्ता के तौर पर देस हरियाणा पत्रिका के संपादक और हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ. सुभाष चन्द्र ने व्याख्यान दिया तथा कला और भाषा संकाय के अधिष्ठाता और अंग्रेजी विभाग के वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. ब्रजेश साहनी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

डॉ. सुभाष चन्द्र ने अपने वक्तव्य के माध्यम से बताया कि गुरु रविदास भारतीय इतिहास और साहित्य के उन सशक्त हस्ताक्षरों में से एक है जिन्होंने भारतीय चिन्तन परम्परा में अपने ज्ञान और अनुभव की आहुति डाली। उन्होंने अपने कार्यों में शोषित-पीड़ित-वंचित-दलित जनता की आकांक्षाओं को व्यक्त किया। अपने समय के मुख्य अंतर्विरोध सामाजिक न्याय, सामाजिक समानता, सांप्रदायिक सद्भाव संत रविदास का मूल स्वर है। धार्मिक संकीर्णता और संस्थागत धर्म की आलोचना की और धर्म के मानवीय पहलू पर जोर दिया। लोकभाषा को अपनाकर सांस्कृतिक वर्चस्व को चुनौती दी। साहित्य को लोगों के कष्टों और संघर्षों से जोड़ा।

संत रविदास की महता उनके समकालीन कवि और महान दार्शनिक भी मानते थे जिनमें कबीर ने उन्हें संतों का संत कहा, वहीं गुरुग्रंथ साहिब में गुरू रविदास की वाणी को स्थान मिला। डॉ. सुभाष चन्द्र ने बताया मध्यकालीन संतो का ज्ञान शास्त्रों पर आधारित नहीं, बल्कि संघर्षों और अनुभवों द्वारा अर्जित ज्ञान था। मध्यकालीन संतों ने मनुष्यता के

विकास में बाधा बनने वाले विचारों, कुरीतियों और रूढ़ियों का खुल कर विरोध करके मनुष्य को सहज होने का संदेश दिया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डॉ. ब्रजेश साहनी ने कहा - सबसे महत्वपूर्ण सवाल तो यह है कि हमें साहित्य का अध्ययन ही क्यों करना है? मानवतावादी विचारों का निर्माण ही जीवन की महत्वपूर्ण इकाई है और साहित्य का असली कार्य अच्छे मानव की रचना करना है। संत रविदास के साहित्य में मानव हित का तर्क उनके जीवन-साक्षात्कार में गहराई से समाया हुआ था। मानव के महत्व को स्थापित करने का तर्क सबसे तेज साधन बन गया।

डॉ. जसबीर सिंह ने कार्यक्रम में पहुंचे सभी मुख्य अतिथि और श्रोतागणों का धन्यवाद किया। कार्यक्रम का संचालन हिन्दी विभाग के प्राध्यापक विकास साल्याण ने किया। इस अवसर पर हिन्दी विभाग के प्राध्यापक ब्रजपाल, वरिष्ठ लेखिका कमलेश चौधरी, जितेन्द्र सिंग्रोहा, नरेन्द्र आजाद, नरेश दहिया, अंजू, प्रदीप समेत हिन्दी विभाग के अनेक शोधार्थी और विद्यार्थी मौजूद थे।

विश्व में सबसे बड़ी चुनौती लैंगिक असमानता - बिन्दु शर्मा

8 मार्च 2022 को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर हिन्दी विभाग और पंजाबी विभाग के संयुक्त प्रयास से विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य वक्ता के तौर पर पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की निदेशिका प्रोफेसर बिन्दु शर्मा ने शिरकत की। कार्यक्रम का संचालन पंजाबी विभाग के प्रोफेसर डॉ. कुलदीप सिंह ने की और कार्यक्रम की अध्यक्षता हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ. सुभाष चन्द्र ने की।



डॉ. बिन्दु शर्मा ने अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को बताते हुए कहा कि महिला दिवस की कहानी संघर्षों और आन्दोलनों से शुरू हुई थी। आज आधुनिक युग में तकनीकी व अन्य तौर पर इतने विकसित हो चुके है। संविधान में हमें बराबरी का अधिकार दे दिया गया है लेकिन समाज में राजनैतिक, आर्थिक व अन्य सभी क्षेत्रों में गैर-बराबरी देखने को मिलते है। सबसे बड़ी चुनौती लैंगिक असमानता है जो केवल भारतीय समाज में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में कायम है। महिलाओं ने हर क्षेत्र में अपना लोहा मनवाया है लेकिन उनकी उपलब्धियों को नजरअंदाज किया गया। बेहतर समाज व संवेदनशील मनुष्य का निर्माण करना जरूरी कार्य है जिसके प्रत्येक नागरिक को आत्मसंघर्ष करना होगा।

अध्यक्षीय टिप्पणी करते हुए प्रो. सुभाष चन्द्र ने कहा नारी उत्थान व सामाजिक न्याय के लिए हमें अपने पूर्वाग्रहों से लड़ना होगा। पूर्वाग्रह हमारे सांस्कृतिक परिवेश का हिस्सा हैं। सभी समाज सुधारकों, संतों व दार्शनिकों ने इन पूर्वग्रहों के खिलाफ ही लड़ाई लड़ी है।

पंजाबी विभाग के अध्यक्ष डॉ. कुलदीप सिंह ने कहा महिला और पुरुष गाड़ी के दो पहियों की तरह हैं। दोनों से ही सृष्टि का इतना विकास हुआ है। सामाजिक जीवन व व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्माण में महिलाओं का अहम योगदान है। कार्यक्रम में पंजाबी विभाग के प्राध्यापक डॉ. वेदपाल, हिन्दी विभाग के प्राध्यापक डॉ.जसबीर सिंह, विकास साल्याण, ब्रजपाल और विद्यार्थी और शोधार्थी शामिल रहे।

सावित्रीबाई फुले के जीवन संघर्ष व योगदान पर सेमिनार

10 मार्च 2022 को रविदास मंदिर, इन्द्री के सभागार में सत्यशोधक फाउंडेशन की ओर से देश की पहली शिक्षिका सावित्रीबाई फुले की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में सेमिनार का आयोजित किया गया। कार्यक्रम में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. सुभाष चन्द्र ने मुख्य वक्ता पर बोलते हुए सावित्रीबाई फुले के जीवन-संघर्ष व योगदान पर विस्तृत व्याख्यान दिया। गुरु रविदास सभा के प्रधान बलराज सिंह, सैनी सभा इन्द्री के प्रधान रणबीर सिंह, उपप्रधान रामकुमार व कैप्टन ईशम सिंह ने मुख्य वक्ता का जोरदार स्वागत किया। कार्यक्रम का संयोजन हिन्दी अध्यापक अरुण कैहरबा व नरेश मीत ने किया। आयोजन में



शहीद सोमनाथ स्मारक समिति, हरियाणा विद्यालय अध्यापक संघ, अतिथि अध्यापक संघ, सैनी सभा इन्द्री व हरियाली युवा संगठन ने सहयोग किया।

प्रो. सुभाष चन्द्र ने कहा कि सावित्रीबाई फुले ने भारत में महिलाओं, लड़कियों व समाज के वंचित तबके के बच्चों के लिए शिक्षा की जोत जगाई। उन्होंने जब लड़कियों के लिए पहला स्कूल खोला तो यह काम इतना आसान नहीं था। उन्होंने कहा कि वर्ण व जाति व्यवस्था से जकड़े समाज की बेड़ियों को ढ़ीला करने के लिए सावित्रीबाई फुले ने जो प्रयास किए, उन्हीं के कारण उन्हें भारत माता, ज्ञान ज्योति व क्रांति ज्योति कहा जाता है।

मंच संचालन करते हुए अरुण कुमार कैहरबा ने कहा कि महापुरूषों, समाज सुधारकों और स्वतंत्रता सेनानियों को याद करने का तरीका उनके विचारों व कार्यों को याद करना ही है। अपने समाज को बेहतर बनाने के लिए हमें अध्ययन और विचार-विमर्श की संस्कृति को विकसित करना होगा।प्राध्यापक डॉ. कुलदीप सिंह ने कहा कि आज के समाज में अंधविश्वास, अज्ञानता और कुरीतियों को हराने के लिए सावित्रीबाई फुले के विचार बेहद महत्वपूर्ण हैं। कार्यक्रम संयोजक नरेश मीत ने आए हुए अतिथियों व प्रतिभागियों का आभार जताते हुए कहा कि सत्यशोधक फाउंडेशन द्वारा आने वाले दिनों भी इस तरह के सेमिनार आयोजित करने की योजना है। इस मौके पर कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग में प्राध्यापक विकास साल्याण, साहित्यकार दयाल चंद जास्ट, अध्यापक सुभाष लांबा, जगदीश चन्द्र, राजेश सैनी, सबरेज अहमद, मान सिंह चंदेल, महिन्द्र खेड़ा, सुनील अलाहर, विक्रम मुखाली, संजीव कुमार, सुनील बुटानखेड़ी, ज्ञानचंद खोखर, सुनील परोचा, रंगकर्मी नरेश नारायण, हरियाली युवा संगठन प्रदेशाध्यक्ष सूरजभान बुटानखेड़ी, सूरज बिड़लान, माया राम सैनी मौजूद रहे

शिक्षा से वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा मिलेगा - प्रो. सुभाष चन्द्र



13 मार्च 2022 को गांव बरसत (घरौंडा) की सैनी चौपाल में सत्यशोधक फाउंडेशन व सृजन कला मंच द्वारा आज के दौर में सावित्रीबाई फुले, शहीद भगत सिंह व डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचारों की प्रासंगिकता विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी में मुख्य वक्ता कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में हिंदी विभागाध्यक्ष व देस हरियाणा के संपादक डा. सुभाष चंद्र ने कहा कि शिक्षा ही सच्चा समाजवाद ला सकती है। सभी वर्गों की सत्ता में भागीदारी हो। समाजिक दृष्टिकोण से सभी को बराबरी का अधिकार मिले। सावित्रीबाई फुले, शहीद भगत सिंह और संविधान निर्माता डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के विचारनुसार शिक्षा ही समानता का आधार है। इसलिए आम जनता को अपने बच्चों विशेषकर लड़कियों की शिक्षा पर विशेष ध्यान देना होगा। शिक्षा से वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा मिलेगा और सामाजिक भेदभाव, ऊंच-नीच, अंधविश्वास व पाखंडवाद जैसी सामाजिक बुराईयों से छुटकारा मिल सकेगा। प्रो. सुभाष चंद्र ने कहा कि वही देश व समाज तरक्की करता है जो अपने देश के महापुरुषों के विचारों पर चलकर सत्य का शोधन करता है व उन्हें याद करता है।

कार्यक्रम में निशानेबाजी में राष्ट्रीय स्तर पर गोल्ड मेडल जीतने वाली गांव बरसत की लड़की अंजली सैनी व डेरा संजयनगर की पहली ग्रेजुएट लड़की फूलकुमारी को पुरस्कार

देकर सम्मानित किया गया। गांव बरसत की 12वीं कक्षा की छात्राओं बबीता, सविता, शिवानी, रितू, जसमीत व सानिया बलहेडा को शैक्षणिक उपलब्धि के लिए सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन पंजाबी शिक्षक नरेश सैनी व प्रबंधन पंचायत सदस्य नरेश कुमार ने किया। इस मौके पर सामाजिक कार्यकर्ता राममेहर चौरा, डॉ. बीरबल सैनी,नरेश मैंबर प्राध्यापक ललित कुमार, वीरभान, साहब सिंह, रामफल, संजय सैनी, सुनील मौर्या, रामेश्वर सैनी, फूल सिंह सैनी, प्रेम कुमार, कमल कुमार, कुलविंदर सिंह, सुमन लता, सोनिया सैनी, सतीश व अनिल गुढा, विनोद, शीशपाल सैनी, कुलदीप सिंह, डा.अंकित, शकील हिंदुस्तानी, देवेंद्र, अमित बोबी,हीरा लाल व सृजन कला मंच के कलाकार सुरेंद्र, विजय,शमीम, विक्रम, रविंद्र, अर्जुन जूनी वह सतनाम जूनी उपस्थित रहे।

भगत सिंह से दोस्ती के लिए पढ़ें किताबें: डॉ. सुभाष चन्द्र

23 मार्च 2022 को गांव ब्याना (इन्द्री, करनाल) स्थित गुरु रविदास मंदिर के सभागार में शहीद भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव के शहीदी दिवस पर शहीद भगत सिंह का जीवन और विचार विषय पर सेमिनार आयोजित किया गया। इस अवसर पर प्रो. सुभाष चन्द्र ने मुख्य वक्ता के रूप में विचार व्यक्त करते हुए भगत सिंह के विचारों को समझने के लिए किताबें पढ़ने का आह्वान किया। डॉ. सुभाष चन्द्र ने कहा कि भगत सिंह आम युवाओं की तरह ही सामान्य युवक थे। उन्हें जो माहौल मिला, उसने उसे क्रांतिकारी, संघर्षशील, देश की आजादी के लिए मर मिटने वाला बलिदानी, विवेकशील चिंतक, पत्रकार, लेखक और संगठनकर्ता बना दिया। हमें अपने युवाओं को भगत सिंह बनाने के लिए ऐसा माहौल निर्मित



करना चाहिए। भगत सिंह ने इंकलाब जिंदाबाद और साम्राज्यवाद मुर्दाबाद के नारे दिए।

इंकलाब का मतलब ऐसी व्यवस्था से है, जिसमें कोई देश दूसरे देश का और कोई इन्सान दूसरे इन्सान का शोषण ना कर सके। उन्होंने कहा कि भगत सिंह के कई साथियों ने बाद में अपने संस्मरण लिखे हैं। भगत सिंह के खुद के लिखे लेखों और संस्मरणों को पढक़र हम उन्हें जान सकते हैं।

अध्यापक नरेश मीत ने कहा कि भगत सिंह में पढ़ने के प्रति खास लगाव था। जिस समय 23 मार्च, 1931 को उन्हें फांसी दी जानी थी, उससे पहले भी वे किताब पढ़ रहे थे। अध्यापक महिन्द्र खेड़ा ने गीत के माध्यम से कहा कि इसलिए राह संघर्ष की हम चुनें, जिंदगी आंसुओं से नहाई ना हो। अरुण कैहरबा, महिन्द्र कुमार व मेहर सिंह के साथ सेमिनार के सभी प्रतिभागियों ने गीत गाकर भगत सिंह के सपनों का देश बनाने का संकल्प किया।

सेमिनार का संयोजन प्राध्यापक राजेश सैनी ने किया। मंच संचालन प्राध्यापक अरुण कुमार कैहरबा ने किया।इस मौके पर विकास साल्यान, डॉ. संजय कुमार, ओमप्रकाश नंबरदार, सुभाष कांबोज, राजेश कांबोज, संजीव नंबरदार, प्राध्यापक सतीश कुमार, रमेश कुमार, संजय कुमार, डॉ. सन्नी कांबोज, सरपंच प्रतिनिधि मुकेश कुमार, बलकार, नरेश कुमार, मान सिंह चंदेल, सुनील बुटानखेड़ी, गुरदीप, बंटी कांबोज, मेहर सिंह, मोहन लाल, प्रवीण कुमार, शैली, रमन, प्रवेश, बृजेश भट्टी, नीतू, रिया, निधि, ममता, तमन्ना, रोहित, वंश सैनी, तरुण सैनी, दिशांत सैनी, तुषार उपस्थित रहे।



"भारतीय लोकतंत्र में जैसे-जैसे किसानों और मजदूरों की जैसे-जैसे उन्नति होगी, वैसे -वैसे ही इतिहास में महात्मा फुले का व्यक्तित्व और अधिकाधिक उभरकर सामने आएगा"

- पं. जवाहरलाल नेहरू

भारतमाता सावित्रीबाई फुले

- 3 जनवरी, 1831 को जन्म। नायगांव (खंडाला, जिला सतारा) में पिता खंडोजी नेवसे व माता लक्ष्मी।
- 1840 जोतिराव फुले के साथ विवाह।
- 1841 शिक्षा शुरू।
- 1846-1847 नॉर्मल स्कूल से थर्ड और फोर्थ ईयर की परीक्षा पास की।
- 1 जनवरी, 1848 लड़कियों के लिए देश का पहला स्कूल पुणे के भिडेवाड़ा में। सावित्रीबाई को स्कूल की पहली मुख्य शिक्षिका।
- 1849 पुणे में वयस्कों के लिए स्कूल उस्मानशेख के घर।
- 16 नवम्बर, 1852 फुले परिवार को शिक्षा के क्षेत्र में काम के लिए ब्रिटिश सरकार द्वारा सम्मानित। सावित्रीबाई सर्वश्रेष्ठ शिक्षक घोषित।
- 1854 'काव्य फुले' कविता संग्रह प्रकाशित।
- 1855 किसानों और मजदूरों के लिए एक रात्रि पाठशाला शुरू की।
- 25 दिसम्बर 1856 'जोतिबा के भाषण' संपादन और प्रकाशन।
- 1863 बाल हत्या प्रतिबंधक गृह आरंभ।
- 1868 अछूतों के लिए घर का कुआं खोला।
- 1874 ब्राह्मण विधवा काशीबाई के पुत्र को गोद लिया।
- 1876 -1877 अकाल में महाराष्ट्र में 52 मुफ्त भोजन छात्रावास खोले।
- 4 फरवरी 1889 दत्तक पुत्र डॉ. यशवंत का विवाह ।
- 28 नवंबर 1890 उनके पति जोतीराव फुले की मृत्यु।
- 1991 में 'बावनकशी सुबोध रत्नाकर' काव्य प्रकाशित।
- 1893 सासवाड़ में सत्यशोधक समाज की अध्यक्षा।
- 1897 पुणे में प्लेग की महामारी के दौरान राहत कार्य।
- 10 मार्च, 1897 प्लेग के मरीजों की सेवा करते हुए मृत्यु।

महात्मा जोतीराव फुले के जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ

जन्म	11 अप्रैल 1827
सावित्रीबाई से विवाह	1840
मिशनरी स्कूल में माध्यमिक (अंग्रेज़ी) शिक्षा	1841-47
लहुजी बुवा से व्यायाम का प्रशिक्षण और क्रान्तिकारी विचारों की प्रेरणा	1847
टॉमस पेन की 'राइट्स ऑफ मैन' पुस्तक का अध्ययन	1847
अपने ब्राह्मण दोस्त की बारात में तिरस्कार	1848
शूद्र-अतिशूद्रों के लिए कन्या पाठशाला की स्थापना	1848
अतिशूद्रों को शिक्षादान का व्रत लेने के कारण पत्नी के साथ गृहत्याग	1849
चिपळूणकरवाड़ा और रास्ता पेठ, पुणे में कन्याशाला की स्थापना	1851
पूना लाइब्ररी की स्थापना	1852
मि. कैंडी की अध्यक्षता में आयोजित समारोह में शिक्षा के लिए सम्मान	16 फरवरी 1852
स्काटिश मिश्नरियों के स्कूल में अंशकालिक अध्यापक की नौकरी	1854
तृतीय रत्न' नाटक का लेखन	1855
रात्रि-पाठशाला की स्थापना	1855
हत्यारों द्वारा महात्मा फुले की हत्या का प्रयास	1856
विधवा पुनर्विवाह में सहायता	1858
बालहत्या-प्रतिबंधक गृह की स्थापना	1863
अछूतों के पीने के पानी के लिए घर का कुआँ खोल दिया	1868
छत्रपति राजा शिवाजी भोसला का पँवाड़ा की रचना	जून 1869
शिक्षा विभाग के ब्राह्मण पंतोजी की रचना	जून 1869

'ब्राह्मणों की चालाकी' पुस्तक का लेखन	1869
'गुलामगिरी' पुस्तक का लेखन	1 जून 1873
सत्यशोधक समाज की स्थापना	24 सितंबर 1873
स्वामी दयानंद सरस्वती की शोभायात्रा में अड़चन दूर करने में सहयोग	5 सितंबर 1873
पुणे नगरपालिका की सदस्यता	1876-1882
शराब की दुकानों को लाइसन्स न दिये जाने के लिए प्रयास	18 जुलाई 1880
दलितों की शिक्षा के प्रति उदासीनता के ध्यानार्थ हंटर आयोग को बयान	19 अक्तूबर 1882
जेल से रिहा होने पर तिलक, आगरकर का सम्मान	26 अक्तूबर 1882
किसानों की दुर्दशा विषय पर 'किसान का कोडा' पुस्तक का लेखन	18 जुलाई 1883
बालविवाह और विधवा विवाह की स्थिति का निवेदन	4 दिसंबर 1884
मराठी साहित्य सम्मेलन में उपस्थिति से इंकार संबंधी पत्र	11 जून 1885
सत्सार-1 पुस्तक की रचना	13 जून 1885
सत्सार-2 पुस्तक की रचना	अक्तूबर 1885
'इशारा' पुस्तक की रचना	1 अक्तूबर 1885
बिना पुरोहित विवाह मामले में जुन्नर का मुकदमा जीता	29 मार्च 1886
सत्यशोधक समाज पूजाविधि ग्रंथ का प्रकाशन	जून 1887
वसीयतनामा पंजीकरण	10 जुलाई 1887
ड्यूक ऑफ कनाट के सम्मान समारोह में वास्तविकता बयान	2 मार्च 1888
जनता द्वारा सम्मान और महात्मा की उपाधि प्रदान	11 मई 1888
सार्वजनिक सत्यधर्म पुस्तक (मृत्योपरांत 1891 में प्रकाशित पुस्तक)	1 अप्रैल 1889
मृत्यु	28 नवंबर 1890

देस हरियाणा प्राप्त करने के लिए संपर्क करें		
कुरुक्षेत्र	योगेश शर्मा	9896957994
यमुनानगर	बी. मदन मोहन	9416226930
अंबाला शहर	जयपाल	9466610508
करनाल	अरुण कैहरबा	9466220145
घरौंडा	राधेश्याम भारतीय	9315382236
	नरेश सैनी	9896207547
जीन्द	मंगतराम शास्त्री	9416513872
टोहाना	बलवान सिंह	9466480812
नरवाना	सुरेश कुमार	9416232339
सोनीपत	विरेंद्र वीरू	9467668743
पानीपत	दीपचंद निर्मोही	9813632105
पंचकुला	सुरेंद्र पाल सिंह	9872890401
	जगदीश चन्द्र	9316120057
रोहतक	अविनाश सैनी	9416233992
भिवानी	का. ओमप्रकाश	9992702563
दादरी	नवरत्न पांडेय	9896224471
सिरसा	परमानंद शास्त्री	9416921622
हिसार	राजकुमार जांगड़ा	9416509374
महेन्द्रगढ़	अमित मनोज	9416907290
मेवात	सिद्दीक अहमद मेव	9813800164
शिमला	एस आर हरनोट	1772625092
राजस्थान (परलीका)	विनोद स्वामी	8949012494
चंडीगढ़	ब्रजपाल	9996460447
	पंजाब बुक सेंटर, सैक्टर 22	
दिल्ली	संजना तिवारी , नजदीक श्रीराम सेंटर,	
	आर.के. मैगजीन , मौरिस नगर, थाने के सामने	
	एन.एस.डी. बुक शॉप	
ई-प्राप्ति	www.notnull.com/desharyana	